Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

ation by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS

All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Coll

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

श्री धन्वन्तरये नमः

श्री शंकर दाजी शास्त्री पदे स्मारक समिति

सन् १९४६ नवम्बरसे अक्टूबर १९५२ ई० तकका

विवरण

विघन विरोध विचार विष ... शंकर सम पान ।
उन्नत मर्यादा करी आयुर्वेद महान ॥
सम्मेलन स्थापन कियो विद्यापीठ प्रबन्ध ।
सुजस पताका जगतमें लहरायी स्वच्छन्द ॥
स्थायी स्मारक दृढ़ रहे आयुर्वेद स्वरूप ।
शंकर की शंकर सदृश बाढ़े कीर्ति अनूप ॥
वैद्यकके साहित्यमें वर्द्धक पूरक ग्रन्थ ।
रचित प्रकाशित तम हरैं दर्शित होय सुपन्थ ॥
ग्रन्थकार आदर लहैं पुरस्कारकौं पाय ।
शंकर दाजी शास्त्रिकी स्मारक समिति सुहाय ॥
जय श्री पति धन्वन्तरी जय गुरु शंकर सिद्ध ।
स्मारक निधिकी वृद्धि नित होवे जगत प्रसिद्ध ॥

पूर्व पीठिका

जिस आयुर्वेदका प्रकाशन जगतस्रष्टा ब्रह्माके मनन, ध्यान और स्मरणसे हुआ, जिस आयुर्वेदके दैवत्व स्वयं जगतपालक विष्णुने धन्वन्तरिका अवतार ग्रहणकर स्वीकार किया, जिस अनन्त

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

ऐश्वर्य पूर्ण अनादि आयुर्वेदका प्रकाश और विकाश दक्षप्रजापति, अश्विनी कुमार और इन्द्रसे लेकर भरद्वाज, आत्रेय, काश्यप आदि ऋषियों तथा धन्वन्तरि दिवोदास. सुश्रुत आदि राजर्षियोंके द्वारा होता हुआ सारे विश्वको जीवनदान देता रहा, जगतको स्वास्थ्य-रक्षा और चिकित्साका उपदेश देता रहा; जिसकी गुण गाथाको वेद, उपनिषद, पुराण, इतिहास आदि ग्रन्थ गा रहे हैं और जो आदिकालसे लेकर अशोकके समय तक अपने वैज्ञानिक साहित्यका विस्तार करता रहा; वही विपरीत काल और विदेशियोंके आक्रमणसे जर्जरित हो ब्रिटिशकालमें [अना]स्था और तिरस्कारके कारण विरो-धियोंकी आलोचनाका पात्र बन गया । जिस आयुर्वेदने चीन, फारस, अरब, मिश्र, यूनान, रोम जैसे देशोंको वैद्यक विद्या प्रदान कर जगद्‌गुरुपद प्राप्त किया था, उसने मुसलमानी कालके दुर्लक्ष्य और ब्रिटिशकालकी अवहेलनाकी परवाह न कर कमसे कम भारतमें अपनी प्रतिष्ठा अक्षुण्ण बनाये रखी। किन्तु राजकीय प्रतिष्ठा प्राप्त एलो-पैथीको यह सहन नहीं हुआ । उसके मेडिकल विभागके षडयन्त्रमें आकर बहुतसे देशियोंने भी कानून द्वारा आयुर्वेदको नष्ट करनेकी आवाज उठायी। यद्यपि देशकी जनता आयुर्वेदकी समर्थक थी और ६० प्रतिशत जनताकी सेवा आयुर्वेदके ही द्वारा होती आ रही थी तथापि एलोपैथीकी चमक दमक और डाक्टरोंकी ठसकका प्रभाव लोगोंकी आंखोंमें चकाचौंध और दिमागमें हिलोड़ मचा रही थी। आयुर्वेदके प्रचारक वैद्य संगठित नही थे अतएव देशमें एक विचलित दशाका दृश्य उपस्थित था। इसी समय आजसे ६५ वर्ष पहले बम्बईके एक महाराष्ट्र नवयुवकके ध्यानमें आयुर्वेदकी महत्ता जाग्रत हुई और उसकी दुरवस्था एवं अनाथावस्थाका विचार उसे दुःखी करने लगा। उसने आयुर्वेदकी शिक्षा ग्रहणकर आन्दोलन करना आरम्भ किया । जहां तहां सभाएं कर लोगोंमें आयुर्वेदके प्रति प्रेम तथा

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

itization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

वैद्योंमें उत्साहकी जागृति करनेका आन्दोलन किया। समाचार पत्रोंमें लेख लिखकर सामयिक कर्तव्यका बोध कराना उसने आरम्भ किया। सन् १८८६ से यह कार्य व्यवस्थित रूपसे चल पड़ा। पहले "राजवैद्य" इसके बाद "आर्यभिषक', वैद्यक पत्र और कितनी ही पुस्तकोंका लेखन, सम्पादन और टीकाकर आयुर्वेदिक साहित्यकी पूर्तिका काम भी उसने छेड़ दिया। जहां तहां आयुर्वेदकी शिक्षा की भी व्यवस्था प्रचलित की। धार्मिक और सामाजिक कार्योंमें सहयोगकर शिवाजी मेला, गणपति उत्सव, दशहरेका सीमोल्लङ्घन आदि द्वारा जनताका सहयोग प्राप्त करनेका उद्योग किया और अपने अध्यवसायसे बड़ौदा-नरेश, दभंङ्गानरेश, वरांव नरेश, आदि उत्तर दक्षिणके नरेशोंकी सहानुभूति भी प्राप्त की। उस समय आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शंकर दाजी शास्त्री पदे नामसे देशमें उसकी गूंज हो उठी।

इस प्रकार अनुकूल वातावरण उत्पन्न कर पण्डित शंकरदाजी शास्त्री पदेने नासिक क्षेत्रमें सं० १९६४ अर्थात सन् १९०७ में एक महान धार्मिक अनुष्ठानके साथ "वैद्यक सम्मेलन" का स्थापन किया और "आयुर्वेदविद्यापीठ" का कार्य भी परीक्षा और पदवीदानके स्वरूपमें आरम्भ कर दिया। दूसरा सम्मेलन उन्होंने पनवेलमें किया और उत्तर भारतमें आन्दोलन बढ़ाने तथा कार्यालय स्थापनके लिये उन्होंने प्रयागको केन्द्र बनानेका विचार किया। इसीका प्रयत्न करते हुए सन् १९०९ के चैत्र मासकी रामनौमीके दिन उनका स्वर्गवास प्रयागमें हो गया। किन्तु उन्होंने जिस सम्मेलन रूप कल्पवृक्षका पौधा रोपा था, उसे वैद्योंने सूखने नहीं दिया। और "वैद्य सम्मेलन", के नामसे उसका प्रभाव अखिल भारतमें फैल गया। प्रयागसे पुनः आरम्भ कर कानपुर, मथुरा, कलकत्ता, मद्रास, पूना, लाहौर, दिल्ली, इन्दौर, बम्बई, राजमहेन्द्री, सीलोनलङ्का, हरिद्वार, जयपुर, पटना, फतेहपुर होता हुआ सम्मेलन फिर सन् १९२९ में नासिक पहुँचा। इस समय

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collecti

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

मुझमें और अन्य लोगोंमें यह विचार उत्पन्न हुआ कि सम्मेलनके संस्थापक पं० शंकरदाजी शास्त्री पदेका स्मारक रूप यद्यपि यह सम्मेलन है ही तथापि अलग स्मारक रूपसे कुछ आयोजना होनी चाहिये। विचार चलता ही रहा और इस बीच सम्मेलनके अधिवेशन करांची, मैसूर, ग्वालियर, बीकानेर, शिकारपुर, बनारस, अहमदाबाद और नागपुर होते हुए अट्ठाईसवां सम्मेलन सन् १६३८ सं० १६६४ में फिर बम्बईमें हुआ और उसका नाम बदलकर नि० भा० आयुर्वेद महा सम्मेलन (आलइण्डिया आयुर्वेदिक कांग्रेस) रखा गया। इस समय [स्वर्गीय शंकरदाजी शास्त्री पदेके] स्मारकके विचारने फिर जोर पकड़ा। स्वभावत: औरोंकी अपेक्षा मुझे उसकी चिन्ता अधिक थी। क्योंकि उनकी बीमारीके ही समय सन् १६०६ सं० १६६६ चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको सम्मेलनके उत्तर भारतीय कार्यालयकी प्रतिष्ठा मेरे हाथों ही हुई थी। नासिकके प्रथम सम्मेलनसे ही मेरा सम्बन्ध सम्मेलनके साथ था, उनकी बीमारी और मृत्युकालके समय मैं उनकी सेवामें बराबर उपस्थित था। उस समयकी उनकी विकलता और व्यग्रता राष्ट्रभाषा हिन्दी और वैद्य सम्मेलन तथा आयुर्वेदके उद्धारके सम्बन्धमें देखने सुननेको मुझे मिली थी। उस समयकी उनकी विकलताने ही उनके अनुष्ठानोंकी पूर्तिके लिये मुझे विवश और प्रेरित किया था, उसी प्रेरणाके ही कारण मैंने प्रयागमें फिर सम्मेलनको प्रवर्तित करनेका प्रयत्न किया था। अब जब सम्मेलन एक समर्थ और भारत व्यापी प्रभावशाली संस्था हो रही है तब उसके आदि संस्थापकके स्मारकके लिये भी कुछ उद्योग होना आवश्यक था। विशेषकर ऐसी दशामें जब कि शंकरशास्त्रीके तीन भाइयोंके बीच किसीकी सन्तान परम्परा कायम नहीं रही। उनके बड़े भाई पण्डित रामकृष्णके कोई पुत्र नहीं, स्वयं शंकर शास्त्रीके कोई सन्तान नहीं और उनके छोटे भाई दिनकर रावका एकमात्र पुत्र और शंकर

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

itization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

शास्त्री दम्पतिकी आंखोंका तारा गोविन्दराज (बालासाहब) भी शास्त्री जीके पश्चात उनके छोड़े हुए कामोंको जारी रखनेका प्रयत्न करते हुए ही स्वर्गवासी हो चुका था। और जब यह सम्मेलन ही उनके स्मारक रूपमें शेष है तब स्वतन्त्ररूपसे उनके नामका निरन्तर स्मरण करानेवाला कोई कार्य जारी करना नितान्त आवश्यक था। मेरा सुधानिधिका सचालन और आयुर्वेदमहासमेम्लनकी सेवाका कार्य इसी दृष्टिसे होता आया है कि शंकरशास्त्रीके प्रचलित किये हुए कार्यका वैभव बराबर बढ़ता रहे। इसी दृष्टिसे इस ओर मेरी दिलचस्पी थी। अतएव सम्मेलनोंके समय चर्चा करने और सुधा-निधिमें समय समय पर विचार प्रकट करनेका कार्य होता रहा। वैद्य सम्मेलनके समय लोगोंमें भी इस विषयके विचार उठते रहे।

अहमदाबादका सम्मेलन पचीसवां था अतएव उसमें सम्मेलनकी रौप्य जुबिली मनायी गयी। उसमें एक प्रस्ताव सम्मेलनके जन्मदाता पं० शंकर दाजी शास्त्री पदेका स्मारक नियुक्त करनेके सम्बन्धमें भी स्वीकृत हुआ। सन् १९३८ में प्रस्ताव पास होने पर भी सन् १९४३ या सन् १९४४ तक इस सम्बन्धमें कोई निश्चित कार्यवाही नहीं हो सकी। २६ दिसम्बर सन् १९४४ से लगाकर तारीख १ जनवरी १९४५ तक बेजवाड़ामें आयुर्वेद महा सम्मेलनकी एक बैठक हुई। उसमें एक:सोलहवां प्रस्ताव इस रूपका स्वीकृत हुआ—

"अखिल भारतीय आयुर्वेदमहासम्मेलनके आजीवन सदस्य **स्वामी हरिशरणानन्द जी** अमृतसरने महामण्डलके आद्य संस्थापक व आत्मस्वरूप स्वर्गीय पण्डित शङ्कर दाजी शास्त्री पदेकी स्मारक योजनाका पूर्ण उत्तरदायित्व लेकर आजतक कुछ नहीं किया। इसके लिये सम्मेलन खेद प्रकट करता है तथा महासम्मेलन सभापतिको आदेश देता है कि वे इस सम्बन्धमें आवश्यक जांच पड़ताल करके उसका विवरण पत्रिकामें प्रकाशित करा दें। जिसमें

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collecti

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

आवश्यक कार्यवाही की जा सके ।" आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका फरवरी १९४५ ई०

इससे मालूम पड़ता है कि बीचमें किसी समय स्वामी हरिशरणानन्द जी पर इसका भार दिया गया था। इस सम्बन्धमें मैने स्वामी हरिशरणानन्दजीसे सन् १९४७ में पत्र व्यवहार किया था। उसका उत्तर उन्होंने ५ अप्रैल सन् १९४७ को दिया था। जिससे विदित होता है कि अहमदाबादमें स्मारकका प्रस्ताव स्वयं उन्होंने रखा था और सम्मेलनने उन्हींपर उसकी पूर्तिका भार डाला था; किन्तु स्वामी जीने उसी समय यह भार लेनेमें असमर्थता प्रकट की थी कि मेरे पास समय नहीं है। किन्तु उनका कहना है कि किसीने मेरी बात नहीं सुनी। मैं अपनी असमर्थता वश कुछ न कर सका। उनका यह भी कहना है कि इस सम्बन्धमें कभी मुझसे कोई लिखा पढ़ी नहीं हुई। आज आप द्वारा पूछ हुई है। मुझे सम्मेलनकी ओरसे कोई सूचना या प्रेरणा कभी नहीं मिली। मालूम पड़ता है कि कुछ आपसी मतभेदके कारण इस सम्बन्धमें बाधा पड़ी। स्वामीजी स्मारक के समर्थक आवश्य हैं; क्योंकि अपने पत्रके अन्तमें आप लिखते हैं "उनके स्मारकके सम्बन्धमें निवेदन है कि उनका स्मारक अवश्य बनना चाहिये। वह महामण्डलके आदि जन्मदाता तथा महामण्डलके प्रथम संस्थापकोंमें से थे। ऐसे महान संगठन कर्ताके प्रति कोई विचारवान कोई समर्थन न करे ऐसा मुझे तो दिखता नहीं पर उनका स्मारक क्या हो यह विचारणीय है।" "वास्तवमें उनका स्मारक विद्यालय ही हो सकता है।" मालूम पड़ता है कि इस सम्बन्धमें सभापति महोदयका भी कोई वक्तव्य नहीं निकला।

इसके पश्चात १८ जून सन् १९४५ को आयुर्वेद विद्यापीठकी कार्य समितिका द्वितीय अधिवेशन हुआ। उसका कार्यविवरण आयुर्वेद महा सम्मेलन पत्रिकाके वर्ष ३३ अंक ७ जुलाई सन्

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१६४५ में छपा है। उसमें निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकृत किया गया था।

"श्री ठाकुरदत्त शर्मा धर्मार्थ इस्टेटइत्याख्यया संस्थाया १६३६ तम खीष्टाब्दतः प्रतिवर्ष सर्व प्रथमाय विद्यापीठायायुर्वेदाचार्य परीक्षोत्तीर्णाय स्वर्गीय श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारक रूपं षष्ठि-रूप्यक व्ययनिर्मितं स्वर्ण पदकं प्रदीयते तस्य च श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मरणार्थं स्वीकृताया योजनाया परिपूर्त्यभावे नास्ति विद्यापीठो ग्रहणाधिकारी तत्संस्थापक **श्री पण्डित ठाकुरदत्त शर्मणः** पत्रे विचारं कृत्वा निश्चितं यत्पुनरप्येक बारं श्री पण्डित ठाकुरदत्त शर्मा महोदया भविष्यकालेऽपि प्रतिवर्षमुक्त स्वर्णपदक प्रदानानुग्रहाय प्रार्थनीयाः। यदि च तै नोरीकुर्यु विद्यपीठ प्रार्थनां तदा विद्यापीठे नैव तत्पदकं प्रदेयम्।".

इससे विदित हुआ कि स्मारकके सम्बन्धमें पण्डित ठाकुरदत्त जीने कोई वचन दिया था; किन्तु कुछ कारणोंसे वे उक्त पदक आगे नहीं दे सके। या नहीं देना चाहते थे। अतएव स्मारकका काम मेरे पास आनेके बाद मैने पण्डित ठाकुरदत्त जीको पत्र लिखा। उसका उत्तर उन्होंने यों दिया—

"कार्ड आपका मिला, पढ़कर आश्चर्य हुआ। ...... जब जोधपुरमें शास्त्री पदेकी स्मारक योजना प्रकट हुई तब मैने कहा था कि मैं अपनी ट्रस्टसे ६०) वार्षिक एक पदकके वास्ते देनेका प्रबन्ध करूंगा। तीन रुपये व्याजकी दरसे यह दो हजार स्थिर व्याजके बराबर था। आपने उस समय इस कार्यको अपने जिम्मे लिया था (मैं जोधपुर सम्मेलनमें गया ही नहीं था) कि आप उसके वास्ते पचास हजार (ठीक राशि याद नहीं) या एक लाख एकत्र करके इनका स्मारक बना देंगे। मैने अगले वर्षसे ट्रस्टसे पदक भेजना आरम्भ कर दिया और अब तक देता हूं। बीचमें मैने लिखा था कि जैसा विचार था,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection.

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

स्मारक फण्ड कोई बनानेका यत्न नहीं हुआ । इस वास्ते ट्रस्ट भी क्यों जारी रखे ? मुझे ऐसे उत्तर मिलते रहे कि अबकी आप अवश्य दें फिर उस कार्यको जारी करेंगे। अब इस बार पत्र आया कि फिर इस कार्यको आरम्भ कर दिया गया है और अब स्मारक फण्ड एकत्र करनेका यत्न आरम्भ हो गया है। तब मैंने लिखा कि बहुत उत्तम है यदि स्मारक निधि बन जावे । परन्तु यदि न बने तो इस पदकको भी बन्द कर देना चाहिये। यदि वास्तवमें कोई निधि हो तो फिर ट्रस्टमें यह नोट कराया जा सकता है कि सदाको यह पदक मिलता रहे। सम्मेलनके प्रवर्तकके वास्ते यदि सम्मेलन कोई उचित स्मारक नहीं बना सकता तो एक व्यक्तिकी थोड़ीसी राशि रखनेका क्या लाभ है ? आप तो अब नयी अपील कर मुझसे और भी आशा करते हैं। परन्तु यह नयी अपील नहीं है। यह पुरानी अपील भूली हुई याद आयी है।" इत्यादि कुछ और भी विरक्तिकी बातें थीं। इस पर ता० ८-४-४७ के पत्रमें मैने निवेदन किया कि कुछ कारणोंसे मैं लखनऊ सम्मेलनके बाद कई सम्मेलनोंमें कुछ कारणोंसे नहीं गया और जोधपुर सम्मेलनमें भी नहीं गया। अतएव पहलेकी किसी स्कीम से मेरा सम्बन्ध नहीं। मैने तो सन् ४६ से इसका कार्य भार लिया है। पदक देनेका कार्य उत्तम है, उसे तो आप देते ही रहें। इस नयी योजनाके द्वारा साहित्यिक कार्य होगा। क्योंकि एक लाख या पचास हजार रुपये एकत्र कर स्मारक तैयार कराना सन्दिग्ध कार्य है। यह निश्चित योजना ही इस समय उपयुक्त समझी गयी है। आशा है आप पदकका कार्य जारी रखेंगे। प्रसन्नताकी बात है कि आप अब बराबर पदक दे रहे हैं।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

स्मारक समितिका निर्माण

श्री शङ्करदाजीशास्त्री पदेके स्मारककी परमावश्यकता दिखलाते हुए मैंने आयुर्वेद विद्यापीठको लिखा कि सम्मेलनके जन्मदाताके स्मारकमें एक पदक देना पर्याप्त नहीं है। उनके स्वरूपके अनुस उपयुक्त स्मारक होना चाहिये। पदक भी रहे; किन्तु स्मारक ऐसा हो कि जिसके द्वारा आयुर्वेदका वास्तविक उपकार होता रहे। मैंने एक योजनाका सुझाव करते हुए दशहजार रुपयेका कोष संग्रह करनेका प्रस्ताव किया। जिसके व्याजसे प्रति तीसरे वर्ष सर्वोत्तम आयुर्वैदिक ग्रन्थके लेखकको ५००) पाँचसौ रुपयोंका पुरस्कार दिया जाया करे। इस पत्र और योजनापर आयुर्वेद विद्यापीठकी कार्यकारिणी समितिमें विचार हुआ। २६ नवम्बर सन् १९४५ के चौथे अधिवेशनमें जो निर्णय हुआ, उसका विवरण दिसम्बर सन् १९४५ आयुर्वेद-महा सम्मेलन पत्रिकामें यों छपा है—

"श्री शङ्करदाजी शास्त्रीपदे स्मारक स्वरूप स्वर्णपदक प्रदानस्य का व्यवस्था कार्या विद्यापीठेन भविष्यत्काले इत्यस्मिन्विषये श्री पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्लस्य दश संहस्र मुद्रा संग्रह प्रस्ताव: स्वीकृत: महा मण्डल कार्यालिये प्रेषयितुं च मन्त्री नियोजित:"।

मैंने केवल पदक नहीं किन्तु ५००) के पुरस्कारकी चर्चा करते हुए फिर पत्र लिखा। इसके पश्चात दक्षिण कनारा जिलेके मणिपाल स्थानमें नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलनका अधिवेशन दिसम्बर मासमें हुआ। वहां ३१ दिसम्बर सन् १९४५ को नि० भा० आयुर्वेद शिक्षा सम्मेलनमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

"यह शिक्षा सम्मेलन निश्चय करता है कि श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मारकके लिये कमसे कम दश हजार रुपये की धनराशि एकत्रित की जाय। और उसके व्याजसे जो आय हो उसे प्रति

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तीसरे वर्ष उत्तम आयुर्वेदीय ग्रन्थ लेखकको पुरस्कार स्वरूप दिया जाय। इस धन संग्रहका भार श्री युक्त पण्डित जगन्नाथ प्रसादजी शुक्ल (प्रयाग) को दिया जाय।"

आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिकामें छपे हुए इस प्रस्तावको पढ़कर मैंने विद्यापीठ मन्त्रीको लिखा कि इस महान कार्यको एक मनुष्यके जिम्मे न छोड़कर उचित होगा कि इसके लिये एक समिति बना दी जाय और प्रान्तीय मन्त्रियोंके सहयोगसे रकम एकत्रित करनेका प्रयत्न किया जाय। इसके पश्चात जब फरवरी सन् १९४९ में विद्यापीठकी कार्यकारिणीका कार्यक्रम निकला तब मैंने मन्त्रीजीको लिखा कि इसी समय स्मारक समितिका भी विचार किया जाय। इस पर मन्त्रीजीकी राय यह हुई कि अच्छा होगा कि श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारकके सम्बन्धमें अजण्डेमें छपकर सभी सभासदोंके पास सूचना जाती। मिश्रितमें ऐसे महत्व पूर्ण विषय पर विचार करना अच्छा नहीं। फिर भी आप आ जावें तो मिश्रितमें इस पर विचार किया जा सकता है। उपस्थित मेम्बर ही अपनी राय दे सकते हैं। अच्छा तो यही है कि अगली कार्यकारिणीमें आप इस विषयका एक प्रस्ताव भेज दें ताकि छपाकर सबके पास विचारार्थ भेजा जा सके। शेष जैसा आप उचित समझें पत्र द्वारा सूचित करें। यह पत्र १५ फरवरी सन् १९४९ का था। इसके बाद ५ सितम्बर १९४९ का लिखा हुआ विद्यापीठ मन्त्रीजीका एक पत्र मिला कि स्वर्गीय शङ्करदाजी शास्त्रीपदेके स्मारकके लिये एक योजना आप तैयार कर लीजिये अगली बैठक सम्भवतः एक मास बाद होगी। उसी बैठकमें विश्वविद्यालयके सम्बन्धमें भी विचार होगा।.........उस बैठकमें आप अवश्य आनेका कष्ट करें।

इतने दिनोंके अनुभवसे मेरी धारणा थी कि विश्वविद्यालयकी योजना अवश्य महत्व पूर्ण है; किन्तु उसे श्री शङ्करदाजी शास्त्री

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

पदेके स्मारकके साथ इस समय रखना उचित नहीं होगा । वह महान कार्य है और उसमें विलम्ब हो सकता है। मैंने यह भी सोचा कि किसी भवनके निर्माणके सम्बन्धमें भी योजना रखना शीघ्र सफलताका द्योतक नहीं होगा; क्योंकि प्रत्येक स्थान और प्रान्तवालोंकी इच्छा होगी कि वह स्मारक हमारे यहां हो तभी हम उदारता पूर्वक दान दें। मूर्ति स्थापनके सम्बन्धमें भी सोचा गया कि जब कोई भवन बने या विश्वविद्यालयकी सफल योजना सिद्धिके स्वरूपमें हो तब उसका विचार उचित होगा। इस समय तो ऐसी योजना रखनी चाहिये जिसका लाभ सभी प्रान्तोंको एक समान हो सके। अतएव साहित्यिक योजना रखना ही उचित होगा मैंने योजनामें ५००) पुरस्कार, और प्राचीन ग्रन्थोंके खोंज तथा समयानुकूल आवश्यक ग्रन्थ निर्माण कर मुद्रित करानेके तीन विचार योजनामें रखे।

इसके पश्चात आयुर्वेद विद्यापीठकी कार्यसमितिके चतुर्थ अधिवेशनमें तारीख ३० अक्टूबर सन् १९४६ को इस विषयपर बिचार हुआ। मैंने इस सम्बन्धकी योजना उपस्थित की। उसे स्वीकार किया गया। इसका विवरण जनवरी सन् १९४७ की पत्रिकामें निम्नलिखित प्रकाशित हुआ है।

"श्री शङ्करदाजी शास्त्रीपदे स्मारक सम्बन्धे श्री पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल महोदयैरेका योजना उपस्थापिता या कतिपय संशोधनानन्तर स्वीकृता निश्चितां च यदेनां कार्यरूपे परिणमनार्थं महासम्मेलनस्य प्रान्तीय शाखा मन्त्रिणां निम्नाङ्कित महानुभावनां चैका समिति र्नियोजनीया—

१ श्री यादवजी त्रीकमजी आचार्य बम्बई
२ ,, ख्यालीराम द्विवेदी इन्दौर
३ ,, गंगाधर विष्णु पुराणिक पनवेल
४ ,, रामप्रसाद शर्मा वैद्यरत्न पटियाला

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

५ श्री ठाकुरदत्त शर्मा अमृतधारा देहरादून
६ ,, गोवर्धन शर्मा छांगाणी नागपुर
७ ,, रामेश्वर शास्त्री शुक्ल ग्वालियर
८ ,, गङ्गाधर शास्त्री गुणे अहमदनगर*
९ ,, उदयचन्द्रजी भट्टारक जोधपुर
१० ,, पूनमचन्दजी तनसुख व्यास ब्यावर
११ ,, गणेशदत्तजी सारस्वत दिल्ली (अब हरिद्वार)
१२ ,, मनोहरलाल जी वैद्यराज दिल्ली
१३ ,, स्वामी जयराम दासजी जयपुर
१४ ,, कविराज एम० के मुखर्जी कलकत्ता-हरिद्वार*
१५ डाक्टर ए० लक्ष्मीपति मद्रास
१६ श्री शिवरामजी द्विवेदी लखनऊ
१७ ,, रामेश्वरजी मिश्र नयागञ्ज कानपुर
१८ ,, नोरीराम शास्त्री वेजवाड़ा
१९ ,, रविशङ्कर जटाशङ्कर त्रिवेदी अहमदाबाद
२० ,, प्रतापकुमार पोपट भाई बम्बई
२१ ,, विश्वनाथ द्विवेदी पीलीभीत (अब लखनऊ)
२२ ,, गयाप्रसादजी शास्त्री हैदराबाद
२३ ,, सूर्यप्रसाद जी अग्निहोत्री सिकन्दराबाद*
२४ ,, पुरुषोत्तम शास्त्री हिर्लेकर अमरावती
२५ ,, वामनराव दीनानाथ ४५ केथिड्रल स्ट्रीट बम्बई
२६ ,, अनन्त त्रिपाठीजी
२७ ,, हरिनारायण चतुर्वेदी प्रिंसपल पटना
२८ ,, हरिदत्त शास्त्री लाहौर (अब जालन्धर)
२९ ,, गणेश शास्त्री जोशी पूना
३० ,, रामनारायण वैद्य शास्त्री पटना झांसी

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

३१ श्री वैद्य सुखरामदास टी० ओझा करांची*
३२ ,, होराभशर्मा वाशिष्ट औषधालय करांची (अब बुलन्दशहर)
३३ ,, अमरनाथ जी औदीच्य देहरादून
३४ ,, कविराज प्रताप सिंह जी काशी-इन्दौर
३५ ,, ज्योतिष चन्द्र सरस्वती दिल्ली*
३६ ,, हरिरञ्जन जी मजूमदार दिल्ली (अब काशी)
३७ ,, महासम्मेलनाध्यक्ष
३८ ,, विद्यापीठाध्यक्ष
३९ ,, महासम्मेलन मन्त्री
४० ,, विद्यापीठ मन्त्री
४१ ,, चुन्नीलाल देवशङ्करजी बड़ोदा

अतिरिक्त सदस्य संयोजन विषये एषा समितिः स्वाधीना। अस्याः समिते रध्यक्षः श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल महोदयः, मन्त्री च श्री सूर्यनारायण शर्मा महोदयः निर्वाचितः।

धनसंग्रह समिति— निम्नाङ्कित सदस्यानामेका धनसंग्रहोपसमितिरपि नियोजिता (१) श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल (संयोजक) (२) श्री पण्डित ख्यालीराम द्विवेदी इन्दौर (३) कविराज एम० के मुकर्जी (४) श्री शिवरामजी द्विवेदी (५) श्री विश्वनाथजी द्विवेदी (६) श्री पुरुषोत्तम शास्त्री हिर्लेकर (७) श्री गणेशदत्त सारस्वत।

अस्याः समितेः प्रारम्भिक व्ययार्थं ५००) मुद्राणां राशिः स्वीकृता। यस्या नियोजन मागामि वर्षीय विद्यापीठीयानुमानिकाय-व्ययपत्रे यथास्थानं कार्यम्।

अनया समित्या संगृहीतं धनं "**श्री शंकरदाजिशास्त्री पदे स्मारक कोष**" इति नाम्ना पञ्जाब नेशनल बैंक देहली इति नाम्नि धननागारे संरक्षणीयम्। धनगारे धनादान—प्रदानाधिकारः श्री विद्या-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पीठ मन्त्रि महोदयः, श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल महोदयः श्री गणेशदत्त सारस्वत महोदयश्चेतेषां कयोरपि द्वयोरेवेति निश्चितम्। * चिन्हित व्यक्ति अब स्वर्गवासी हो चुके हैं।

तदनुसार समितिके प्रारम्भिक व्ययके लिये १००) रुपयेकी रकम नवम्बर सन् १९४६ को आगयी और प्रयागमें उसका कार्यारम्भ कर दिया गया। सब प्रकारके रजिस्टर लेकर सभासदोंसे लिखा पढ़ी आरम्भ हुई। विज्ञापन और रसीद बहियां छप गयीं। जनवरी १९४७ से सहायताकी रकम आनी आरम्भ हुई। सबसे पहला चन्दा श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्लका १०१) रुपया जमा हुआ। वैद्यक पत्रोंमें अपील प्रकाशित हुई। सहानुभूतिके आश्वासन मिलने लगे। सुधानिधिके प्रत्येक अंकमें इसकी चर्चा छपने लगी और वैद्योंको प्रोत्साहन दिया जाने लगा। वी० बी० नटराजाशास्त्री आयुर्वेदाचार्य आत्रेय आयुर्वैदिक वर्क्स टेनूर रोड त्रिचनापल्लीने १०), श्री १०८ महन्तलालदासजी महाराज शिवरीनारायणमठ शिवरीनारायण जिला विलासपुरने ५१), आयुर्वेदाचार्य एन० माधव मेनन ए० एम० ए० कंसुलेटिङ्ग फिजिशियन १०७ ब्राडवेरोड मद्रासने २५) पण्डित रामसेवक शोभाराम वैद्य श्रीराम औषधालय बलरामपुर गोंडाने ५।) मनीआर्डर अथवा चेकसे सहायता भेजी। वैद्योंमें सम्मेलनके स्थापकके स्मारकके प्रति एक उत्साह और सहानुभूति की लहर लहराने लगी। जहां तहां जिला सम्मेलनोंमें, स्थानीय सभाओंमें इसकी चर्चा आरम्भ हुई। वैद्य लोग उत्साह पूर्वक यथा शक्ति चन्दा देने लगे।

सहानुभूतिकी लहर

चिकित्सा प्रचारक सङ्घ—आयुर्वैदिक क्षेत्रमें स्मारक समितिका स्वागत और समर्थन होने लगा। अखिल भारतीय आयु-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

वैदिक चिकित्सा प्रचारक संघकी त्रैमासिक रिपोर्ट जुलाईसे दिसम्बर सन् १९४६ में स्मारक समितिके सम्बन्धमें निम्नलिखित विचार छपा—

"अखिल भारतीय वैद्य सम्मेलनके जन्मदाता स्वर्गीय शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारकके लिये एक समिति चुनी गयी है। इस समितिने भारतके वैद्योंसे २१ हजार रुपयोंकी अपील की है। इन रुपयोंके ब्याजसे प्रति तीसरे वर्ष आयुर्वैदिक उत्तम ग्रन्थ लेखकको ५००) पुरस्कार दिया जाया करेगा। साथ ही ग्रन्थ प्रकाशन आदि भी किया जावेगा। यदि वैद्यबन्धु एक एक रुपया भी दानरूपमें भेज दें तो सहज ही यह धन एकत्र हो जावेगा। सघके सदस्योंको शीघ्र अपना अपना रुपया सुधानिधि कार्यालय, ३ सम्मेलन मार्ग, इलाहाबादके पत्ते पर या मेरे पास (पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित वैद्य बाराबङ्की) भेजकर शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारक समितिकी रसीद प्राप्त कर लेनी चाहिये। आप खाना भूल जायँ, मगर इस काममें दान देना न भूलें।"

इसके पश्चात अप्रैल, मई, जून सन् १९४७ की रिपोर्टमें इसी संघकी पत्रिकामें निम्न लिखित विचार प्रकट हुए—

"आयुर्वेद महासम्मेलनके जन्मदाता स्वर्गीय शङ्कदाजी शास्त्री पदे स्मारकके लिये केवल युक्तप्रान्तमें १२ हजार रुपया एकत्र करने का निश्चय किया गया है। यह रकम इतनी बड़ी नहीं है कि जिसके लिये आयुर्वेद महारथी दर दर भीख मांगते फिरें। यदि आप सचमुच वैद्य हैं अथवा आयुर्वेदमें कुछ भी श्रद्धा व विश्वास रखते हैं तो तुरन्त संघके प्रधान कार्यालयमें चन्दा भेजकर स्मारक समितिकी रसीद प्राप्त कर लीजिये। इस पुण्य कार्यमें दान देना आयुर्वेदके साथ महान उपकार करना है। हमें देखना है कि हमारे संघके सदस्य तथा युक्तप्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) के वैद्य कितनी जल्दी इस

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

रकमको पूरा कर देते हैं। युक्त प्रान्तमें वैद्योंकी कमी नहीं है। यदि दो दो रुपये भी भेज दें तो शीघ्र ही यह रकम हो जावेगी। रुपया भेजते समय मनीआर्डर कूपन पर अपना नाम व पता साफ साफ लिखें साथ ही यह भी लिखें कि रुपया किस लिये भेज रहे हैं।

संयुक्त प्रान्तीय प्रयत्न

इस स्मारक समितिके लिये संयुक्तप्रान्तीय (उत्तर प्रदेशीय) प्रयत्न इतना शानदान और जिन्दादिलीके साथ हुआ कि एक प्रकारसे इस स्मारककी पूर्तिका अधिकांश भाग संयुक्त प्रान्तसे पूरा हुआ समझना चाहिये। संयुक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनकी स्थायी समितिका अधिवेशन बाराबङ्कीमें ११ फरवरी सन् १९४७ को हुआ था। उसमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था :—

"प्रान्तीय सम्मेलनकी यह स्थायी समिति स्वर्गीय आयुर्वेदहोपाध्याय पं० शङ्करदाजी शास्त्री पदेकी स्मारककी योजनाका अनुमोदन करती है और अपने प्रान्तके वैद्यों तथा आयुर्वेद प्रेमी धनियोंसे इस कार्यमें उदारता पूर्वक सहयोग करनेका अनुरोध करती है। यद्यपि योजनामें संयुक्त प्रान्तके हिस्सेमें एक हजार रुपये ही रखे गये हैं; तथापि यह प्रान्त नि० भा० वैद्य सम्मेलनका प्रवर्तक है इस नातेसे तथा संयुक्त प्रान्तमें ही सम्मेलनका कार्य करते हुए शास्त्रीजीका स्वर्गवास होनेके विचारसे प्रान्तीय सम्मेलन इस योजनाके प्रति अपनी गहरी दिलचस्पी प्रकट करता है और जिलोंसे अनुरोध करता है कि संयुक्त प्रान्तसे इस कार्यमें १२ हजार रुपये इकट्ठे कर दिये जायँ। और इसीके व्याजसे उत्तम ग्रन्थकर्ताको पुरस्कार दिया जाया करे। इस कार्यकी पूर्तिके लिये निम्नलिखित सज्जनोंकी उपसमितिको यह समिति इस कार्यकी योजना तैयार कर कार्यमें परिणत करनेका अधिकार देती है। इस समितिको यह भी अधिकार है कि सुविधा और आवश्यकता

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collecti

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

के अनुसार वह इस उपसमितिमें और सज्जनोंको भी सम्मिलित कर ले।

समितिके सदस्य

श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल प्रयाग
पण्डित शिवराम द्विवेदी लखनऊ
पण्डित विश्वनाथ द्विवेदी पीलीभीत
पण्डित सुरेन्द्रनाथ दीक्षित बाराबङ्की
पण्डित सत्यनारायण मिश्र कानपुर

इसके पश्चात मार्च २३, २४, २५ सन् १९४७ को संयुक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनका सत्रहवां अधिवेशन बुलन्दशहरमें हुआ। उसमें इस सम्बन्धमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

"यह सम्मेलन आयुर्वेदविद्यापीठ द्वारा अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलनके आदि संस्थापक स्वर्गीय आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शङ्करदजी शास्त्री पदेकी स्मारककी योजना प्रकट हुई है। यह सम्मेलन उस योजनाका स्वागत करता है। साथ ही सम्मेलन अपनी स्थायी समितिके बाराबंकी अधिवेशनके विचारोंको स्वीकार करता है कि शास्त्रीजीके स्मारकमें पुरस्कारकी योजनाकी पूर्तिके लिये कमसे कम १२ हजार रुपये एकत्र किये जायँ। जिनके व्याजसे संयुक्तप्रान्तीय सम्मेलनकी ओरसे इस पुरस्कारका प्रबन्ध किया जा सके। यह सम्मेलन निम्नलिखित सज्जनोंकी समितिको अधिकार देता है कि वे इस कार्यकी पूर्तिके लिये आवश्यक कार्य करें।

समितिमें ऊपर लिखे हुए ५ सज्जनोंके अतिरिक्त ६ पं० सीतावर पन्त नैनीताल ७ पं० गणेशदत्त शास्त्री गुदड़ी बाजार मेरठ ८ बाबू

२

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

पन्नालाल वार्ष्णेय अलीगढ़ ६ पं० राधा गोविन्द मिश्र झांसी १० पं० राम विचार पाण्डेय बलिया और ११ पं० श्रीपति शर्मा वैद्य गोरखपुर के नाम रखे गये थे।

इसके पश्चात ३० जुलाई सन् १९४७ में बरेलीमें संयुक्त प्रान्तीय वैद्यसम्मेलनकी स्थायी समितिका अधिवेशन हुआ। उसमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

१—"संयुक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनकी स्थायी समितिने अपने बाराबङ्कीके अधिवेशनमें यह प्रस्ताव स्वीकार किया है कि आयुर्वेद महा सम्मेलनके आदि संस्थापक स्वर्गीय आयुर्वेद महोपाध्याय पं० शङ्करदाजी शास्त्रीपदेके स्मारकमें उत्तम आयुर्वेद ग्रन्थ कर्ताओंको पुरस्कार देनेकी जो योजना है, उसकी आवश्यक रकम संयुक्त प्रान्तमें एकत्र की जाय और वह पुरस्कार संयुक्त प्रान्तके नामसे प्रदान किया जाया करे। स्वर्गीय शास्त्रीजी उत्तर भारतमें आन्दोलनके विचारसे आकर इसी प्रान्तमें स्वर्गवासी हुए थे। इस विचारसे यह प्रस्ताव सर्वथा उचित है। इस प्रस्तावको बुलन्दशहरमें सत्रहवें प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनने स्वीकार कर अनुमोदित किया है। अतएव उस प्रस्तावकी पूर्तिके लिये निम्नलिखित योजना स्वीकार की जाती है। प्रत्येक जिलेके मन्त्रियों और वैद्योंसे अनुरोध है कि इसकी पूर्तिका शीघ्र प्रयत्न करें।

२—बरेली की यह स्थायीसमिति उचित समझती है कि इस योजना को पूर्ण करनेके लिये प्रान्त व्यापी प्रयत्न हो। और संयुक्त प्रान्तका प्रत्येक जिला अपने जिलेके वैद्योंकी संख्या और उसकी आर्थिक स्थितिके विचारसे अपना हिस्सापूर्ण करनेके लिये स्वयं और आयुर्वेदप्रेमी जनतासे धनसंग्रहका प्रयत्न करे।

३—इस उद्देश्य और कार्यकी पूर्तिके लिये आवश्यक है कि प्रत्येक जिलेमें जिला सम्मेलनके द्वारा और जहां संगठित जिला

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सम्मेलन नहीं है वहां स्वतन्त्र रूपसे वैद्यों और आयुर्वेद प्रेमी सज्जनों के सहयोगसे एक समिति बनायी जाय और वह अर्थ संग्रहके लिये पूर्ण उद्योग करे।

४—जहाँ आवश्यक समझा जाय वहां उपयुक्त प्रभावशाली सज्जनोंका डेपुटेशन भेजा जाय और सभा करने तथा आयुर्वेदप्रेमी सज्जनों एवं वैद्योंसे मिलनेका प्रबन्ध किया जाय। ऐसे स्थानोंमें डेपुटेशनको सहायता रूप थैलियां भेंट की जायं।

५—इस प्रकारके डेपुटेशनमें जो योग्य वैद्य हों उन्हें इस स्थानके रोगियोंका निरीक्षण कराया जाय और इस कार्यसे जो अर्थ प्राप्ति हो वह इसी कोषमें जमा किया जाय।

६—कमसे कम ११ हजार रुपये पुरस्कारकोषके लिये आवश्यक होंगे और इस कोषके संग्रहमें सम्भवतः एक हजार रुपये खर्च हों; इस लिये प्रान्तमें कुल बारह हजार रुपयोंका संग्रह आवश्यक है।

७—इस रकमको संयुक्त प्रान्तके जिलोंसे इस प्रकारसे संग्रह करनेका प्रयत्न किया जायगा कि आवश्यक रकम संग्रह हो सके। इस धाराके अनुसार प्रत्येक जिलेके लिये एक रकम निश्चित करदी गयी थी। संयुक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनकी स्थायी समितिके इस निर्णयसे सभी जिलोंको प्रोत्साहन मिला और समय समय पर जो जिला वैद्य सम्मेलन हुए उनमें स्मारक सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकृत हुए और चन्दा भी एकत्र होता गया। कुछ जिलोंकी गति विधिका उल्लेख नीचे लिखे अनुसार है—

हरदोई—जिला वैद्य सम्मेलनने १२ सितम्बर १९४७ के अधिवेशनमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया। "अखिल भारतीय आयुर्वेदविद्यापीठ और आयुर्वेद महा सम्मेलन द्वारा नियोजित एवं संयुक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन अनुमोदित और समर्थित आयुर्वेद महोपाध्याय पं० शङ्करदाजी शास्त्रीपदेको स्मारक योजनाका यह सम्मेलन

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection.

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

स्वागत करता है। और हरदोई जिलेके सभी वैद्यों और आयुर्वेद प्रेमियोंसे अनुरोध करता है कि इस कोषमें वे यथाशक्ति उदारता पूर्वक सहायता कर इसकी पूर्तिमें सहायक हों। इसके बाद अपील होनेपर वहीं कुछ चन्दा भी हुआ।

इलाहाबाद—जिलेके सम्मेलनने अपने इलाहाबादके अधिवेशनसे यह कार्य आरम्भ किया। इसके बाद करछना, हंडिया, परवा, सिरसा, शाहजादपुर, आदि जहाँ सम्मेलन हुए इस विषयकी अपील की गयी और समर्थन प्रस्ताव स्वीकृत हुए। **फतेहपुर** जिलेके सम्मेलनोंमें और खागा तहसील सम्मेलनमें भी प्रस्ताव और अपील द्वारा सहायताका संग्रह हुआ। **बांदा** जिलेने कर्वीके सम्मेलनसे इस विषयको समर्थनके साथ उठाया और बांदाके अधिवेशनमें भी इसकी पूर्तिका प्रयत्न किया। बांदा जिलेके राजापुरमें भी सफल उद्योग हुआ।

इसके पहले पहली सितम्बर १९४७ को **मिर्जापुर जिलेका** द्वितीय अधिवेशन हुआ। उसमें इस योजनाका समर्थन किया गया और वैद्योंसे इस स्मारक कोषमें सहायता पहुँचानेकी अपील की गयी। उसी समय सवातीन सौ रुपयोंका चन्दा लिखा गया। पण्डित चन्द्रदत्तजी त्रिपाठी आयुर्वेद शास्त्राचार्यके प्रयत्नसे उसमेंसे अधिकांश वसूल भी हुआ।

आगरा जिला वैद्य सभाने २६ अक्टूबर सन् १९४७ को एक प्रस्ताव पास किया कि जिला वैद्यसभा आगरा श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारकके लिये धन संग्रह करना निश्चय करती है। जिलेके सभी वैद्य महानुभाव और दानशील सज्जनोंसे दानके लिये प्रार्थना करती है और शीघ्रतातिशीघ्र धन एकत्रित कर पं० जगन्नाथ प्रसाद

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

शुक्लके पास भेज देना आवश्यक है। साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि जिलेके वार्षिक सम्मेलनके अवसर पर कोष शुक्लजी को बुलाकर भेंट किया जाय।

अलीगढ़ जिलेका तृतीय वैद्यसम्मेलन ४ और ५ दिसम्बर सन् १९४८ को हुआ। उसमें प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। "अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलनके संस्थापक आयुर्वेदमहोध्याय पं० शङ्करदाजी शास्त्रीपदे महोदयके स्मारकके लिये आयुर्वेद महासम्मेलन और आयुर्वेद विद्यापीठने जो योजना बनायी है और संयुक्त प्रान्तीय की ओरसे पारितोषिक सम्बन्धी १२ हजार रुपयोंकी रकम पूर्ण करनेके लिये प्रान्तीय वैद्यसम्मेलनने वैद्योंसे जो अनुरोध किया है, उनका यह सम्मेलन समर्थन करता है और अलीगढ़ जिलेके वैद्योंसे अनुरोध करता है कि इस पवित्र और आवश्यक कार्य में यथाशक्ति पूर्ण सहायता देकर कर्तव्यका पालन करें।

१ मार्च सन् १९४८ को **रायबरेली** जिलेका वैद्य सम्मेलन हुआ। उसके नवें प्रस्तावमें कहा गया कि यह सम्मेलन आयुर्वेद महासम्मेलनके संस्थापक पं० शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मारकका समर्थन करता है और प्रत्येक वैद्य एवं आयुर्वेद प्रेमीसे अनुरोध करता है कि इस कार्यमें उदारता पूर्वक सहायता प्रदान कर अपना कर्तव्य पालन करें। उसी समय अपील हुई और जो चन्दा आया वह थैलीके रूपमें श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्लको समर्पित किया गया।

इनके सिवाय हमीरपुर, इटावा, फर्रुखाबाद, अलीगढ़, मेरठ, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, मुरादाबाद, बदायूँ, जौनपुर, सहारनपुर, सुलतानपुर, देहरादून जैसे जिलोंके वैद्यसम्मेलनों द्वारा इस स्मारक समितिका समर्थन किया गया और इन जिलोंमें सहायताकी रकम एकत्र की गयी। लखनऊ, प्रतापगढ़, बनारस,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आजमगढ़, पीलीभीत, नैनीताल, गढ़वाल, झांसी, जालौनमें भी प्रयत्न हुआ। किन्तु अभी मैनपुरी, एटा, मथुरा, बुलन्दशहर, मुजफ्फर नगर, अलमोड़ा, कानपुर, उन्नाव, बस्ती आजमगढ़, पीलीभीत, लखनऊ, फैजाबाद, गोंडा, बहराइच, प्रतापगढ़, बाराबंकी, रामपुर, बनारस आदि जिलोंमें अभी बहुत उद्योग की आवश्यकता है। बनारस शहरसे सहायता प्राप्त हुई है।

विहारप्रान्तीय प्रयत्न

विहार प्रान्तमें इस स्मारकके लिये प्रयत्न हुआ है और कुछ जिलोंमें सफलता प्राप्त हुई है। वहाँके लिये अलगअपील भी छपाकर भेजी गयी है। परन्तु इसके लिये अभीतक व्यापक प्रयत्न नहीं हुआ है। वहांके वैद्योंमें इस कार्य के प्रति सहानुभूति तो है; परन्तु वहांके दलगत वैद्योंके आपसी मतभेदके कारण इसमें आशातीत सफलता नहीं हुई है। २३, २४ फरवरी सन् १९४८ को विहार शाहाबाद जिलेका वैद्य सम्मेलन विक्रमगञ्ज स्थानमें हुआ, उसमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।—

"यह सम्मेलन नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलनके जन्मदाता स्वर्गीय आयुर्वेद महोपाध्याय पं० शंकरदाजी शास्त्री पदेके स्मारककी जो योजना आयुर्वेद विद्यापीठने बनायी है और नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलनने जिसे स्वीकार कर प्रान्तोंसे उसकी पूर्तिका अनुरोध किया है, उसका यह सम्मेलन स्वागत करता है और विहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनकी स्थायीसमितिसे अनुरोध करता है कि इस कार्यकी सिद्धिके लिये सब जिलोंमें इसके लिये संगठित उद्योग करे। यहां कुछ चन्दा भी हुआ। इसके बाद इसी जिलेका सम्मेलन बकसर

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

स्थानमें हुआ। वहां भी समर्थनका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और कुछ चन्दा भी हुआ।

विक्रम जिला पटनासे निकलनेवाले आयुर्वेदिक मासिक **स्वास्थ्य सन्देशके** मार्च १९५८ के अंकमें एक टिप्पणी प्रकाशित हुई। "आयुर्वेदमहासम्मेलनके जन्मदाता आयुर्वेदमहोपाध्याय पं० शङ्करदाजी पदेके स्मारककोषका निर्माण हुआ है। आयुर्वेदमहासम्मेलनने इस स्मारक समितिके अध्यक्ष पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल जीको चुनकर पूरा अधिकार दे दिया है। यह बड़ी दूरदर्शिताका काम हुआ है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप जैसे संलग्न नेताके नेतृत्वमें हमें इस कार्यमें शीघ्र ही सफलता होगी। विहार प्रान्तके प्रति वैद्यवरसे मेरी प्रार्थना है कि इस कोषमें धन देकर अपना कर्तव्य पालन करें। इस कार्यके लिये विहार प्रान्तके २२ प्रमुख वैद्यवरोंके हस्ताक्षरसे एक अपील भी निकली है। चन्दाके रुपये सीधे पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल सम्मेलनमार्ग प्रयागके पतेसे भेजना चाहिये। श्री कपिलदेव त्रिपाठी सम्पादक।

८ अगस्त १९४८ को मुंगेरजिला वैद्यसम्मेलनकी कार्यकारिणीने एक प्रस्ताव पास किया "अखिल भारतीय आयुर्वेद महा सम्मेलन तथा आयुर्वेदविद्यापीठके आदि संस्थापक आयुर्वेदमहोपाध्याय पं० शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मारककोषके सम्बन्धमें सर्व सम्मतिसे निश्चय हुआ कि मुंगेर जिलेके वैद्योंसे अनुरोध किया जाय कि वे इसमें मुक्त हस्त होकर दान करें। तथा धनीमानी सज्जनोंसे दान दिलावें। जिससे जिलेके गौरवकी वृद्धि हो।"

सितम्बर सन् १९३८ ईस्वीके स्वास्थ्य संदेशने फिर एक सम्पादकीय टिप्पणी निकाली, जिसमें लिखा गया कि "विहारप्रान्तको इस महान आवश्यक कोषमें छः सात हजार रुपयोंका दान देना है, जिसमें

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

जुलाई माह तक ४२७।-) ही इलाहाबाद पहुँच सका है। इसमें भी उत्तर विहारसे ही उक्त रकम प्राप्त हुई है! दक्षिण विहारसे अभी तक कुछ भी नहीं। गया जिलेके जहानाबाद सब डवीजनसे कुछ रुपये इस कार्यके लिये एकत्रित हुए हैं। परन्तु इलाहाबाद कार्यालय तक सम्भवतः अभी तक नहीं पहुँच पाया है। समस्तीपुरमें पण्डित मुक्तिनाथ झा जीके द्वारा ही २११) और मुजफ्फरपुरके पं० रामदेव ओझा जीने स्वयं १०१) इस कोषमें देकर वैद्योंको मार्ग प्रदर्शित किया है। उक्त झाजीका उत्साह और कर्तव्यशीलता तो अनुकरणीय तथा ईर्षा उत्पन्न करनेवाली है। आपसे गत माह बातें करनेका हमें सुअवसर प्राप्त हुआ था। वास्तवमें हमें लगा कि आप जैसे उत्साही व्यक्ति विहार प्रान्तके वैद्य समाजमें यदि दो तीन दर्जन निकल आवें तो प्रान्तके आयुर्वेदीय कार्योंमें पूरी प्रगति आ जावेगी। प्रान्तके वैद्यवरोंसे निवेदन है कि अतितेजीके साथ अपना कोटा पूरा किया जावे। जिनके चन्दा इलाहाबाद या स्वास्थ्य सन्देश कार्यालयमें पहुँचते जायगा उनका नाम और रकम हम प्रकाशित करते जायँगे।

विहार प्रान्तीय वैद्योंसे निवेदन शीर्षक एक अपील पण्डित हरिनारायण चतुर्वेदी प्रिसपल पटना, पं० नन्दकिशोर मिश्र प्रधानमन्त्री खभोल, पं० गिरिजादत्त पाठक बक्सर, पं० गंगाधर शास्त्री काव्यतीर्थ गया, पं० भवानीशंकर मिश्र गया, पं० गंगाधर अवस्थी गया, पं० प्रभुनारायण चतुर्वेदी हाजीपुर, पं० रामदेव ओझा मुजफ्फरपुर, पं० कालिका मिश्र सीतागढ़ी, पं० शिवदयालु प्रसाद सेवान छपरा, श्री रामनन्दन मिश्र दरभंगा, श्री मुक्तिनाथ झा दरभंगा, श्री भृगुराज आश्रम मिश्र मोतिहारी, पं० वैद्यनाथ प्रसाद मिश्र बेतिया, श्री मन्मथनाथ बन्द्योपाध्याय भागलपुर, श्री कृपाशङ्कर अवस्थी मुंगेर, श्री रामरत्नपाठक वेगूसराय, श्री जगन्नाथ शर्मा हजारीबाग, श्री शिवशङ्कर पाण्डेय गिरीडीह, श्री तेजनारायण मिश्र राँची, श्री

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पुरुषोत्तम मिश्र पलामू, पं० श्री नारायण शर्मा भागलपुर तथा श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल और श्री सूर्यनारायण मिश्र मन्त्रीके नामसे छपाकर सभी जिलोंके वैद्योंके पास भेजी गयी; किन्तु आशानुरूप फल नहीं हुआ।

७ मई सन् १६४८ में बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनकी स्थायी समितिका अधिवेशन पटनेमें हुआ था। उसमें मन्त्री पं० नन्दकिशोर मिश्र जीने स्मारक समितिका विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि समिति योजनाको स्वीकार करती है और प्रत्येक जिलेके मन्त्री और सभापतिसे अनुरोध करती है कि अपने अपने जिलेमें सहायता संग्रहका संगठित प्रयत्न करें और प्रत्येक वैद्यसे आग्रह किया जाय कि अपनी शक्ति और उत्साहके अनुसार सब लोग सहायता देवें।[१]

सुधानिधिके वर्ष ३६ संख्या १३ में एक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें "बिहारी वैद्यभाइयोंका हिस्सा" शीर्षक देकर लिखा गया था कि बिहारमें वैद्योंका प्रभाव व्यापक रूपमें है। क्या शहरोंमें और क्या देहातोंमें बिहारी वैद्योंका अच्छा प्रभाव है। आमदनीकी दृष्टिसे भी उनकी अवस्था अच्छी है। अतएव यह उचित ही था कि संयुक्त प्रान्तके पश्चात बिहार स्वेच्छासे अपनेऊपर इस विषयका भार लेता। शङ्कर शास्त्रीकी स्मारक योजनामें एक ऐसी व्यवस्था है कि यदि कोई व्यक्ति या प्रान्त कमसे कम पांच हजार रुपये एकत्र कर देवे तो उसकी इच्छाके अनुसार स्मारक समितिके किसी एक कार्यकी व्यवस्था उस व्यक्ति या उस प्रान्तके नाम की जा सकती है। संयुक्त प्रान्तने चाहा है कि उसकी सहायताकी रकमसे पुरस्कारकी योजना की जाय। बिहार प्रान्तने जो अपने लिये व्यवस्था बनायी है उसमें ५५००) एकत्र करनेका इरादा किया गया है। यदि कुछ अड़चनोंके कारण कुछ जिलोंसे पूरी रकम न भी आयी तो कमसे

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection.

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

कम पांच हजार रुपये एकत्र होनेमें अड़चन नहीं पड़नी चाहिये। यह रकम विहारके लिये उचित ही है। संयुक्त प्रान्त विस्तृत है और उसमें ५० जिले और तीन रियासतें हैं। विहारमें केवल १६ जिले हैं और स्वतन्त्र रियासत न सही, स्वतन्त्र रियासतके समकक्ष कितनी ही जमीदारी सिरासतें हैं। इन तालुकेदार ढंगके नरेशोंके अतिरिक्त दरभंगा नरेश ऐसे जमीदार हैं जो संसारके जमीनदारोंमें अग्रणी है। जमीनदारी समाप्त होनेके आन्दोलनके कारण उनके चित्त चल विचल है ऐसी दशामें वैद्य भाइयोंको ही यह रकम एकत्र करनी पड़ेगी। आशा है वे यह रकम एकत्र भी कर लेंगे।...... त्रिकसगंजके प्रस्तावके पश्चात उत्साहित होकर प्रान्तीय मन्त्री पं० नन्दकिशोर मिश्रजीने विश्वास दिलाया कि "पदे योजना सामयिक और आयुर्वेदके विकासके लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। विहरप्रान्तीय वैद्य सम्मेलन तथा विहार आयुर्वेदिक ग्रेजुएट असोसियेशन इस योजनाकी पूर्तिमें पूरी सहायता देगा।" ७ मईकी स्थायीसमितिमें यह कहा गया कि इस कार्यके लिये समिति ५५००) एकत्र करना उचित समझती है। और प्रत्येक जिलेके मन्त्री और सभापतियोंसे अनुरोध करती है कि अपने अपने जिलेमें संगठित प्रयत्नकर अपने जिलेका हिस्सा पूर्ण करनेका प्रयत्न करें।

पण्डित कपिलदेव त्रिपाठीके परामर्शके अनुसार इन रुपयोंका बटवारा जिलोंके अनुसार इस प्रकार किया गया। पटना १००१) आरा, मुजफ्फरपुर भागलपुर, दरभंगा और चम्पारन प्रत्येक पांच पांच सौ रुपये, मुंगेर जिला ४००), गयाजिला ३००), पलामू, रांची हजारीबाग, छपरा, पुर्णिया और सिंहभूमि प्रत्येक दो दो सौ रुपये तथा संथाल परगना और मानभूमि सौ सौ रुपये एकत्र करें। इसे स्वीकार करनेके वाद कहा गया कि विहार प्रान्तीय वैद्योंको अपनी परम्पराका ध्यानरख इसे अवश्य पूरा करना चाहिये। और योजनाके

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

किसी अंगको अपने नामसे प्रचलित करनेका उद्योग करना चाहिये। अप्रकाशित पुस्तकोंकी खोज का एक विभाग है, दूसरा पुस्तक प्रकाशन है, तीसरा विभाग मुद्रणालयका हो सकता है। इनमेंसे किसी एक विभागको अपनाकर इस स्मारक योजनाके साथ विहारको अपना नाम सम्मिलित कर स्थायी गौरव और यश सम्पादनके लिये अवश्य प्रयत्न करना चाहिये।

इस प्रकार दरभंगा, मुजफ्फरपुर, आरा और मुंगेर जिलेमें कुछ काम हुआ। आशा है विहार प्रान्तीय भाई उत्साहसे काम करेंगे तो उनके लिये पांच हजार रुपये एकत्र कर लेना कठिन नहीं होगा।

मध्यप्रदेशका प्रयत्न

मध्यप्रदेशमें भी इस योजनाका स्वागत हुआ। मध्यप्रदेशके साथ श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदेका घनिष्ट सम्बन्ध था। उनके समयमें ही नागपुरमें प्रान्तीय कार्यालय और विद्यालय था। वैद्य पञ्चानन पं० लक्ष्मणराव फणशीकर उसके संचालक थे। किन्तु इस समय तक वे जीवित नहीं रहे। मेरा सम्बन्ध भी मध्यपदेशसे घनिष्ट था। मध्यप्रदेश मेरा शिक्षण और कर्मक्षेत्र रह चुका है। इसलिये वहां के वैद्योंमें इस कार्यके प्रति उत्साह और सहयोगकी भावना तो है; परन्तु आपसी मतभेद और खिंचावके कारण वहां सफलता पूर्वक कार्य बढ़ नहीं पाया। ३० जून सन १९४७ को महा कोशल प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन जबलपुरमें हुआ। उसमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ "आयुर्वेद महासम्मेलनके आदि संस्थापक आयुर्वेदमहोपाध्याय पण्डित शङ्कर दाजी शास्त्री पदेके स्मारकके लिये आयुर्वेदविद्यापीठने जो योजना तैयार की है, उसका यह सम्मेलन स्वागत करता है और अपने महाकोशल प्रान्तके वैद्योंसे इस कार्यमें उदारता पूर्वक सहायता प्रदान करनेका अनुरोध करता है।"

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

मध्यप्रदेशसे तीनसे साढ़े तीन हजार रुपये तककी आशा की गयी थी। जबलपुर और नागपुरसे पांच पांच सौ रुपये, विलासपुर, रायपुर, और अमरावतीसे दो दो सौ रुपये तथा दुर्ग, मण्डला, नरसिंहपुर, सागर, दमोह, हुशंगाबाद, खण्डवा, वैतूल, छिन्दवाड़ा, बालाघाट, भण्डारा, वर्धा, चान्दा, यवतमाल, अकोला, इलिचपुर एवं सिवनीसे सौ सौ रुपयोंकी प्राप्तिकी आशा की गयी थी और इस विषयके प्रार्थना पत्र भेजे भी गये। किन्तु विलासपुर, नागपुर, और जबलपुरमें ही कुछ प्रयत्न हुए। दमोहके पण्डित पाण्डुरंग शिवराम शेंड्ये जीने स्वयं प्रेरणासे २००) दिये। नागपुरमें श्री छांगाणी जी और उनके सुपुत्रके प्रोत्साहनसे कुछ हो पाया। विलासपुर जिलेके शिवरीनरायणके महन्त महोदय स्वामी लालदास जीने स्वयं प्रेरणासे सहायता का आरम्भ किया वहांके वैद्य सम्मेलनके उत्साही चांपाके पं० शान्तिस्वरूप मिश्र आदि सज्जनोंने भी उत्साह प्रकट किया।

राजपूतानेमें प्रयत्न

राजपूताना नरेशोंका प्रान्त था, वहांके वैद्य भी अन्य प्रान्तके वैद्योंकी अपेक्षा सम्पन्न हैं। अतएव यह आशा की गयी थी कि राजपूतानेसे कमसे कम पांच हजार रुपये हो जावें तो स्मारक समिति के पुस्तक प्रकाशनका कार्य उसीके नामसे हो। स्वामी जयरामदास जीने उत्साह और उदारता पूर्वक इसका आरम्भ भी किया। मेरा अन्दाजा था कि यदि जयपुर अपने ठिकानोंके वैद्योंकी सहायता मिलाकर एक हजार, जोधपुर ६००), बीकानेर ७००), उदयपुर ५००) अलवर २००), भरतपुर २००) धोलपुर, कोटा, बूंदी, किशनगढ़ सवा सवा सौ रुपये तथा बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरगढ़, टोंक, करौली, शाहपुरा, जैसलमेर, सिरोही तथा चार पांच और ठिकानोंके

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वैद्य सौ सौ रुपये भी दे दें और अजमेर मेरवाड़ाके वैद्य मिलकर ५००) एकत्र कर दें तो पांचहजार रुपयोंसे अधिक होनेमें विलम्ब नहीं हो सकता। मैंने इस सम्बन्धका सुझाव स्वामी मंगलदासजी तथा अन्य कुछ भाइयोंके सामने रखा। राजपूताना प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनकी द्विमासिकी पत्रिकाके सितम्बर-अक्टूबर सन् १९४७ में एक लेख भी प्रकाशित हुआ। लेखमें लिखा गया था "वैद्य जगत इस तथ्यसे तो परिचित होगा कि नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलनके जन्मदाता श्रद्धेय स्वर्गीय वैद्य शङ्कर दाजी शास्त्री पदे थे। आपके ही अध्यवसायकाका परिणाम है कि आज भारतवर्षके वैद्य समुदायका प्रतिनिधित्व इसी महान संस्थाके द्वारा हो रहा है। आयुर्वेद तथा वैद्य समुदायके हित संरक्षणमें इस संस्थाने जो कुछ काम किया है उसमें स्वर्गीय आत्माका भी पूरा पूरा हिस्सा है। उनकी स्मृतिको बनाये रखनेके उद्देश्यसे नि० भा० वैद्य सम्मेलन द्वारा उपरोक्त समितिका दो वर्ष पहले आयोजन किया गया था। इस समितिके संयोजक यू० पी० प्रान्तके प्रख्यात वैद्य नेता माननीय जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल हैं। इस समितिने एक योजना बनायी है, जो कि नि० भा० वैद्य सम्मेलन पत्रिकाके मार्चके अंकमें प्रकाशित हुई है। समिति शास्त्रीजी के स्मारकके लिये एक कोष एकत्रित करना चाहती है। उसने इक्कीस हजार रुपये एकत्रित होनेपर स्मारकका कार्यारम्भ करनेका निश्चय किया है। भारत जैसे विशाल देशके वैद्योंके लिये यह रकम एकत्रित करना कोई कठिन कार्य नहीं है। समितिने अर्थोपलब्धि सुलभतासे हो एतदर्थ प्रति बड़े प्रान्तके जिम्मे कमसे कम एक हजारकी रकम रखी है। राजपूतानाके लिये भी एक हजारकी रकम (नहीं, नहीं, पांच हजार की) नियुक्त की गयी है। कहना नहीं होगा कि इतनीसी रकमको राजपूतानेके वैद्य अनायास ही एकत्रित कर सकते हैं। यदि वे ऐसा करनेका निश्चय कर लें। मेरी समझसे राजपूतानेमें छोटी बड़ी

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection.

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

२२ रियासतें हैं। आनुपातिक क्रमसे यदि इनसे रकम प्राप्त की जाय तो बिना कुछ कष्टके एक एक रियासत अपना हिस्सा शीघ्र एकत्रित कर सकता है। राजपूतानेमें सबसे प्रमुख चार रियासतें जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर हैं। कोटा, बूँदी, किशनगढ़, अलवर, शाहपुरा, बांसवाड़ा, टोंक, जैसलमेर, प्रतापगढ़, करौली, भरतपुर धोलपुर आदि है। शेष रियासतोंमें कुछ मध्य स्थितिकी व कुछ छोटी रियासतें हैं। अजमेर मेरवाड़ा भी राजपूतानेमें है। अतः सम्पूर्ण राजपूतानेके वैद्य महानभावोंसे विनम्र निवेदन है कि वे स्वर्गीय शंकरदाजी शास्त्री पदे स्मारक कोषके लिये यथेच्छ सहायता प्रदान कर राजपूतानेके हिस्से की शीघ्र पूर्ति करें। चन्देकी रकम राजपूताना प्रान्तीय वैद्यसम्मेलनके नाम भेजनी चाहिये। मन्त्रीका पता निम्न है। श्री मङ्गलादास स्वामी श्री दादू महाविद्यालय, मोती डूँगरी, जयपुर सिटी।

अपील काफी बलवान है। यदि स्वामी जी प्रयत्नशील रहे तो पांच हजार रुपया एकत्र करना भी उनके लिये कठिन नहीं होगा। उन्होंने जो सहायता भेजवायी है, उसे प्रथम किश्त समझ आगेके लिये भी उद्योग करते रहें तो राजपूताना प्रान्त स्मारक कार्यके एक भागका संचालन अपने द्रव्यसे करा सकता है।

बंगालका प्रयत्न

बङ्गालमें स्मारक कोषके लिये अभी तक संगठित प्रयत्न नहीं हो सका। किन्तु बङ्गालके मासिक पत्र "आयुर्वेद जगत" ने संयुक्त प्रान्तीय आयुर्वेदिक परिस्थितिकी चर्चा करते हुए सन् १९४९ में लिखा था।

"यहां पर आयुर्वेद पितामह श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल युवकोचित

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

उद्योग लेकर शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारकके लिये दश हजारसे अधिक रुपयों का संग्रह कर आयुर्वेदग्रन्थ प्रणयन कार्यमें और पुरस्कार प्रदानके कार्यमें विनियोगके लिये घोषणा की है इसके अतिरिक्त सभी आयुर्वेद हितकर अनुष्ठान कार्यमें वे युवकोंके समान उत्साह प्रदर्शन कर रहे हैं।"

यदि बंगाल प्रान्तीय वैद्य और कविराज मिलकर प्रयत्न करें तो बंगाल अपना हिस्सा पूर्ण करनेमें पीछे नहीं रहेगा।

बम्बई महाराष्ट्र और गुजरातका प्रयत्न

शङ्करदाजी शास्त्री पदेकी पितृभूमि और जन्मभूमि महाराष्ट्र है। वे स्वयं महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। बम्बई उनकी शिक्षा भूमि और कर्मभूमि रही है। महाराष्ट्रका नासिक शहर भी उनका कार्यक्षेत्र था। अतएव यह आशा थी और है कि महाराष्ट्र और बम्बईके वैद्य इस आयोजनके सबसे अधिक समर्थक और कायपूरक होंगे। अभी तक इस विषयमें वहां जो उत्साह देखा गया है, वह उत्साह वर्धक नहीं है। बम्बईकी वैद्यसभाके प्रयत्नसे बम्बईसे कुछ रकम आया है और महाराष्ट्र प्रान्तीय वैद्यों और वैद्यसम्मेलनके उद्योगसे महाराष्ट्रके वैद्योंसे भी थोड़ी सहायता मिली है। गुजरात के अहमदाबादकी वैद्यसभाकी ओरसे सहायताकी एक छोटी रकम मिली है; परन्तु उसे समस्त गुजरातके वैद्योंकी सहायता कहनेमें भी लज्जाका बोध होता है। विडौदाके नि० भा० वैद्य सम्मेलनकी बचतमेंसे एक सहायता रूप रकम प्राप्त हुई है। कच्छ और काठिया-वाड़में इस सम्बन्धमें अब तक विशेष प्रयत्न नहीं हुआ है। वहांके वैद्य भाइयोंको इसके लिये प्रयत्नशील होना चाहिये। जहां तक

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

आयुर्वेदिक पत्रोंका सम्बन्ध है, उनसे आवश्यक सहायता और प्रेरणा प्राप्त हुई है।

गुजराती मासिक **आयुर्वेद जगतने** अपने २० दिसम्बर १९४६ के अंकमें लिखा था उसका अनुवाद यों है "स्मारक समिति के अध्यक्ष वैद्य जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल (सुधानिधिके) हस्ताक्षरसे एक परिपत्र प्रकाशित हुआ है। आयुर्वेदकी आजकी आशाजनक उन्नति अवस्था परिपत्रमें लिखे अनुसार स्वर्गीय वैद्य पदेकी आभारी है। उनके स्मारकके लिये २१ हजार रुपयोंकी आयोजना उसमें रखी गयी है। रकम एकत्र होनेपर उसमेंसे १२ हजार रुपयोंके व्याजसे प्रति दूसरे वर्ष सर्वोत्तम आयुर्वेदिक ग्रन्थके लेखकको पांच सौ रुपये पारितोषिक दिया जायगा। बाकीके ९ हजार रुपयोंका व्याज प्राचीन और नवीन ग्रन्थोके प्रकाशनमें लगाया जायगा। शुक्लजीकी प्रार्थना है कि प्रत्येक प्रान्त इसमें २०० से ५०० तक देवें * यह स्मारक समिति नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठके अधीन स्थापित हुई है। सहायक लोगोंको वैद्य शुक्ल (३ सम्मेलनमार्ग, प्रयाग) से पत्रव्यवहार करना चाहिये।" इसी **आयुर्वेद जगत** पत्रने अपने २०-१०-१९४७ के अंकमें **"वैद्य जगन्नाथ प्रसाद शुक्लनी विनन्ती"** शीर्षक देकर फिर एक लेख छापा है, जिसका अनुवाद यों है "आयुर्वेद जगत पत्रके सम्पादक वैद्य प्रताप कुमार पोपटभाईको व्यक्तिगत पत्रके द्वारा श्री शङ्करशास्त्री पदे स्मारक समितिके अध्यक्ष

---

* सम्पादक जीकी यह धारणा ठीक नहीं है। महाराष्ट्र, बम्बई और, गुजरात-काठियावाड़ तथा कच्छसे कमसे कम एक एक हजार रुपयों की आशा की गयी है। वही रकम योजनामें लिखी गयी है। बल्कि बम्बईसे तो खासी रकमकी आशा करनी चाहिये।

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

सुधानिधिकार वैद्य जगन्नाथ प्रसाद शुक्लने इस बातकी शिकायत की है कि उक्त स्मारकके लिये बम्बई और गुजरातने कुछ भी नहीं किया ! इस पर उन्होंने खेद भी प्रकाशित किया है। उनका कहना है कि पण्डित शङ्करदाजी शास्त्री पदे बम्बईमें ही रहते थे और उन्होंने अपना कार्यारम्भ भी बम्बईसे ही किया था। अतएव बम्बईके वैद्योंका प्रथम कर्तव्य है कि वे इस प्रश्नपर ध्यान दें। गुजरातके वैद्योंको भी इस विषयमें दिलचस्पी लेनी चाहिये। क्योंकि पदेकी पुस्तकें **सस्ता साहित्य कार्यालय** द्वारा प्रसिद्ध हुई हैं और उनके कारण समस्त गुजरात उनसे परिचित है। गुजरात चाहे तो एक पक्षमें ही हमें विराट सहायता कर सकता है। यह आवश्यक है कि वैद्य जगन्नाथ प्रसाद शुक्लकी इस विनतीको बम्बई, गुजरात और महाराष्ट्रके वैद्य स्वीकार करें।

अहमदाबादका गुजराती **वैद्यकल्पतरु** एक प्राचीन पत्र है और श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदेके मित्र पं० जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी का पत्र है। उसने फरवरी सन १९४८ के अंकमें लिखा था, उसका अनुवाद यों है—

"स्वर्गीय पदेजीके स्मारकके लिये वैद्य जगन्नाथ प्रसाद जी की मदद करनेके लिये विद्यापीठने एक समिति नियुक्ति की है। इस स्मारकके लिये पचीस हजार रुपयोंका उपयोग प्राचीन पुस्तकोंकी खोज और नवीन पुस्तकोंके निर्माण तथा प्रकाशनमें होगा। प्रति तीसरे वर्ष सर्वोत्तम आयुर्वेदिक ग्रन्थाकारको पांच सौ रुपयोंका पुरस्कार भी मिला करेगा। नवम्बर सन् ४६ से अक्टूबर सन ४७ तक १७४२।) इस निधिमें एकत्र हुए हैं। संयुक्त प्रान्तमें निधिके लिये एक प्रान्तीय समिति बनायी गयी है। मा'लूम पड़ता है वह ठीक काम कर रही है। बम्बई वैद्य सभाकी एक बैठक २० दिसम्बर सन् ४७ को प्र० आयु-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वेंद कालेज हालमें हुई थी, उसमें श्री यादवजी त्रीकमजी तथा श्री जुगतराम शङ्कर प्रसाद आदिके दानकी रकम प्रसिद्ध हुई थी। स्मारक के लिये पचीस हजार रुपये एकत्र करनेका काम है। आज भारतमें लाखों वैद्यराज आयुर्वेदके आधार पर अपना योगक्षेम चला रहे हैं। उन्हें देखते हुए यह रकम एकत्र हो जानी चाहिये। उसके लिये अपने प्रान्तमें प्रान्तिक मन्त्रियों, विद्यालयके संचालकों और अग्रगण्य विद्वानों तथा वैद्यराजोंको मिलकर प्रान्तिक सहायक समितिकी रचना होनी चाहिये। इस समितिके निरीक्षणमें जिलाओं, शहरों, कसबोंके प्रतिनिधियोंकी उपसमितिकी योजना होनी चाहिये। ऐसी समितियाँ अपने प्रान्तके वैद्यराजोंसे फण्ड एकत्र करनेका काम आरम्भ कर देवें। जल्दी हो या देरसे यह कार्य तो करना ही है। अतएव उत्साही बनकर आजसे ही जाग्रत हो कार्यरत होना अधिक इष्ट है। इससे आयुर्वेदकी सेवाके साथ वैद्योको स्वयं प्रकाशमें आने और समाजमें अपना स्थान शोभास्पद बनानेका सुअवसर है। इस निधिके लिये हमने अपने नवम्बर सन् १९४७ के अंकमें अपील छापी है। अहमदाबाद की वैद्य सभाने ५०) वैद्य सभाके सभ्योंकी ओरसे निधिमें दिया है।

इसके पहले नवम्बर सन १९४७ में **वैद्यकल्पतरुमें** जो अपील छपी थी, उसमें कहा गया था "बम्बई इलाकेके (गुजरात-काठियावाढ़- महाराष्ट्र और बम्बईके) वैद्य भाइयोंसे सविनय निवेदन है कि महासम्मेलनकी ओरसे स्वर्गीय शङ्कर दाजी शास्त्री पदेके संस्मरण नियुक्त करनेकेलिये समितिकी रचना की गयी है। उत्तर प्रदेशमें इस फण्डके लिये अच्छी सहायता मिली है। अपना इलाका तो शङ्कर शास्त्री पदेकी मातृभूमि है। इस इलाकेमें कमसे कम २५ तीस हजार वैद्य रहते हैं। उन्होंने सम्मेलनकी ऐसी संस्था स्थापित की जिसके द्वारा वैद्य समाज आवश्यक प्रगति पथ पर बढ़ता रहा है, ऐसे महान

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

पुरुषके स्मारक फण्डमें हम यथाशक्ति सहायता न दे सकें तो दूसरे प्रान्तवालों पर कैसा असर पड़ेगा ? स्मारक समितिने इस प्रान्तके लिये जो हिस्सा नियुक्त किया है, उसके लिये इस निवेदनके द्वारा हमारी नम्र प्रार्थना है कि हमारे प्रान्तके प्रत्येक वैद्यको इस महत्वपूर्ण कार्यमें फूल या फूलकी पखड़ी अर्पणकर महान सद्गत महर्षिके लिये पुष्पाञ्जलि अर्पण कर कृतार्थ होना चाहिये। एक एक बूंदसे सरोवर भरता है और एक एक कंकड़से पाल बाँधता है। इस न्यायसे प्रत्येक वैद्यक व्यवसायी कमसे कम एक रुपयेकी रकम भी अर्पण करे तो हमारा इलाका अच्छीसे अच्छी सेवा पूर्ण कर सकता है। सहायताकी रकम वैद्य जगन्नाथ प्रसादके पास अथवा वैद्य रविशङ्कर जटाशङ्कर त्रिवेदी गुजरात फार्मसी, गांधीरोड़ अहमदाबादके पास आनी चाहिये।

नासिककी मराठी "**आयुर्वेदपत्रिका**" ने अपने पहली फरवरी सन १९४८ के अंकमें लिखा था "महामहोपाध्याय कै० शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मरणार्थ आरम्भ की हुई निधिमें, गत अक्टूबर तक १७४२) जमा हुए हैं। संयुक्त प्रान्तके प्रत्येक गाँवके वैद्य इस निधिके लिये रकम जमा कर रहे हैं। इस निधिकी रकम आयुर्वेदीय पाठ्यग्रन्थ निर्माण करनेमें खर्च होनेवाली है।"

२६ और १७ मई सन १९४८ ईस्वीको चेम्बूर स्थानमें **महाराष्ट्र प्रान्तीय** वैद्य सम्मेलनका अधिवेशन हुआ था। उसमें निम्न लिखित प्रस्ताव पास हुआ था। उसका अनुवाद यों है—

"निखिलभारतवर्षीय आयुर्वेद महामण्डलके आद्य संस्थापक कै० वैद्य शङ्कर दाजी शास्त्री पदेका स्मारक बनानेके लिये नि० भा० आयुर्वेद महामण्डलने निश्चय किया है। उसके लिये निधि एकत्र करनेका काम आरम्भ हो गया है। अतएव महाराष्ट्रके सभी वैद्य

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

और आयुर्वेद प्रेमियोंको इस निधिके लिये वैद्य जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल इलाहाबादके पतेपर चन्दा भेजकर सहायता करनी चाहिये। ऐसी इस सम्मेलनकी आग्रह पूर्वक विनती है।"

१ फरवरी सन् १९५० के सुधानिधिसे प्रकट होता है कि महाराष्ट्र प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनके मन्त्री वैद्य पञ्चानन पं० ग० भ० अभ्यङ्करशास्त्रीने महाराष्ट्र प्रान्तीय वैद्योंको सूचित किया है कि कै० पदेशास्त्रीकी स्मारक योजना नि० भा० आयुर्वेद कांग्रेसने अङ्कित की है, यह बात महाराष्ट्रीयोंके लिये अभिमानास्पद है। अतएव इस योजनामें यथाशक्ति अधिक सहायता प्रत्येक महाराष्ट्रीय वैद्यको करनी चाहिये। आपने प्रार्थना की है कि प्रत्येक जिला सम्मेलन अपना अधिवेशन कर इस विषयपर विचार करें।

१ जुलाई सन १९५० के सुधानिधिसे मालूम पड़ता है कि २८ और २९ मई सन १९५० में महाराष्ट्र प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनका छठा अधिवेशन सोलापुरमें हुआ था। उसमें इस स्मारकके सम्बन्धमें एक प्रस्ताव स्वीकार हुआ था। "आयुर्वेद महामण्डलके आद्य संस्थापक कै० शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारककी योजना आयुर्वेद महामण्डलकी ओरसे हो रही है। इस प्रान्तके वैद्योंको उसमें सहायता पहुँचानी चाहिये। इस कार्यके निमित्त निम्न लिखित सज्जनोंकी एक समिति नियुक्त की जाती है (१) वैद्य काका साहब पुराणिक पनवेल (२) वैद्य माधव शास्त्री जोशी पूना (३) वैद्य विन्दुमाधव शास्त्री पण्डित नासिक (४) वैद्य श्री हर्षे (पदसिद्ध मन्त्री नियन्त्रक)।"

इसी अंकसे यह भी पता चलता है कि कुलाबा जिलेके वैद्य सम्मेलनने भी समर्थनका प्रस्ताव स्वीकार किया है।

आयुर्वेदपत्रिका सम्पादक पण्डित विन्दुमाधव जीके प्रयत्नसे सम्मेलनकी प्रेरणा द्वारा कुछ रकम एकत्र भी हुई थी, जो पण्डित

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

जी द्वारा प्राप्त हुई है। किन्तु महाराष्ट्र, गुजरात, कच्छ और काठियावाड़के वैद्य भाइयोंसे जैसी अच्छी सहायताकी अपेक्षा है वैसी ही एकत्र करनेकी आवश्यकता है।

अन्यपत्रोंकी सहानुभूति

इस आन्दोलनका प्रभाव काश्मीर और नैपालपर नहीं पड़ सका; क्योंकि वहां लगातार अशान्ति और राज्यक्रान्ति रही। सीमाप्रान्त, पश्चिमी पंजाब और सिन्धका भाग भारतसे अलग होकर पाकिस्तान में चला गया और वहांके हिन्दुओंको या तो मुसलमान होना पड़ा या मौतके घाट उतरना पड़ा अथवा भागकर भारतमें आकर शरण लेनी पड़ी। अतएव वहांके वैद्योंसे भी सहायताकी सम्भावना न रही। पूर्वी बंगालमें अभी कुछ हिन्दू और कविराज हैं; किन्तु अनुकूल वातावरणके अभावमें आन्दोलन नहीं हो सका। आसाममें भी इस सम्बन्धकी स्वस्थ्य चर्चा नहीं हो पायी। पश्चिमी बंगालमें इसके लिये कोई अनुकूलता दृष्टिगत नहीं हुई। एक बार मुझे कलकत्ते जाकर वैद्यों और कविराज भाइयोंसे निवेदन करनेका अवसर मिला है और आश्वासन वाक्य भी मिले हैं; किन्तु अभी प्रयत्न अपेक्षित है। उड़ीसाके वैद्योंका सहयोग अभी तक प्राप्त नहीं हो सका। आन्ध्र, तामिल, करनाटकमें भी अभीतक वैद्यों द्वारा संगठित प्रयत्न नहीं हुआ। हैदराबादमें एक बार मेरा जाना हुआ था और कुछ सहायता भी प्राप्त हुई थी। मध्यभारत और मालवामें भी अभी तक उदारताकी लहरोंकी हिलोड़ नहीं उठी। पंजाब, पेप्सू और हिमालय प्रान्तके राज्योंमें भी अभी हमारी प्रार्थनाका असर नहीं हुआ। दिल्ली प्रान्तके वैद्योंने प्रथम पुरस्कारके लिये ५००) की रकम उदारता पूर्वक दी थी। अब आवश्यक है कि वहांके वैद्य भाइयोंसे उदार सहायता

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

भी प्राप्त हो। हिन्दीके आयुर्वैदिक पत्रोंने सहानुभूति प्रकट की है; किन्तु सार्वजनिक पत्रोंमें हमारी प्रार्थनाका असर अभी नहीं पड़ रहा है। प्रयागके "भारत" पत्रने अपनी उदारता प्रकट की है। हम नीचे अन्य पत्रोंकी सहानुभूतिका उल्लेख करते हैं—

प्रयागके हिन्दी दैनिक "भारत" ३ सितम्बर १९४७ में छपा था "नि० भा० आयुर्वेद महा सम्मेलन तथा आयुर्वेद विद्यापीठ आदिके संस्थापक पं० शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मारकके लिये एक योजना तैयार हुई है। उसे आयुर्वेद महा सम्मेलनने भी स्वीकार कर सभी प्रान्तोंके वैद्योंसे उसने उदारता पूर्वक दान देनेकी अपील की है। स्मारक समितिका विचार है कि २५ हजार रुपये एकत्र किये जायँ और १२ हजार रुपयोंके व्याजसे प्रति तीसरे वर्ष सर्वोत्तम आयुर्वेद ग्रन्थकारको ५००) का पुरस्कार दिया जाय। शेष द्रव्यसे प्राचीन पुस्तकोंकी खोज और प्रकाशन तथा नवीन पुस्तकोंका निर्माण और प्रकाशन आदि कार्य हों। संयुक्त प्रान्तके वैद्य सम्मेलनकी स्थायी समितिने भी इस योजनाका समर्थन किया है और धन संग्रह करनेके लिये एक समिति भी बनायी है। इस कार्यके लिये कमसे कम १२ हजार रुपया संयुक्त प्रान्तसे एकत्रित करनेका निश्चय किया गया है। प्रान्तके वैद्योंसे समितिने अपीलकी है कि वह इस स्मारककोषमें उदारता पूर्वक दान दें।"

मुरादाबादके "वैद्य" ने अप्रैल मई सन् १९४७ के अंकमें अपील का उल्लेख कर कहा है कि "स्मारककी यह ऐसी योजना है जिसके साथ ही आयुर्वैदिक साहित्यकी पूर्ति और अभिवृद्धिका बराबर उद्योग होता रहेगा। संयुक्त प्रान्तका इससे गौरव बढ़ेगा। अतः आशा है आप अपने जिलेमें स्मारक सहायता समिति संगठितकर सहायताकी रकम संग्रह करनेका शीघ्र प्रयत्न करेंगे। प्रत्येक प्रान्तके

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वैद्योंको अपनी धनराशि स्मारक समितिके अध्यक्ष शुक्ल जीके पास भेज देनी चाहिये।

विजयगढ़ अलीगढ़के **प्राणाचार्य** ने अपने सितम्बर १९४७ के अंकमें स्मारक का जिक्र करते हुए लिखा है कि कितनी रकम देनेवालोंको क्या सहूलियत मिलेगी। अन्तमें लिखा गया है कि "आशा है युक्त प्रान्तीय वैद्य इस निवेदन पर ध्यान देंगे तथा अधिकसे अधिक रुपये भेज देंगे।

विजयगढ़ (अलीगढ़) के **"श्री धन्वन्तरि"** पत्रने सितम्बर १९४७ के अंकमें छापा था " श्री स्वर्गीय पदे जी आयुर्वेदसमाजके सर्वाग्रणीनेता हुए और थे उन्होने आयुर्वेद महासम्मेलन एवं विद्यापीठ की स्थापना कर आयुर्वेदमें जागृतिका श्री गणेश किया। उन्हींके पदचिन्होंपर चलते हुए सामयिक आयुर्वेद नेताओंने आयुर्वेद समाज में पर्याप्त जागृति की है। क्या वैद्य समुदाय जिस विज्ञानसे अपनी जीविका उपार्जित करते हैं, उस विज्ञानकी प्रतिष्ठा वृद्धिके लिये उसके सेवकका उचित आदर न करेगा? बूंद बूंद से घड़ा भर जाता है। अतएव आप बिना संकोच छोटीसे छोटी रकम जो भी आप देना चाहें संयोजक........के पतेपर अविलम्ब भेजकर इस महान यज्ञमें भाग लें। इस योजनासे "एक पन्थ दो काज" वाली कहावत चरितार्थ होती है। श्री स्वर्गीय पदेजीके स्मारकके साथ साथ आयुर्वेद साहित्यकी अभिवृद्धिका बराबर प्रयत्न होता रहेगा। आशा है "धन्वन्तरि" के प्रत्येक पाठक इसमें निः सङ्कोच एवं उदारता पूर्वक दान देकर आयुर्वेद उत्थानमें सहायक होगा।

प्राणाचार्यने—नवम्बर सन् १९४७ में फिर लिखा "उपर्युक्त स्मारकके बारेमें पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल आदि माननीय चिकित्सक बहुत ही प्रयत्नशील हैं। पर अभी तक इसके लिये इतना स्वल्पधन

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection.

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

एकत्रित हुआ है वि वह सरोवरमें बूंदके समान है। अतः हमें अपने संगठनके प्रथम दूतका आभार मानते हुए यथाशक्ति देकर उनके स्मारकके लिये सहायता देनी चाहिये।

मुरादाबादके वैद्य पत्रने अपने अक्टूबर सन १९४८ के अंकमें फिर लिखा कि "यह किसी भी वैद्यसे छिपा नहीं है कि अबसे ३८ वर्ष पूर्व न तो वैद्योंकी कोई संस्था ही थीं और न वैद्य समाजके लिये संगठित रूपसे कोई कुछ करता ही था। उस समय डाक्टरोंकी संख्या बढ़ती जाती थी और वे लोग आयुर्वेदको मिटा देना चाहते थे। उस समय आयुर्वेद संसारकी गिरी हुई दशाका सर्व प्रथम अनुभव करनेवाला कोई था तो वह श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे थे। उन्होंने समयकी स्थितिको देखकर जिस मार्गका अवलम्बन किया वह आज भी हमारी रक्षाका साधन बना हुआ है। श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे यह चाहते थे कि भारतके वैद्य वैसे ही सर्वगुण सम्पन्न हों जैसे पूर्वकालमें हुआ करते थे। उनके विचारोंकी पूर्तिके लिये हमारे संयुक्तप्रान्तमें हमारे वयोवृद्ध नेता श्री आयुर्वेद पञ्चानन पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्लने पदे स्मारककोषके लिये असीम उद्योग किया है। हम श्रद्धेय शुक्लजीको उनके सद् प्रयत्नके लिये बधाई देते हैं और अपने वैद्य बन्धुओंसे पुरजोर अपील करते हैं कि वे अपने प्यारे आयुर्वेदके हितके लिये उक्त कोषमें अधिकसे अधिक धन देकर अपने कर्तव्यका पालन करें। वैद्य विष्णुकान्त जैन सम्पादक।

सुधानिधिकी सहायता

प्रयागके सुधानिधि पत्रने इस कोषके लिये जो प्रयत्नकिया है उसका विस्तृत वर्णन करना रिपोर्टको बहुत बढ़ा देना होगा। एक प्रकारसे स्मारक कोषकी सफलताका अधिकांश श्रेय इस पत्रको है।

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इस सम्बन्धकी सभी सूचना और अपील इसमें छपती रही हैं। दान देने वालोंके नाम और इस कार्यमें उद्योग करनेवालोंकी प्रशंसा छपानेसे दान दाताओंको उत्साह प्रदान होता रहा है। सुधानिधिके ग्राहकोंसे सहायता एकत्रकर इस निधिको समर्पित किया है। उसका केवल संक्षिप्त दिग्दर्शन ही यहां सम्भव है।

जनवरी सन् १९४६ के अङ्कमें पण्डित शङ्करदाजी शास्त्री पदे द्वारा किये हुए काम और अपने पिताकी दी हुई सम्पत्ति तथा अपनी निजकी आमदनीका एक लाखसे अधिक रुपया सम्मेलन स्थापनके प्रारम्भिक उद्योगोंमें खर्चकर डालनेका जिक्र कर उनका उचित स्मारक बनानेकी आवश्यकता पर जोर दिया गया था। वैद्य सम्मेलनके कई वर्षों के प्रयासका जिक्र कर कहा गया था कि एक पदक दे देना मात्र उनका उचित स्मारक नहीं हो सकता। इसके बाद सुझाव दिया गया था कि श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदेके नामसे एक विश्वविद्यालय की स्थापना होनी चाहिये। जिससे नित्यके विद्यादानसे उनके आत्माको सन्तोष होता। यदि यह कार्य सम्मेलनकी शक्तिसे परे समझा जाय तो कमसे कम १० हजार रुपये एकत्र कर उसके व्याजसे उत्तम लेखकको पुरस्कार की योजना हो। अथवा दश हजार रुपयोंसे पाठ्यक्रमकी पुस्तकें छापकर प्रकाशित की जायँ और उनकी बिक्रीकी आमदनी इसी फण्डमें जमा होती रहे। जिससे प्रकाशन और पुरस्कार दोनों काम चलते रहें। यदि रुपया एकत्र करना कठिन हो तो विद्यापीठकी आमदनीसे दश हजार रुपये निकाल कर यह काम आरम्भ कर दिया जाय। विद्यापीठको इस विषयके प्रस्तावको स्वीकार करने पर धन्यवाद दिया गया और आशा की गयी कि आयुर्वेद महामण्डल इस प्रस्तावको स्वीकार करेगा।

मार्च सन् १९४६ के सुधानिधिके अङ्कमें "शङ्कर स्मारक स्वरूप" हेडिङ्ग देकर एक लेख प्रकाशित हुआ। इसके आरम्भमें विद्यापीठके

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection.

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

प्रस्तावका जिक्र किया गया, जिससे दश हजार रुपये एकत्र करनेका भार श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल पर डाला गया था और उसके व्याजसे प्रति तीसरे वर्ष उत्तम पुस्तक लेखकको पुरस्कार और ताम्रपत्र देने की बात कही गयी थी। यद्यपि इस प्रस्ताव की सूचना श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्लके पास नहीं आयी थी, तथापि पत्रिकामें छपे प्रस्तावको पढ़कर प्रस्ताव किया गया कि एक व्यक्ति पर भार न डालकर इसके लिये एक समिति बना देनी चाहिये। समितिमें पत्र द्वारा प्राप्त सम्मति भी ग्राह्य होने और सदस्योंको अपने अपने प्रान्तमें निधि एकत्र करनेकी सलाह दी गयी थी। पुरस्कारकी रकम एक हजार रुपये रखने और व्ययके लिये ३००) रखनेके लिये कोष इतना रहे कि तीन वर्षमें तेरह सौ रुपयोका व्याज आ जाय। कहा गया था कि दशहजार रुपये चन्देसे एकत्र हों और पांच हजार रुपये विद्यापीठ दे और अनुभवी लोगो द्वारा आयुर्वेदकी आवश्यकता और ज्ञानवर्धन सम्बन्धी पुस्तकें प्रकाशित करनेका उपक्रम हो। देशके एक सौ सज्जनोंसे सौ सौ रुपये लेनेसे इस प्रकार फण्ड जमा हो सकता है और पुरस्कार तथा प्रकाशनका काम चल सकता है।

दिसम्बर सन् १९४७ के अंकमें एक लेख निकला जिसमें शङ्करदाजी शास्त्री पदेको इस युगके आयुर्वेदोद्धारक महान कार्यकर्ता और महर्षि कहकर किस प्रकार कष्ट सहन कर उन्होंने आयुर्वेदोद्धारके कार्यारम्भ किये थे इसका इतिहास बतलाया गया था। वैद्यसम्मेलनके स्थापन और विद्यापीठके संगठन तथा आन्दोलनके ढङ्गका वर्णन कर स्मारकका प्रतिपादन करते हुए उसकी योजना सुझायी गयी थी। स्मारक कोषकी रकम २१ हजार तक बढ़ानेके प्रस्तावका जिक्र कर कहा गया था कि यह रकम कमसे कम २५ हजार रुपये होनी चाहिये। वैद्योंको अपने अपने प्रान्तमें ऐसा संगठन करनेकी सलाह दी गयी थी, जिससे दो तीन महीनेमें ही २५ हजार

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

रुपये एकत्र हो सकें। दान दाताओंका वर्गीकरण करनेके सुझाव थे और उन्हें क्या अधिकार रहे यह भी सुझाया गया था। वैद्योंको प्रोत्साहित कर शीघ्रता पूर्वक दान भेजनेकी प्रेरणा की गयी थी।

अप्रेल सन् १९४७ के सुधानिधिमें फिर एक लेख निकला। जिसमें अपील छपने और भारतके पांच सौ वैद्योंके पास उसके भेजने तथा वैद्यक पत्रोंमें उसके जिक्रका उल्लेख था। संयुक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनमें इस प्रस्तावकी प्रशंसा की गयी थी कि उसने पुरस्कार देने योग्य रकम संयुक्त प्रान्तमें ही एकत्र करनेका निश्चय किया है। कानपुर सरसौलके आयुर्वेद महासम्मेलन द्वारा योजनाकी स्वीकृतिका जिक्र कर वैद्य समाज द्वारा अभीतक उत्साह प्रकट न होनेपर आश्चर्य प्रकट किया गया था। फटकार बताते हुए वैद्योंको चितावनी दी गयी थी कि "गुड़ खाये बनी कान छिदाये बनी" वैद्योंको यह रकम चाहे जैसे हों, देनी पड़ेगी।

अगस्त और सितम्बरके सुधानिधिमें प्रत्येक पृष्ठके नीचे एक एक पंक्तिमें स्मारककी योजनाकी सिद्धिके लिये उद्बोधक वाक्य छापे गये थे। वे यों थे :—

१ नि० भा० वैद्य सम्मेलनका आरम्भकर शङ्करशास्त्रीने वैद्योंको निद्रासे उठाया और कर्तव्यमें लगाया।

२ आज जो आयुर्वेदकी उन्नति और अभ्युत्थानका बालसूर्य चमक रहा है, उसके आराधक ऋषि शङ्कर शास्त्री पदे ही थे।

३ पं० शङ्कर शास्त्री पदे स्थापित आयुर्वेद विद्यापीठने आयुर्वेद शिक्षा और परीक्षामें क्रान्ति उत्पन्न की।

४ स्वर्गीय पं० शङ्करशास्त्री पदे आयुर्वैदिक नवयुवकोंके पिता और पितामह हैं।

५ आयुर्वेद विद्यापीठने शङ्कर शास्त्रीके स्मारककी जो योजना

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-M

बनायी है, उसमें उदारता पूर्वक दान देनेवाले अपना पवित्र कर्तव्य पालन करेंगे।

६ प्रत्येक प्रान्तके आयुर्वैदिक मन्त्री और नगर सभाओंके कार्यकर्ताओंका कर्तव्य है कि इस कोषकी पूर्तिके लिये संगठित प्रयत्न करें।

७ आज आयुर्वेद विद्यापीठके हजारों स्नातक आयुर्वेदका मुख उज्वल कर रहे हैं। ये सब शङ्कर शास्त्री पदेके उपकृत हैं।

८ स्वर्गीय पं शङ्कर शास्त्री पदे आयुर्वैदिक नवयुवकोंके गुरु, उपदेशक और आचार्य हैं।

९ वीरपूजा प्रत्येक जीवित जातिका प्रधान कर्तव्य है;

१० आ० म० पं० शङ्कर शास्त्री पदेने आयुर्वेदमें उत्थानका उस समय प्रयत्न किया जब चारों ओर निराशाकी घटा छायी थी।

११ आयुर्वैदिक स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम प्राप्त करेंगे।

१२ जब तक देशमें एलोपैथीका बोलबाला है तब तक स्वदेशी विज्ञानकी दृष्टिसे भारत पराधीन ही है।

१३ भारतकी पराधीनताका आरम्भ मुगलकालमें एक डाक्टरके द्वारा हुआ, अब डाक्टरोंका वर्चस्व हटाकर ही स्वाधीनता प्राप्त होगी।

१४ आयुर्वेद हमारा अपना है, हमारी परम्परा और श्रद्धा की भावना उसमें निहित है, अतएव वही राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान है।

१५ आयुर्वेदका महत्व बढ़ानेके प्रयासी और उद्योगी आयुर्वैदिक वीर हैं; इनके आदर्श शङ्करदाजी शास्त्री पदे हैं।

१६ शङ्कर शास्त्रीका स्मारक बनाकर हम वीर पूजा करेंगे और आयुर्वैदिक स्वराज्यका मार्ग प्रशस्त करेंगे।

अगस्त सन् १६४७ के सुधानिधिमें स्मारक सम्बन्धी संयुक्त

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

प्रान्तीय प्रयत्नोंका उल्लेख है। आरम्भमें शुक्ल जीको लिखे अमृतसरके एक मित्रके पत्रका उल्लेख करते हुए उनका मत उद्धृत किया गया है "वैद्य समुदायकी निर्बलता और उदासीनताका आप अनुभव करते हैं। आप अपने ऊपर इस स्मारकका बोझ लेना चाहते हैं। लीजिये, मैं इसमें यथा शक्य दूंगा। किन्तु वैद्य संसारकी दानवृत्ति पर एक बार दृष्टिपात करके। आपको २५ हजार रुपये वैद्य संसार से २५ वर्ष प्रयत्न करने पर एकत्र हो जायँ तब भी गनीमत है। कृपया बतलाइये इस समय तक इस स्मारकमें कितनी निधि प्राप्त हो चुकी है। १५ अगस्तके बादकी स्थितिको देखकर यदि वैद्य संसार समयके अनुकूल न बना तो आप स्मारक बनाते फिरते हैं, फिर अपने अस्तित्वको बचानेकी चिन्तामें देखे जायँगे, ऐसा मुझे अनुभव हो रहा है।" इस युद्ध रणको वैद्य संसारके लिये एक चुनौती और खतरेकी घण्टी कह कर वैद्योंको कर्तव्य परायण और उदार बननेका आग्रह किया गया था। कहा गया था "सचमुच स्वतन्त्र भारतके वैद्य यदि १५ अगस्तके बाद भी इसी गतिमें रहे तो उनकी दशा पर रोने क्या थूँकने वाला भी नहीं मिलेगा। अपने विज्ञानके सम्बन्धमें ऐसी लापरवाही, अपने उद्धारक और उपकारक के प्रति ऐसी उदासीनता क्या किसी जीवित समाजके लिये उचित है? जैसे आप अपनी दुनियामें ऐसे व्यस्त हैं कि अपील पढ़ने और रुपया भेजनेकी भी फुरसत नहीं उसी प्रकार आप मुझे भी अपने कार्योंमें व्यस्त रहने वाला क्यों नहीं समझते? स्मारककी चिन्तामें ही आप मुझे कब तक डाले रखना चाहते हैं? क्यों नहीं जो कुछ देना हो उसे भेजकर आप अपनेको और मुझे भी निश्चिन्त कर देते? इसके बाद संयुक्त प्रान्तके वैद्योंसे अपील की गयी है। प्रसन्नता की बात है कि संयुक्त प्रान्तीय वैद्योंने अपने कर्तव्यका अधिकांश पूरा किया और शेष भाग भी पूरा हो ही जायगा।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

मिर्जापुर जिलेके वैद्य सम्मेलनने प्रथम ही उत्साह प्रकट कर उदारता दिखलायी, इसपर सितम्बर १६४७ के अंकमें लिखा गया कि "मिर्जापुरने बाजी मार ली !" मिर्जापुरके वैद्योंको धन्यवाद दिया गया। इसके प्रधान उद्योगी पं० चन्द्रदत्त त्रिपाठीजीको भी धन्यवाद दिया गया। अक्टूबर १६४७ के अङ्कमें लिखा गया है कि संयुक्त प्रान्तके जिलोंमें कार्यारम्भ हो गया है। हरदोई जिलेके सम्मेलनने कुछ ऐसे नाम निश्चित कर दिये हैं जिन्हें कहीं डेपुटेशन ले जाते समय साथ लिया जा सकता है। साथही कहा गया था कि वैद्योंका डेपुटेशन ले जाना बहुत कठिन काम होगा। वैद्योंको अवकाश नहीं रहता और कई आदमियोंके डेपुटेशनमें जो खर्च बैठेगा, उससे प्राप्त धनमें कमी हो जावेगी, इसलिये उचित यही है कि वैद्य लोग अपने अपने स्थानमें धन एकत्र कर चन्दा भेज दें। इलाहाबाद के वैद्योंके उत्साह की सराहना करते हुए अपना हिस्सा पूरा कर देने पर बधाई दी गयी थी। शुक्लजीने पं० बेणीमाधव द्विवेदी को इस कार्यमें उद्योग करनेके लिये धन्यवाद दिया है।

नवम्बर सन् १६४७ के सुधानिधिमें "प्रान्तीय मन्त्रियों और वैद्योंसे निवेदन" शीर्षक अपील प्रकाशित हुई है और प्रत्येक पृष्ठके नीचे एक एक दो दो पंक्तिसे उत्साह वर्धक वाक्य छापे गये हैं—

१ आयुर्वेद विद्यापीठने शङ्कर शास्त्रीके स्मारककी जो योजना बनायी है, उसमे उदारता पूर्वक दान देने वाले अपना पवित्र कर्तव्य पालन करेंगे।

२ प्रत्येक प्रान्तके आयुर्वेदिक मन्त्री और नगर सभाओंके कार्यकर्ताओं का कर्तव्य है कि इस कोषकी पूर्तिके लिये संगठित प्रयत्न करें।

३ शङ्कर शास्त्रीकी स्मारक योजनासे आयुर्वेदिक ग्रन्थ कारोंको उत्साह और स्फूर्ति मिलेगी।

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४ शङ्कर शास्त्री स्मारक योजनासे नूतन आवश्यक और पाठ्य-क्रमोपयुक्त ग्रन्थोंका निर्माण और साहित्यकी वृद्धि होगी।

५ शङ्करशास्त्री पदे स्मारकमें दान देना व्यर्थ है, ऐसे **मुर्दा** विचारों को **आबाद** करने वाला संवाचार भी ढपोलसंख और चोंघा वसन्त है।

६ बहती गङ्गामें हाथ धो लीजिये, शङ्करशास्त्री पदे स्मारकमें दानकर आयुर्वेदकी उन्नति और वीर पूजाका सुयश लीजिये।

७ शङ्कर शास्त्री पदे स्मारक प्रस्तावको अखिल भारतीय वैद्योंके प्रतिनिध रूप आयुर्वेद विद्यापीठ और आयुर्वेद महा सम्मेलनने स्वीकार किया है, उसके विरुद्ध आचरण करने वाला वैद्य मस्तिष्क हीन, उन्मत्त या कर्तव्य भ्रष्ट विद्रोही है।

८ शङ्करशास्त्री पदे स्मारक कोषमें यथाशक्ति दानकर सम्मेलन के निश्चयके अनुसार साहित्य निर्माणमें सहायक बनिये।

९ आयुर्वेदोपजीवी और वैद्य चिकित्सक होकर भी शङ्करशास्त्री पदेके स्मारकमें सहायता करनेसे जो जी चुराते हैं, वे कर्तव्य भ्रष्ट और पापी हैं।

१० शङ्करशास्त्रीके स्मारकमें दान न देने की बात जिनके मुंहसे निकल सकती है, उन्होंने क्या यश और कर्तव्य बुद्धिके साथ **कटनी** करा ली है?

११ जो वैद्य यों बड़ी बड़ी बातें मारते हैं और स्मारक समिति जैसे कामके समय पूछ दबाते हैं उन्हें न **भगवान** का **प्रसाद** मिल सकता, न सफलता और यश।

१२ सम्मेलन कुछ नही करता अतः शङ्करशास्त्री पदेके स्मारकमें सहायता न करनेके नीच विचारमें जो "आ गिरा" उसका उचित स्थान आगरेके पा०० खाने में है।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection.

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इस अंकमें इलाहाबाद, मिर्जापुर, हरदोई, आगरा, नैनीताल, झांसी, मुरादाबाद, औरैया, वांदा, गढ़वाल आदि जिलोंके उद्योगकी सराहना कर अन्यत्रके वैद्योंको उत्साह प्रकट करनेके लिये कहा गया है।

दिसम्बर १९४७ के अंकमें सन् १९४७ में सालभर जो काम हुआ उस पर दृष्टिपात किया गया है। वैद्योंसे उत्साह पूर्वक उत्तर न मिलने पर असन्तोष प्रकट किया गया है। जिन जिलोंमें उत्साह शीलता दिखी है उनके आदर्शपर अन्यत्रके वैद्योंको भी उत्साह प्रकट करनेके लिये कहा गया है। यह भी कहा गया है कि हो सकता है कि देशके धनियोंसे प्रार्थना करने पर अभीष्ट रकम मिल जाती; किन्तु उससे वैद्योंके कर्तव्य और निष्ठाका पता कैसे लगता ? अतएव यह कार्य विशेष कर वैद्योंका ही कहना चाहिये। वित्तशाठ्य और कंजूसी छोड़कर उदार बननेके लिये अनुरोध किया गया है।

सन् १९४८ के जनवरी के प्रथम अङ्कमें "विहार प्रान्तमें प्रयत्न" शीर्षक देकर विहार प्रान्तकी विशेषता और प्रभावका वर्णन कर बिहारके कर्तव्य दक्ष और क्रियाशील वैद्योंको प्रोत्साहित किया गया है। बिहारके वैद्योंसे अपील की गयी है कि वे धनियोंसे न लेकर स्वयं पांच हजार रुपये इस कार्यके लिये एकत्र करें। अपनी आत्मप्रतिष्ठा का अनुभव करते हुए विहारके वैद्य ऐसा संगठन करें कि स्मारक द्वारा प्रकाशित पुस्तकोंके द्वारा उनके पुरुषार्थ और उद्योग की घोषणा हो।

सन् १९४८ के १६ मईके अंकमें विहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनकी स्थायी समिति द्वारा स्मारक योजनाकी स्वीकृतिका उल्लेख है। ३ मार्च १९४८ के अंकमें रायबरैली सम्मेलनकी सहायताका वर्णन है। इसी मार्चकी संख्यामें स्वर्गीय पण्डित नारायण प्रसाद द्विवेदीका एक लेख छपा था। जिसमें स्मारक कार्यके उद्योग पर सन्तोष प्रकट

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection.

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

किया गया था। इसमें प्रस्ताव किया गया था कि सम्मेलनके परीक्षार्थियोंसे एक निश्चित रकम लेकर इस कोषकी पूर्ति की जाय। इस विचारके अनुसार विद्यापीठसे प्रार्थना की गयी थी कि प्रति परीक्षार्थी चार आना शुल्कके साथ स्मारकके लिये लिया जावे किन्तु विद्यापीठ की स्थायी समितिने इसे उचित नहीं समझा।

सुधानिधिके सन् १९४८के चतुर्थ अंकमें औरैया जिला इटावा के पण्डित कृष्णकुमार बाजपेयी वैद्य का एक लेख प्रकाशित हुआ है। जिसमें वैद्योंसे स्वार्थ और कृपणता छोड़कर स्मारककोषमें दान देनेका अनुरोध किया गया है। यह भी कहा गया है कि अन्य प्रान्तके वैद्योंकी परवाह न कर संयुक्त प्रान्तीय वैद्य ही इसकी पूर्ति करें। सुधानिधिके वर्ष २९ की संख्या ६ में स्मारक सहायताकी मन्दगति पर खेद प्रकट करते हुए कहा गया है कि "किसी भी प्रान्तके लिये यह लज्जाजनक होगा कि अपने स्वर्गीय कार्यकर्ता और आयुर्वेदोद्धारक के लिये अपने अपने प्रान्तमें वैद्य शक्तिभर प्रयत्न न कर पावें। विहारकी ढिलाईपर भी खेद प्रकट किया गया है। फतेहपुर, मिर्जापुर, हरदोई, इटावा, नैनीताल, गढ़वाल, जौनपुर, गोरखपुर, देवरिया नागरा, सहारनपुर, देहरादून, मुरादाबाद, रायबरैली, लखीमपुर, और बांदाके उद्योगी वैद्योंको धन्यवाद दिया गया है। इसी वर्षके जुलाईके अंकमें विहारी वैद्योंसे प्रति जिलेके हिसाबमें कितनी सहायता मिलनी चाहिये इसका विवरण दिया गया है।

सन् १९४८ के अगस्तके अंकमें कहा गया है कि २५ हजार रुपया स्मारकके लिये एकत्र होना एक महीनेका काम था। प्रत्येक वैद्यको सन्देश पहुँचते ही स्वयं प्रेरणासे अपनी सहायता भेज देनी चाहिये थी। जुलाई सन् १९४८ के अन्ततक कुल ७८४७-) एकत्र हुआ है, जिसमें संयुक्त प्रान्तका ६४५७।) है। १६ अगस्तके अङ्क में स्मारक समितिकी बैठकका वर्णन है। १६ अक्टूबरके अंकमें कहा

४

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

tization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-I

गया है कि अब तक ६१३५६) आये हैं। इनमें ६६१५।।।) संयुक्त प्रान्तके हैं। इसी अंकमें सौ रुपयेसे अधिक देनेवालोंके नामोंकी घोषणा स्मारक समितिके सदस्य रूपमें की गयी है।

सन १९४६ के अपने ४० वें वर्ष के सुनिनिधिने इस आन्दोलनको जारी रखा। काशिराज वैद्यसम्मेलन, इलाहाबाद जिला सम्मेलन, विहार मुजफ्फरपुरके सम्मेलन, आजमगढ़ और कानपुर के सम्मेलनमें जो स्मारक सम्बन्धी चर्चा हुई, उसका उल्लेख है। अलीगढ़ जिला सम्मेलनमें भी सहायता मिलनेका जिक्र है। लखनऊमें कुछ कार्य हुआ और बदायूँमें वैद्यरामचन्द्र जीने उद्योग किया। १६ फरवरी सन १९४६ के सुधानिधिमें इस बातपर प्रसन्नता प्रकट की गयी है कि जनवरी सन १९४६ तक १०४०७) एकत्र होकर आयुर्वेद विद्यापीठ के पास पहुँच चुके हैं, जिसमें साढ़े आठ हजार रुपये संयुक्त प्रान्तके हैं। गाजीपुर जिलेमें उद्योग करनेके लिये कविराज प्रकाशचन्द्रजी और पं० लालजी शास्त्री चतुर्वेदीको धन्यवाद दिया गया है। मध्यप्रदेशके पं० गोवर्धन शर्मा छांगाणी और पण्डित भिकाजी विनायक डेखेकरने जो कार्यारम्भ किया है उसकी सराहना की गयी है। काशीके वैद्य भाइयोंके उत्साह और बम्बईकी सहायताका उल्लेख है।

१ अप्रैल १९४६ के अंकमें बड़ौदा सम्मेलनके पहले उ… क्या होना चाहिये इसपर लेख है, जिसमें कहा गया है कि ह… ४५ वर्षोंमें साहित्य निर्माणका उल्लेखनीय कोई प्रयत्न नहीं किया… श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारकके रुपयोंकी हमने जो योजना बना… है, उसके द्वारा ग्रन्थकर्ताओंको उत्साहित करने, प्राचीन और अमु… साहित्यको ढूंढकर प्रकाशित करने और समयकी मांगके अनु… आवश्यक ग्रन्थ निर्माणकी योजना है। उसे सफलकर हम इस का… सिद्ध कर सकते हैं। किन्तु इस सम्बन्धमें संयुक्तप्रान्तको छोड़…

-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collec

gitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

प्रान्तोंने सक्रिय सहयोग देनेका उतना आग्रह नहीं प्रकट किया। प्रान्तीय संगठन कर इसके लिये सहायता एकत्र नहीं की। इस सम्मेलनके अवसरपर इसे सिद्ध करनेकी प्रवृत्ति प्रकट करनी चाहिये और इस सालके भीतर ही इसे पूर्ण कर लेना चाहिये।

वर्ष ४० के ग्यारहवें अंकमें स्मारक समितिपर एक लेख लिखते हुए कहा गया है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलनके द्वारा जबसे मंगलाप्रसाद पारितोषिक आरम्भ हुआ है तबसे विविध विषयोंकी पुस्तकें लिखनेके लिये ग्रन्थकारोंमें बहुत उत्साहकी वृद्धि हुई है। पुरस्कारके मिस बहुत अच्छे ग्रन्थोंका निर्माण हो जाया करता है। आयुर्वेदमें अभी लेखकोंमें प्रतियोगिता और अच्छे ग्रन्थ निर्माणकी भावनाकी हिलोरें नहीं उठी हैं; किन्तु इस स्मारकके द्वारा पुरस्कार देनेकी प्रथा आरम्भ होनेसे लेखकोंमें कर्तव्य प्रेरणाके अतिरिक्त उच्च साहित्य निर्माणके लिये एक प्रकारकी प्रतियोगिताका उदय होना सम्भव है।

सन् १९५० के सुधानिधि जनवरीके अंकसे मालूम पड़ता है कि कानपुर जिलेके तृतीय वैद्य सम्मेलनमें इस स्मारकके लिये एक समिति बनायी गयी थी; परन्तु उसने क्या काम किया इसका पता नहीं चला। १६ जनवरीके अंकसे मालूम पडता है कि हैदराबादके आयुर्वेद सम्मेलनने श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्लको प॰ गयाप्रसाद शास्त्री, पं० राधाकृष्ण द्विवेदी शास्त्री और पं० गोवर्धनशर्माजीके उद्योगसे १८१) प्राप्त हुए। फरवरीके अङ्कसे विदित होता है कि शुक्लजीको वहां एक मित्रके द्वारा जो भेंटमें १०१) मिले थे उन्हें भी शुक्लजीने स्मारकमें दे दिये। १६ अगस्तके पत्रसे विदित होता है कि इटावा वैद्य सम्मेलनमें शुक्लजीको ६६) मिले।

सन १९५१ के सुधानिधिमें केवल एक अंकमें चर्चा है। फरवरीके अंकसे मालूम पड़ता है कि फरुखाबाद सम्मेलनमें शुक्लजीको

C-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अपील करनेपर कुल १८) मिले । जिससे अनुत्साहित और निराश होकर इसकार्यके लिये बाहर जाना बन्द सा कर दिया गया ।

निखिलभारतीय प्रोत्साहन

इस विषयका उल्लेख हो चुका है कि आयुर्वेदविद्यापीठ द्वारा योजनाकी स्वीकृति होनेपर नवम्बर सन १९४६ से कार्यारम्भ हुआ और सन १९४७ के आरम्भसे सहायता एकत्र करनेका कार्य चल पड़ा । १२, १३, फरवरीको कानपुरके पास फुफवारमें नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलनका अधिवेशन हुआ । उसमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ—

“नि० भा० आयुर्वेदविद्यापीठने सम्मेलनके जन्मदाता स्वर्गीय स्पण्डित शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मारकके लिये जो योजना स्वीकृत की है उसे यह सम्मेलन पसन्द करता है और आयुर्वेद महा-के सब प्रकारके सभासदों, प्रान्तीयमन्त्रियों और आयुर्वेदप्रेमी सज्जनोंसे अनुरोध करता है कि इस योजनाकी सिद्धिके लिये प्रयत्न-शील हों और उदारता पूर्वक सहायता करें । सम्मेलन उचित समझता है कि प्रत्येक प्रान्तमें इस कार्यके लिये स्मारक समितिके सहयोगसे उपसमितियां बनाकर संगठित रूपसे कार्य किया जाय । संयुक्त प्रान्तमें ऐसी समिति बनाकर अपने हिस्से से भी अधिक सहा-यताकी रकम एकत्र करनेका आयोजन किया गया है, सम्मेलन इस उत्साहकी सराहना करता है ।”

आयुर्वेदमहासम्मेलन पत्रिकाके वर्ष ३४ अंक ८ अगस्तके अंकमें नि० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलनके प्रधानमन्त्री पण्डित गणेशदत्त सारस्वत बी० ए० का आदेश नीचे लिखे अनुसार छपा है—

“महासम्मेलनके सदस्य महानुभावोंसे प्रार्थना है कि श्री शङ्कर-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

दाजी शास्त्री पदे स्मारक कोषकी पूर्तिमें अब अधिक विलम्ब नहीं होना चाहिये। वैद्योंको आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये अब तो प्रतिवर्ष लाखों रुपये एकत्र करने होंगे। इस बीस पचीस हजार रुपयेके छोटेसे कोषको यदि वैद्य समाज चाहे तो एक सप्ताहमें पूरा कर सकता है। इस छोटीसी धनराशिका संग्रह आयुर्वेदके प्रति वैद्योंकी कर्मशील अवस्थाकी कसौटीमात्र है। मैं पूर्ण आशा करता हूं कि वैद्यसमाज अब अपने उत्साहका परिचय शीघ्र ही देगा। और स्मारक समितिके अध्यक्ष श्रद्धेय श्री जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल ३ सम्मेलनमार्ग इलाहाबादके पास प्रत्येक प्रान्तसे धनराशि पहुँचनी आरम्भ हो जायगी।"

६ फरवरी १९४७ को आयुर्वेदराष्ट्रपति कविराज मणीन्द्रकुमार मुखरजीने निम्नलिखित वक्तव्य भेजा। वे इसे कानपुर पुष्पवारके सम्मेलन में देना चाहते थे किन्तु वहां वे नहीं पधार सके।—

"गत चालीस वर्षोंसे हमारी सम्मेलन संस्था वर्तमान है। है पिछले रिकार्ड पर दृष्टि देनेका समय आ पहुँचा है। अनेक महानुभावोंने जिनकी अब पुण्यस्मृति ही शेष है—अपनी अमूल्य सेवाओंसे संस्थाको उपकृत किया है, वे अपने महान त्यागके कारण अमर हैं। किन्तु उनमेंसे कमसे कम एकके प्रति जो आयुर्वेद महासम्मेलनके जन्मदाता थे—हम अपना किंचित कर्तव्यपालन कर सकते हैं। महासम्मेलनके लिये उन महापुरुष श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदेका नाम एक परिचित घरेलू शब्द होना चाहिये। कोई राष्ट्र अथवा जाति अपनी सत्ताको न्याययुक्त अथवा गौरवान्वित नहीं कह सकती, यदि उसकी प्रतिष्ठा नहीं है; और उसकी श्रेष्ठताके लिए उसका नाम अमर नहीं है। जिस आयुर्वेदमहासम्मेलनका उद्देश्य विज्ञान तथा संस्कृतिका पुनरुद्धार मानवजातिके कल्याणके लिये तथा अभिवृद्धिके लिये है, उसके जन्मदाता महापुरुषकी पावन स्मृतिमें इसके अतिरिक्त अन्य क्या विशिष्ट स्मारक हो सकता है

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कि उनके नामपर एक स्थायीकोष स्थापितकिया जाय, जिसके द्वारा सांस्कृतिक अभ्युन्नति सम्पन्न हो सके।

विद्वद्वरेण्य श्रद्धेय शुक्ल जीको यह उत्तरदायित्व वहन करनेके लिये मणिपालमें हुए शिक्षा सम्मेलनके गत अधिवेशनमें नियुक्त किया गया था। महासम्मेलनके एक सच्चे सेवकके नातेसे शुक्ल जीने इस उत्तरदायित्वका स्वागत करते हुए सहर्ष स्वीकार किया। हमारे इस महान नेताने यथा सम्भव कार्यको आरम्भ कर दिया है। मैं यह मानता हूं कि उनको आवश्यक सहूलियतें नहीं मिलीं। हमें उत्साही कार्यकर्ताओंका साहस बनाये रखना है। इस विशिष्ट अवसरपर उपस्थित समस्त महानुभावों तथा अधिकांशमें अनुपस्थित सभी महोदयोंसे मेरा निवेदन है कि हमें उस महान कार्यकी सिद्धिके लिये जिसके लिये कोष अपेक्षित है पूर्ण रूपसे सहायता करनी चाहिये। मैं आपका निर्धन प्रधान जिसको आपने बड़े स्नेहसे इस आसनपर आसीन करनेके लिये वरण किया है- तथा जिसने कभी लक्ष्मीकी उपासना नहीं की है- आयुर्वेदमहासम्मेलनके जन्मदाता उस स्वर्गीय महापुरुषकी पुण्यस्मृतिमें अपनी व्यक्तिगत भेंट समर्पित करता हूं। यह सहायता एक नम्र चिन्हमात्र है। जिसका कुछ उदाहरणात्मक कार्य हो सकता है।"

इसके पश्चात सम्मेलनके सभापति डाक्टर लक्ष्मीपति महोदय हुए। अतएव आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिकामें "प्रान्तीय मन्त्रियों और वैद्योंसे निवेदन" शीर्षक एक आदेश पत्र निकला जिसमें सम्मेलनाध्यक्ष, विद्यापीठके सभापति, महासम्मेलनके प्रधानमन्त्री और विद्यापीठके मन्त्री महोदयके हस्ताक्षर थे। इसकी प्रतिलिपि सुधानिधिके नवम्बर सन १९४७ के अङ्कमें भी छपी थी—

———

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्रान्तीय मन्त्रियों और वैद्योंसे निवेदन

आज हम इस स्थितिमें हैं कि हम आयुर्वेदिक स्वराज्यका दावा उपस्थित करें। इस स्थितिको लानेके लिये जिन्होंने आरम्भमें स्वार्थत्याग और आत्मोत्सर्गकर आयुर्वेदकी उन्नतिका बीड़ा उठाया और संगठन पूर्वक आयुर्वेदमहासम्मेलन स्थापितकर अखिलभारतीय महान उद्योग आरम्भ किया; उस अमर कीर्ति महापुरुष स्वर्गीय आयुर्वेदमहोपाध्याय पं० शंकरदाजी शास्त्री पदेको हम किसी प्रकार भूल नहीं सकते। उनका पुण्यस्मारक यद्यपि यह आयुर्वेदमहासम्मेलन और आयुर्वेद विद्यापीठ है; तथापि उनका आदर्श बारम्बार जनताके सामने आवे उनकी कृतिके अनुरूप उनके स्मारकसे आयुर्वेदका गौरव बढ़े एवं साहित्य विस्तारका कार्य होता रहे यह सर्वथा अभीष्ट है।

श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्लकी प्रेरणासे आयुर्वेदविद्यापीठने एक योजना तैयार की और उसे निखिलभारतीय आयुर्वेदमहासम्मेलनने स्वीकार किया है। यही नहीं; कई प्रान्तीय सम्मेलनोंने भी उसका स्वागत किया है। प्रसन्नताकी बात है कि श्री शुक्लजीने उसका दायित्व अपने ऊपर ले लिया है और उसके लिये प्रयत्नशील हैं। उनकी सहायताके लिये आयुर्वेद विद्यापीठने एक समिति भी बना दी है। अब हमारा यह पवित्र कर्तव्य है कि उन्हें उस कार्यमें पूर्ण सहयोग और सहायता प्रदानकर योजनाको सफल बनावें। इस योजनाके अनुसार प्रतितीसरे वर्ष सर्वोत्तम आयुर्वेदिक ग्रन्थकारको ५००) का पुरस्कार दिया जाया करेगा और प्राचीन पुस्तकोंकी खोज एवं नवीन ग्रन्थोंका निर्माण तथा पाठ्यक्रमोपयोगी पुस्तकोंके प्रणयन और प्रकाशनकी व्यवस्था होगी। आशा है ऐसे उपयोगी कार्यका सभी स्वागत करेंगे।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सम्पूर्ण प्रान्तीय मन्त्रियों, आयुर्वैदिक संस्थाओं और आयुर्वैदिक विद्यालयोंके सञ्चालकों तथा प्रमुख प्रान्तीय कार्यकर्ताओंसे हमारा साग्रह अनुरोध है कि वे अपने प्रान्तमें इस स्मारककी सफलता के लिये सहायक समिति स्थापित करें और अपने प्रान्तके सभी जिलोंमें भी उपसमिति स्थापित कर आवश्यक रकमके संग्रहके लिये प्रान्त व्यापी उद्योग आरम्भ करें। सभी वैद्यों और आयुर्वेदप्रेमी सज्जनों एवं धनियोंसे हमारा अनुरोध है कि ऐसे उत्तम और पवित्र कार्यके लिये वे उदारता पूर्वक अपनी शक्ति और प्रतिष्ठाके अनुरूप सहायता देनेमें शीघ्रता करें। इस कार्यके लिये समस्त देशमें बीस पचीस हजार रुपयोंके एकत्र होनेमें विलम्ब नहीं लगना चाहिये। प्रत्येक जिलेके वैद्य धन संग्रहकर प्रान्तीय मन्त्रियोंके द्वारा या स्वतन्त्ररूपसे सहायता भेजकर पवित्र कर्तव्यका पालन करें। सहायताकी रकम कविराज उपेन्द्रदास मन्त्री आयुर्वेदविद्यापीठ पहाड़ी धीरज दिल्ली या श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल संयोजक कार्यालय प्रयागके पास भेजनी चाहिये। जिसकी उन्हें रसीद मिलेगी। और उनकी सहायता उनके प्रान्तीय हिस्सेमें समझी जायगी। आशा है बातकी बातमें आवश्यक धन एकत्र होकर योजनानुसार शीघ्र कार्यारम्भ हो जायगा। (आयुर्वेदमहासम्मेलन पत्रिका)।

ए० लक्ष्मीपति (सभापति आयुर्वेदमहासम्मेलन)
श्री गणेशदत्त सारस्वत (प्रधानमन्त्री आयुर्वेदमहासम्मेलन)
श्री मणीन्द्रकुमार मुखोपाध्याय (सभापति आयुर्वेद विद्यापीठ)
श्री उपेन्द्रनाथदास (मन्त्री आयुर्वेद विद्यापीठ)

इसके पश्चात सम्मेलनपत्रिकाके सन् १९४७ के दिसम्बरमें फिर नोट छपा "निखिलभारतीय आयुर्वेदमहासम्मेलनके संस्थापक स्वर्गीय श्री पण्डित शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मारकके लिये महासम्मेलन एक प्रस्ताव पास कर कर चुका है। उसकी ओर हम आयुर्वेदप्रेमियोंका

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ध्यान निरन्तर आकृष्ट करते हैं। इस प्रस्तावके अनुसार जो कोष एकत्रित किया जायगा, उससे आयुर्वैदिक अन्वेषण और ग्रन्थ प्रकाशन आदिका कार्य होगा। व्यवस्था ऐसी रखी गयी है कि जिस प्रान्तमें जो धन एकत्र हो उसका व्यय उसी प्रान्तमें किया जाय।* संयुक्त प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन इस दिशामें विशेष निष्ठापूर्वक कार्य कर रहा है। उसने इस प्रयोजनके लिये बारह हजार रुपया एकत्र करनेका निश्चय किया है; और इस धनराशिको उसने अपने प्रान्तके विविध ज़िलोमें बांट दिया है। अनेक जिलोंमें विशेषतः इलाहाबाद और हरदोईमें (बांदामें भी) इस धन संग्रहके कार्यमें विशेष सफलता हुई है। अन्यप्रान्तों और रियासतोंको भी चाहिये कि वे यथाशीघ्र इस स्मारक कार्यको पूर्ण करके आयुर्वेदके उद्धारक स्वर्गीय शङ्करदाजी शास्त्री पदेके ऋणसे उऋण हों ही साथ ही आयुर्वैदिक ह्रासके इस युगमें पाश्चात्य चिकित्सा पद्धतिके साथ स्पर्धामें आयुर्वेदको विजेता बनानेमें सहायक बने।

नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलनका छत्तीसवां अधिवेशन बड़ौदे में सन १९४८के अप्रेलमें हुआ। उसके सभापति कविराज हरिरञ्जन मजूमदार एम० ए० भिषगाचार्यने अपने भाषणमें पुस्तकोंके अभावका जिक्र करते हुए कहा—

"बड़ी प्रसन्नताका विषय है कि गतवर्षोंसे महासम्मेलनके कुछ प्रमुख कार्य कर्ताओंका ध्यान इस ओर विशेष रूपसे जा रहा है। महासम्मेलनके भूतपूर्व सभापति आयुर्वेद पञ्चानन श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्लने गत दो वर्षोंसे जो कुछ प्रारम्भिक कार्य किया है वह

---

*उसी प्रान्तमें नहीं बल्कि रकम पांच हजार रुपयेकी होनेसे उसी प्रान्तकी इच्छाके अनुसार उसी प्रान्तके नामपर स्मारकके किसी कार्यका प्रबन्ध हुआ करे। अध्यक्ष।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अति सराहनीय है। आपको विदित ही है कि नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलनके अधीन एक समिति माननीय श्री शुक्ल जीकी अध्यक्षता में कार्यकर रही है। मेरा संकेत **श्री शंकरदाजी शास्त्री पदे स्मारक** कोष समितिकी ओर है। इस योजनासे हमारे दो कर्तव्यों की पूर्ति होती है। इस प्रकार महासम्मेलनके संस्थापक स्वर्गीय पदे शास्त्रीजीकी पुण्यस्मृति चिरस्थाई हो सकेगी और शास्त्रकी ठोस सेवा भी होगी। उक्त स्मारक कोषमें केवल २५ हजार रुपये संग्रह करनेका प्राथमिक निश्चय किया गया था। अभी तो केवल ११ हजार रुपये एकत्र हो सके हैं। श्री शुक्ल जीको यह धनराशि एकत्र करनेमें अथक परिश्रम करना पड़ रहा है। इस सम्बन्धमें युक्तप्रान्तके वैद्योंने प्रशंसनीय उत्साह दिखलाया है। प्रत्येक प्रान्त और राज्यके सभी वैद्य महानुभावों एवं आयुर्वेद प्रेमी सज्जनोंसे मेरा सानुरोध निवेदन है कि विना विलम्ब ही इस वर्ष अधिकसे अधिक धनराशि एकत्र कर दें। मेरी तो यह इच्छा है कि इस कोषके लिये कमसे कम ५० हजार का लक्ष्य रखा जाय तो अधिक अच्छा हो।

बड़ौदा सम्मेलनके आयुर्वेद विद्यापीठ सभापति आयुर्वेदाचार्य पण्डित दुर्गादत्त शास्त्री हुए थे। उन्होंने अपने भाषणमें कहा—

"आयुर्वेद महासम्मेलनके आदि कर्णधार एवं भूतपूर्व कर्मठ सभापति श्रद्धेय पण्डित जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल विद्यापीठ द्वारा आयोजित "श्री शङ्करदाजी पदे स्मारक समिति" के अध्यक्ष और संयोजक हैं। इस समितिका मुख्य उद्देश्य अप्राप्य और दुष्प्राप्य प्राचीन पुस्तकोंका अन्वेषण एवं प्रकाशन तथा आवश्यकतानुकूल आयुर्वेदीय ग्रन्थोंका निर्माण करना कराना है। इस समितिकी स्थापना हुए दो वर्षसे अधिक काल हो गया पर अभी तक इसके पास ११ हजारके लगभग ही रुपये इकट्ठे हुए हैं। जिनमें बड़ा

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अंश युक्त प्रान्तीय वैद्योंकी सहायताका है। वे महानुभाव धन्यवादके पात्र हैं, जिन्होंने विद्यापीठकी उद्देश्य सिद्धिके लिये इस समितिको धनदान दिया है। जिन सज्जनोंका ध्यान किसी भी कारणसे अब तक इस ओर न हो सका हो, उनका कर्तव्य है कि वे अति शीघ्र इस समितिकी मांग पूरी करें, ताकि इसका प्रधान कार्य अवलम्ब आरम्भ हो सके। माननीय श्री शुक्ल जी महाराज वृद्धावस्थामें युवकोंके समान उत्साह रखकर अर्थ संग्रह के लिये निरन्तर दौड़धूप कर रहे हैं। कर्तव्य पूर्तिकी तत्परताके लिये हमें उनके इस आचार शिक्षाका ग्रहण करना चाहिये।"

बड़ौदा सम्मेलनके समय नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलनके प्रधान मन्त्री आयुर्वेदाचार्य पं० गणेशदत्त सारस्वत बी० ए० ने जो रिपोर्ट उपस्थित की थी, उसमें स्मारकके सम्बन्धमें यों उल्लेख था—

"आपको यह भी विदित ही है कि विद्यापीठके अन्तर्गत श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारक कोष समितिका कार्य महासम्मेलनके अन्यतम कर्णधार श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्लकी अध्यक्षतामें हो रहा है। इस अधिवेशनमें इस समितिके उद्देश्योंके पूर्ण करनेका उपक्रम किया जाने वाला है।"

बड़ौदा सम्मेलनने स्मारककोषके सम्बन्धमें अपने २१ वें प्रस्तावमें विचार भी प्रकट किये हैं। **प्रस्ताव** नीचे लिखे अनुसार है—

"निखिल भारत वर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ और निखिल भारत वर्षीय आयुर्वेद महासम्मेलनके आदि जन्मदाता स्वर्गीय आयुर्वेद-महोपाध्याय श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारकके लिये एक योजना स्वीकार कर सम्पूर्ण कार्यकर्ताओं और वैद्योंको उसकी सफलताके लिये संगठित रूपसे कार्य करनेके लिये विद्यापीठने अनुरोध किया था। सम्मेलनको यह जानकर खेद हुआ है कि संयुक्तप्रान्तको छोड़कर

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अन्य प्रान्तोंने इस योजना पर उचित गम्भीरता और उदारताका परिचय अभी तक नहीं दिया है। यह सम्मेलन संयुक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनके इस निश्चयकी सराहना करता है कि उसने पुरस्कार सम्बन्धी १२ हजार रुपयेकी रकम पूर्ण करनेकी प्रतिज्ञा की है और अब तक लगभग ६ हजार रुपये उसने एकत्र भी कर लिये हैं। सम्मेलन इस कार्यके लिये संयुक्तप्रान्तको बधाई देते हुए अन्य समस्त प्रान्तीय वैद्योंसे अनुरोध करता है कि कोषकी पूर्ति शीघ्र करनेके लिये आवश्यक संगठन और उद्योग करने की कृपा करें।"

समितिका कार्य

३० अक्टूबर सन् १९४६ को आयुर्वेद विद्यापीठकी समितिने स्मारक सम्बन्धी योजना स्वीकार की। उसी समयसे समितिका कार्य आरम्भ कर दिया गया। अपील छपवायी गयी और भारत भरके प्रसिद्ध वैद्योंके पास भेजी गयी। नवम्बर और दिसम्बर महीनेके पत्र व्यवहारके फलस्वरूप जनवरी १९४७ ईस्वीसे सहायताका आना आरम्भ हुआ। किन्तु गति धीमी रही। अतएव मैंने जहां अवसर मिला वहां अपने कामसे या प्रान्तीय तथा जिलोंके सम्मेलनमें जाना आरम्भ किया। इस बातका ध्यान रखा गया कि यथा सम्भव यात्रा का व्यय समितिके जिम्मे न पड़ने पावे। आफिस खर्चके लिये भी कृपा कर आयुर्वेद विद्यापीठने जो सहायतार्थ भेजा उसीसे कार्यनिर्वाह किया गया। योजनाकी नियमावली छपायी गयी। संयुक्त प्रान्त और विहारके वैद्योंके लिये अलग अलग भी अपील छपाकर भेजी गयी।

योजनाकी जो **नियमावली** संवत २००५ वैक्रमीय अर्थात अप्रैल १९४८ में छपी और जिसकी स्वीकृति विद्यापीठसे हुई, उसमें

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

स्मारक समितिको २१ हजारके बदले २५ हजार रुपये एकत्र करने का आदेश दिया गया। इसका **उद्देश्य** आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शङ्करदाजी शास्त्री पदेका स्मारक सुरक्षित रखना और **कर्तव्य** प्राचीन पुस्तकोंकी खोज और प्रकाशन, नवीन पुस्तकोंका निर्माण और प्रकाशन, जीवित लेखकोंको पुरस्कार और पदक द्वारा प्रोत्साहन आदि रखा गया। प्रकाशन द्वारा प्राप्त आमदनीसे स्मारक समिति का कोष बढ़ता रहेगा और समितिके उद्देश्य और कर्तव्योंमें खर्च होता रहेगा। समितिका **संगठन** तीन वर्षोंके लिये आयुर्वेद विद्या-पीठ द्वारा हुआ करेगा इसमें निर्वाचित सदस्योंकी संख्या १७ से २१ तक होगी। जिनमें एक प्रतिनिधि आयुर्वेद महासम्मेलनका और १ आयुर्वेद विद्यापीठका रहेगा। जिन प्रान्तोंमें पांच हजार या इससे अधिक की संख्या रहेगी, उन प्रान्तोंके तीन तीन प्रतिनिधि लिये जायँगे। इसी तरह एक एक हजार रुपया देने वाले प्रान्तोंके एक एक प्रतिनिधि रहेंगे। एक हजारसे कम देने वाले सभी प्रान्तोंको मिलाकर एक प्रतिनिधि लिया जायगा। सभापति विद्यापीठके उन उन वर्षों के सभापति होंगे। कार्याध्यक्ष और मन्त्रीका चुनाव समिति अपने मेंसे करेगी। समितिके किसी कार्यकी पूर्तिके लिये यदि कोई प्रान्त या व्यक्ति रकम पूरी कर दे तो उस कार्यके साथ उस प्रान्त या व्यक्तिका नाम भी संलग्न रहेगा। एक हजार रुपया देने वाले सज्जन प्रतिष्ठायक, ५००) या अधिक देने वाले संरक्षक तथा १००) या अधिक देने वाले सज्जन स्थायी सदस्य होंगे। **पुरस्कारके** निर्णयके लिये निर्णायक समिति चुनेगी। पुरस्कार यद्यपि साधारणतः ५००) रु० का प्रति तीसरे वर्ष दिया जाया करेगा तथापि समितिके पास इस कार्यके लिये द्रव्य रहने पर इसके पहले भी पुरस्कार देने की व्यवस्था हो सकेगी। पुरस्कारके अति-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

रिक या पुरस्कारके बदले उत्तम ग्रन्थ लेखकोंको स्वर्ण पदक भी दे सकेगी। प्रकाशन के लिये आवश्यक होने पर स्मारक समितिके अधीन एक प्रकाशन उससमिति या प्रेस भी हो सकेगा। समितिके सदस्योंको समिति द्वारा प्रकाशित उस वर्षकी पुस्तकोंकी एक एक प्रति प्राप्त होगी। समितिमें दान देने वाले सज्जनोंमें जिन्होंने कमसे कम २५०) दिया होगा उन्हें प्रकाशनकी उस वर्ष एक प्रति मुफ्त मिलेगी। सौसे अधिक सहायता करने वाले सज्जनोंको ६) मूल्य तक की पुस्तकें मुफ्त मिलेंगी। अधिक मूल्यकी पुस्तक होने पर आधे मूल्य पर मिलेंगी। ५०) या इससे अधिक देने वालोंको ३) मूल्य तककी पुस्तकें मिलेंगी शेष आधे मूल्य पर मिलेंगी। २५) या अधिक देने वालोंको २) दो रुपये मूल्य तककी पुस्तक विना मूल्य मिलेगी, शेष आधे दाम पर। ग्यारह रुपये या अधिक देने वालोंको उस वर्षकी प्रकाशित पुस्तकें आधे मूल्य पर और ५) देने वालोंको चौथाई कमीशन काटकर पुस्तकें मिलेंगी।

इस प्रकार योजना ऐसी बनायी गयी है कि इसके द्वारा अधिक से अधिक आयुर्वेदिक जनता दानकर महपुण्य प्राप्त करनेके साथ ही ज्ञान प्राप्तिका लाभ भी उठा सके। इस स्मारककी यह विशेषता रखी गयी है कि इसके लिये किसी स्थान विशेष नहीं बल्कि भारत-व्यापी सुविधा रहे। उसके द्वारा ज्ञान प्राप्तिका साधन सबके लिये समान रूपसे रहे। सन् १९४७ के नवम्बर मासमें समितिका प्रथम अधिवेशन प्रयागमें हुआ। जिसमें एक सालकी आमदनी पर विचार हुआ। एक सालमें कुल सत्रह सौ रुपयेकी आमदनी निराशा जनक समझी गयी और सोचा गया कि यदि पुरस्कार की योजना कार्यमें लायी जा सके तो सम्भवतः आयुर्वेदिक संसारमें एक

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आशाकी लहर लहराने लगे और लोग सहायता देनेके लिये उत्साहित हों। निश्चय हुआ कि आयुर्वेद विद्यापीठसे प्रार्थना की जाय कि वह प्रथम पुरस्कारके लिये स्वयं प्रयत्न करे और दिल्लीके वैद्योंसे अनुरोध किया जाय कि वे स्वयं उत्साहित होकर एक ऐसा आदर्श उपस्थित करें ताकि अन्य प्रान्त वालोंको प्रोत्साहन मिले। फल स्वरूप पं० ओंकार प्रसाद जीके प्रोत्साहनसे दिल्लीके वैद्योंने प्रथम पुरस्कारके लिये ५००) रुपये की रकम देनी स्वीकार की।

इस समितिका **दूसरा अधिवेशन** २६ सितम्बर १९४८ को जौनपुरमें हुआ। उस समय जौनपुरमें जिला वैद्य सम्मेलन हो रहा था और उत्तरप्रदेशीय सम्मेलनकी स्थायी समितिका भी अधिवेशन था; इसलिये अच्छी उपस्थितिमें इसका काय हुआ। इस सम्मेलनमें अध्यक्षने सूचित किया कि अब तक ८२३५≡) प्राप्त हुए हैं जिनमें ६९१५॥) उत्तरप्रदेशके हैं और २७=) ब्याजके हैं। यह भी सूचित किया गया कि संयुक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनकी स्थायी समितिने अपने प्रान्तके वैद्योंको अधिक सहायता करनेके कारण धन्यवाद दिया है। और बांदा, इलाहाबाद, फतेहपुर, गोरखपुर, देवरिया, जौनपुर, गढ़वाल, मिर्जापुर, झाँसी, सीतापुर, और लखीमपुर जिलोंको उत्साह प्रकाशित करनेके लिये बधाई दी गयी है। साथ ही जिन जिलोंमें अभी तक कार्य नहीं हुआ उन्हें तत्परता प्रकट करनेके लिये कहा गया है। निश्चय हुआ कि इस समितिके द्वारा भी उत्तर प्रदेश और उसके उक्त जिलोंको धन्यवाद दिया जाय और अन्य जिलोंसे उदारता प्रकट करनेके लिये प्राथना की जाय। यह भी निश्चय हुआ कि आगामी आयुर्वेद महासम्मेलनके समय पूरी रिपोर्ट प्रस्तुत की जाय और संयुक्त प्रान्तको धन्यवाद देनेके साथ ही अन्य प्रान्तके वैद्योंसे उदारता प्रकट करनेके लिये प्रार्थना की जाय। स्मारक समिति

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

की योजनाके नियम ५ के अनुसार संयुक्त प्रान्तने पांच हजार रुपयोंसे अधिक दान दिया है अतएव समितिमें उसके तीन सदस्य १ पं० सीतावर पन्त २ पं० दयानिधि शर्मा और ३ पं० रामावतार शर्मा प्रयाग एक वर्षके लिये लिये गये। (३) जिन सज्जनों ने १००) या इससे अधिक की सहायता समितिको दी है ऐसे ११ सज्जन समितिमें स्थायी सदस्य स्वीकार किये गये। (४) योजनाकी नियमावलीमें कुछ साधारण संशोधन हुए और निश्चिय हुआ कि फिरसे नियमावली छपनेपर इसीके अनुसार सुधार कर छपे। समितिके अधिवेशन की सूचना १५ दिन पहले देने, ५१) के दाताओं को तीन रुपये तककी पुस्तकें मुफ्त और शेष आधे मूल्य पर देने तथा पुरस्कार सम्बन्धी प्रबन्धके लिये एक उप समिति बनानेके नियम बढ़ाये गये। दिल्ली की वैद्य सभा और पं० ओंकारप्रसाद जीको प्रथम पुरस्कार की रकम ५००) देनेके लिये धन्यवाद दिया गया और निवेदन किया गया कि यह रकम दिल्लीके दानके हिस्से से अतिरिक्त रहेगी। (६) पुरस्कार उपसमितिका संगठन किया गया (७) संयुक्त प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन की स्थायी समितिके इस प्रस्तावका समर्थन किया गया कि "श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारक समिति कोषके रुपये गवर्नमेंट सेविंग सर्टिफिकटमें जमा कर दिये जायँ, जिससे स्मारक कोषमें अधिक व्याज मिल सके। और समिति पुरस्कार देनेके कार्यमें सुविधापूर्वक सफल हो सके।" यह भी निश्चिय हुआ कि इसे विद्यापीठ कार्यालय में भेजकर इसके अनुसार कार्यवाही करनेका अनुरोध किया जाय।

समितिका तीसरा अधिवेशन कविराज हरिरंजनमजूमदार एम० ए० के सभापतित्वमें बडौदेके नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन के अवसर पर अप्रैल मासमें हुआ। इसमें निश्चय हुआ कि आगामी दिल्ली सम्मेलनके समय श्री शङ्कर दाजी शास्त्री पदे पुरस्कार देनेकी व्यवस्था की जाय। इस वर्ष ही पुरस्कार दिया जाता; किन्तु प्रति-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

योगितामें काफी पुस्तकें नहीं आयी हैं। अतएव फिर विज्ञापन दे कर अधिक पुस्तकें मँगानेका प्रयत्न किया जाय। पहले घोषणा की गयी थी कि सन् १९४२ ईस्वी तककी प्रकाशित प्रस्तकों पर विचार हो। अब १९४८ तक प्रकाशित पुस्तकोंके लिये विज्ञापन दिया जाय। संस्कृत अथवा हिन्दीमें प्रकाशित मौलिक ग्रन्थ मँगवाये जायँ। टीका और संग्रह ग्रन्थ मौलिक नहीं माने जायँगे; किन्तु यदि उनमें स्वतन्त्र विवेचन या स्वतन्त्र विवेचन युक्त विस्तृत प्रस्तावना हो तो उन्हें भी मौलिक समझा जायगा। कमसे कम डबल क्राउन सोलह पेजीके १०० पृष्ठों की पुस्तक होनी चाहिये। अन्य आकारकी पुस्तक होंने पर हिसाब से इतने पृष्ठोंके योग्य होनी चाहिये। (१) स्वास्थ्यविज्ञान (२) रोगनिदान (३) चिकित्साविज्ञान (४) कौमार भृत्य (५) धात्री-विज्ञान (६) मानसिक रोग विज्ञान (७) कीटाणुशास्त्र (८) ऊर्ध्वाङ्ग चिकित्सा (९) शल्यतन्त्र (११) रसायन और वाजीकरण (१२) पदार्थविज्ञान (१३) वनस्पतिशात्र और द्रव्यगुणविज्ञान (१४) रसतन्त्र कैमिस्ट्री (१५) पञ्चकर्म (१६) शरीररचना और शरीरक्रिया विज्ञान (१७) सुश्रूषा शास्त्र (१८) आधात और प्रारम्भिक चिकित्सा (१९) उपवैद्य कर्मविज्ञान (२०) नूतन अनुसन्धान और (२१) आयुर्वैदिक इतिहास आदि विषयोंमें से किसी भी विषयकी पुस्तक प्रतियोगितामें भेजी जा सकती है। सम्मेलनमें सभापति कविराज हरिरंजन मजूमदार जी, विद्यापीठके सभापति पं० दुर्गादत्त शास्त्री जी और प्रधान मन्त्री पं० गणेशदत्त सारस्वत जीने अपने अपने वक्तव्यमें समितिके कार्यों का अनुमोदन करते हुए जो प्रकाश डाला है, उसके लिये उन्हें धन्यवाद दिया गया। महा सम्मेलनने अपने इक्कीसवें प्रस्तावमें जो स्मारक समितिके सम्बन्धमें विचार प्रकट किये हैं, उसके लिये भी धन्यवाद दिया गया। स्मारक समितिके मन्त्री प्रयागके पण्डित महा-देव प्रसाद पाठक नियुक्त हुए।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

फरवरी महीनेमें पुरस्कार उप समितिके अधिवेशनमें पुरस्कार का निर्णय हुआ और सन् १९५० के १२ फरवरी के दिन दिल्लीमें कविराज प्रतापसिंह जीके सभापतित्वमें **स्मारक समितिका चौथा** अधिवेशन हुआ। श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्लको उनके मुखरोग विज्ञान पर पुरस्कारकी घोषणा होनेके कारण उन्हें बधाई दी गयी। जब शुक्ल जीने अपना यह निश्चय प्रकट किया कि मै ये रुपये स्मारक समितिको वापस कर देऊंगा तब कविराज प्रतापसिंह जीने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि अगले वर्ष इन्हीं रुपयोंसे शुक्ल जीकी ओरसे पुरस्कार दिया जाय। दिल्लीकी वैद्य सभाकी उदारतासे यह पुरस्कार दिया जा सका, अतएव उसे भी धन्यवाद दिया गया। इस बीचमें जिन सज्जनोंने १००) की सहायता की है उनका नाम स्थायी सदस्योंकी सूचीमें लिखना निश्चित हुआ। गत तीन वर्षोंकी कार्यवाही सुनायी गयी। आगामी वर्षोंके लिये पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल अध्यक्ष और पण्डित महादेव प्रसाद पाठक फिर मन्त्री चुने गये। पांच हजार रुपयोंसे अधिक दान देनेके कारण संयुक्त प्रान्तके तीन प्रतिनिधि पं० सीतावर पन्त, पं० दयानिधि शर्मा और पं० विश्वनाथ द्विवेदी चुने गये। आगामी पुरस्कारके लिये कार्तिक तक पुस्तकें मँगानेका निश्चय हुआ। समितिके सदस्य पं० जुगतराम शर्मा और कविराज मणीन्द्र कुमार मुकर्जीके स्वर्गवास होनेपर खेद प्रकट कर समवेदनाका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

स्मारक समितिका पाँचवां अधिवेशन १७ और १८ अप्रैल सन् १९५१ को समितिके कार्यालयमें हुआ। पिछली कार्यवाही सुनायी गयी और स्वीकृत हुई। सालभरका कार्य विवरण उपस्थित किया गया। इस वर्ष आयुर्वेदिक संसारसे सहायता बहुत कम मिली। इस पर खेद प्रकट किया गया और वैद्य बन्धुओं से अनुरोध किया गया कि जिन प्रान्तों और जिलोंमें अभी तक सहायताका उद्योग नहीं हुआ वहां

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

होना चाहिये। अध्यक्षने सूचित किया कि **उत्तर प्रदेशकी सहायता अब दश हजार तक हो गयी है** अतएव मैंने विद्यापीठ कार्यालयको लिखा है कि दश हजार रुपये पृथक बैंकमें फिक्सडिपाज़िट कैश सर्टिफिकटमें जमा कर दिये जावें। उसपर २८ जनवरी सन् १९५१ को महासम्मेलन की स्थायी समितिने यह निश्चय किया है "श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारक कोषके दश हजार रुपये फिक्सडिपाजिट अथवा कैश सर्टिफिकटमें जना करवाने के बिषयमें श्री पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्लके पत्र पर विचार हुआ। निश्चय हुआ कि पांच हजार रुपये युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड तथा पांच हजार रुपये सेण्ट्रल बैङ्क आफ इण्डिया लिमिटेडमें फिक्सडिपाजिट अथवा कैश सर्टिफिकटमें जिसमें व्याज अधिक मिलेमें जमा करवा दिये जायँ। निश्चय हुआ कि उक्त एकौंट्स को खोलने तथा चालू रखनेका अधिकार श्री शङ्करदाजी दाजी शास्त्रीपदे स्मारक कोषके वर्तमान बैङ्क खातेके आप्रेटर्ज श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, श्री गुरुदत्त शर्मा (प्रधान मन्त्री) तथा श्री पं० रामगोपाल शास्त्री (विद्यापीठ मन्त्री) को रहे। तथा उनमेंसे कोई दो महानुभाव एक साथ हस्ताक्षर करके एकौंट्स चालू रख सकेंगे।" इस निर्णयकी प्रतिलिपि आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिकाके फरवरी १९५१ के पृष्ठ ६४ में छप चुकी है। इस पर समिति ने सन्तोष प्रकट किया।

पुरस्कार उपसमितिका निश्चय उपस्थित किया गया और निश्चय हुआ कि उपसमितिके निश्चयके अनुसार आगामी इन्दौर के आयुर्वेद महासम्मेलनमें आयुर्वेदाचार्य पण्डित रामरत्न पाठकको उनके "त्रिदोषतत्व विमर्श" पुस्तक पर ५००) रुपयोंका पुरस्कार दिया जाय। यह भी निश्चय हुआ कि जिन जिलों और प्रान्तोंसे अभी तक सहायता नहीं मिली उनके सम्बन्धमें प्रान्तीय सम्मेलनों

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

और आयुर्वेद महासम्मेलनसे प्रार्थना की जाय कि उचित आदेश द्वारा इस कार्यमें उत्साह प्रकट करनेका अनुरोध किया जाय।

स्मारक समितिकी ओरसे श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे लिखित त्रिदोष विचार सम्बन्धी जो पुस्तकें पैंतालीस या ५० वर्ष पहले एक त्रिदोष कमीशनकी रिपोर्ट के आधार पर लिखी गयी थीं वह प्रकाशित की जाय। उससे पता लगेगा कि पचास वर्ष पहले त्रिदोषके सम्बन्धमें क्या उद्योग किया गया था।

पुरस्कारका प्रारम्भ

सन् १९४७ में पूरे एक वर्ष उद्योग करने पर भी जब स्मारक कोषमें समुचित रकम नहीं आयी तब सोचा गया कि यदि पुरस्कारका कार्य आरम्भ कर दिया जाय तो सम्भवतः वैद्योंमें नवीन उत्साह उत्पन्न हो। इसलिये आयुर्वेद विद्यापीठसे इस सम्बन्धमें अनुरोध किया गया। दिल्लीके वैद्योंसे विशेषकर पण्डित ओङ्कार प्रसाद शर्मा जी से बातचीत हुई। उन्होंने आश्वासन दिया कि दिल्ली वैद्य सभाकी ओरसे हम प्रथम पुरस्कारके लिये ५००) रुपये देंवेगे। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि यह ५००) की रकम उस सहायतासे भिन्न होगी जो दिल्ली के वैद्यों को स्मारक समितिके कोषके लिये दी जानेवाली है। इसके पश्चात १८ जनवरी सन् १९४५ को आयुर्वेद विद्यापीठकी कार्यकारिणी के द्वितीय अधिवेशनमें इस विषयपर विचार होकर निम्न लिखित निश्चय हुआ।

"१७—श्री शङ्कर दाजी शास्त्री पदे स्मारक कोषोद्देश्यानुसारं पुरस्कारार्ह ग्रन्थ विषयाणाँ निर्धारणार्थं वैद्यानां सम्मतयः संकलनीया विद्यापीठेनेति निश्चितम्। ५००) पञ्चशत रूप्यकभिः प्रथमः पुरस्कारो देहली वासभि वैद्यैरर्पयिष्यत इति संसूचितं श्री

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ओंकर प्रसाद शर्माभिर्भिषग्वैरैः:" आ-महा सम्मेलन पत्रिका मार्च १६४८।

इससे उत्साहित हो स्मारक समितिने पण्डित ओंकार प्रसादजी और दिल्लीकी वैद्य सभाको धन्यवाद दिया; किन्तु कुछ अड़चनोंसे यह रकम विद्यापीठ कार्यालयमें नवम्बर सन् १६४८ तक जमा न हो सकी। ३० नवम्बरका लिखा हुआ इन्द्रप्रस्थीय दिल्ली वैद्यसभाकी ओरसे एक पत्र मिला—

श्री माननीय संयोजक महोदय

शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारकनिधि समिति

सादर अभिवादन,

विदित हो कि श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदेकी स्मृतिमें जो ग्रन्थ आयुर्वेदपर निर्माण हो उसपर ५००) पारितोषिक पुरस्कार प्रथम श्री इन्द्रप्रस्थीय वैद्यसभाकी ओरसे दिया जायगा। आप जब लिखेंगे तब रुपया आपके पास भेज देंगे।

भवदीय

वासुदेवशर्मा

मन्त्री इ० प्र० वै० स० दिल्ली।

इसपर सभाको लिखा गया कि ग्रन्थ निर्माण कराना समय सापेक्ष्य और अधिक व्ययका विषय है।" स्मारक समिति चाहती है कि अब तकके प्रकाशित आयुर्वेदिक ग्रन्थोंमें जो सर्वोत्तम हो उसे पुरस्कार दिया जाय।" सभाने इसे स्वीकार किया। इसके पहले ही २६ सितम्बर १६४८ के अधिवेशनमें स्मारक समितिने पुरस्कारका प्रबन्ध करनेके लिये १ पण्डित गणेशदत्त सारस्वत बी० ए० दिल्ली २ पण्डित ओंकार प्रसाद शर्मा दिल्ली ३ पण्डित वेनीमाधव द्विवेदी प्रयाग ४ पं० रुद्रमणि त्रिपाठी ए० एम० एस० दारागंज और ५ पण्डित महादेव प्रसाद पाठक त्रिपौलियाकी एक उपसमिति बना दी।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इस समितिने समाचार पत्रोंमें पुरस्कार प्रतियोगिताके लिये पुस्तकें भेजनेकी घोषणा की; किन्तु फरवरी १९४६ तक पर्याप्त पुस्तकें नहीं आयीं । इसमें बड़ौदा सम्मेलनमें पुरस्कार प्रदानका कार्य नहीं हो सका । पहले सन् १९४२ तककी पुस्तकें माँगी गयी थीं । अन्तमें सन् १९४८ तककी छपी पुस्तकोंकी पांच पांच प्रतियां भेजने लिये कहा गया । पुस्तकें भेजनेकी अवधि १५ अक्टूबर सन् १९४८ तक रखी गयी । प्रथम पुरस्कारके लिये (१) शिरोरोग विज्ञान (जगन्नाथप्रसाद शुक्ल) (२) शरीरक्रिया विज्ञान (वैद्य रणजीतराय देसाई,) (३) पदार्थविज्ञान (पं० रामरत्न पाठक) (४) कौमारभृत्य (पं० रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी) (५) भारतीय कीटाणुशास्त्र (पं० रघुवीर-प्रसाद शर्मा,) (६) हमारे भोजनकी व्यवस्था (कविराज अत्रिदेव गुप्त) और (७) राजयक्ष्माविज्ञान (पं० पारसनाथ पाण्डेय) ये सात पुस्तकें आयीं । निर्णायकोंमें १ कविराज हरिरञ्जन मजूमदार २ पं० गोवर्धन शर्मा छांगाणी और ३ पण्डित विश्वनाथ द्विवेदी थे । श्री मजूमदार जी कार्य नहीं कर सके; अतएव अन्तिमक्षण कविराज ताराचरण भट्टाचार्य के द्वारा कार्य सम्पादित हुआ । निर्णायकोंमें ऐसे सज्जन नहीं रखे जा सके जिनका किसी पुस्तकसे किसी प्रकारका सम्बन्ध था ! निर्णायक समितिने शिरोरोग विज्ञानको पुरस्कारके योग्य निश्चय किया । साथ ही कौमारभृत्यमूके लेखक आयुर्वेदाचार्य पं० रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी और शरीर क्रिया विज्ञानके लेखक आयुर्वेदालंकार श्री रणजीतराय देसाईको स्वर्ण पदक प्रदान हुआ ।

शुक्लजीने पुरस्कारके रुपये स्मारक समितिको सहायतार्थ वापस कर दिये । अतएव दिल्ली सम्मेलनने उन्हे धन्यवाद दिया और स्मारक समितिने भी धन्यवाद देते हुए निश्चय किया कि इन्हीं रुपयोंसे आगामी वर्ष श्री शुक्लजीकी ओरसे पुरस्कार दिया जाय । यह भी निश्चय हुआ कि आगामी पुरस्कारके लिये जो पुस्तकें

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आगामी कार्तिक मासतक आये उनपर विचार हो। इस विषयकी घोषणा की गयी और प्रतियोगिताके लिये निम्नलिखित ६ पुस्तकें आयी। (१) आयुर्वेदका संक्षिप्त इतिहास (कविराज महेन्द्रनाथ शास्त्री वैद्य वाचस्पति बम्बई) (२) वातालिका प्लेग (पं० रामगोपाल मिश्र राजवैद्य गोंदिया,) (३) मानसरोग विज्ञान (डाक्टर बालकृष्ण अमर जी पाठक काशी) (४) आयुर्वेदीय पदार्थविज्ञान (वैद्यरणजीतराय सूरत) (५) त्रिदोषतत्त्व विमर्श (आयुर्वेदाचार्य पं० रामरक्षपाठक बेगूसराय) और (६) मर्मविज्ञान (पं० रामरक्षपाठक), बेगूसराय

पुरस्कार उपसमितिने वैद्यरत्न कविराज प्रताप सिंह जी आयुर्वेद-वृहस्पति, आयुर्वेदाचार्य स्वामी जयराम दासजी जयपुर और आयुर्वेद-रत्न पण्डित वेणीमाधव द्विवेदी प्रयागको निर्णायक चुना था। एक सज्जनने पण्डित बालकृष्ण अमरजी पाठककी पुस्तकके लिये सम्मति दी थी और दो निर्णायकोंने पण्डित रामरक्ष पाठक जीको पुरस्कारके योग्य ठहराया था। डाक्टर पाठककी पुस्तक एक तो पूर्ण नहीं थी और द्वितीय वे स्वर्गवासी भी हो चुके थे। अतएव स्मारक समितिने बहुमतके अनुसार पण्डित रामरक्ष पाठक जीको पुरस्कार भागी बनाया। पाठकजीको यह पुरस्कार कार्तिक शुक्ल ६ सं० २००६ को इन्दौरके आयुर्वेद महासम्मेलनमें तिलक लगाकर पुष्प माल्य और नारियलके साथ सादर समर्पित किया गया। आपने भी यह रुपये समितिको वापस दे दिये हैं। अतएव सम्मेलनने आपको धन्यवाद प्रदान किया है। पुरस्कारके साथ जो ताम्रपत्र दिया जाता है, उसका मूनना नीचे लिखे अनुसार हैं—

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नि० भा० आयुर्वेद महा सम्मेलन

आयुर्वेदविद्यापीठस्य

५००) पञ्चशत रूप्यकात्मकम्

श्री शंकर दाजी शास्त्री पदे पुरस्कारमिदं

इन्द्रप्रस्थीयनिधितः

महासम्मेलनस्याष्टत्रिंशतितमे अधिवेशनावसरे

श्री रामरक्ष पाठक आयुर्वेदाचार्याय

तदीयोत्तम कृतेः "त्रिदोषतत्वविमर्श" सम्मानार्थम्

ताम्रपत्रेण सह सादरं समर्प्यते

इन्दौर
कार्तिक शुक्ल ६ सं०, २००६ वै० } श्री शिवशर्मा आयुर्वेदाचार्यः
सभापतिः

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इसमें "पुरस्कार मिदं" के पश्चात पहले बारके पुरस्कारमें "इन्द्रप्रस्थीय निधितः" शब्द था। दूसरे बार श्री शुक्लजीका नाम आना चाहिये था परन्तु उन्होंने इसे पसन्द नहीं किया। अब आगेसे "उत्तरप्रदेशीय निधितः" रहा करेगा। इसी प्रकार "अधिवेशनावसर के पश्चात उसके नीचे पंक्तिमें जिसे पुरस्कार मिलेगा उसका नाम रहेगा। नीचे जहां पुरस्कार प्रदान होगा उस स्थानका नाम और वहाँके सभापति का नाम रहा करेगा।

स्मारकमे प्राप्तधनका व्योरा

प्रथमवर्ष—नवम्वर सन् १९४६ से श्री शंकरदाजी शास्त्री पदे स्मारक समितिने अपना कार्य आरम्भ कर दिया और जनवरी सन १९४७ से सहायतार्थ धन मिलना आरम्भ हुआ। प्रथम वर्षमें अर्थात अक्टूबर सन १९४७ तकमें कुल १७४२।) प्राप्त हुए। १६५६।) संयुक्तप्रान्त (उत्तर प्रदेशसे) ५१) मध्यप्रदेशसे और २५) मद्रास प्रान्तसे आये। उत्तरप्रदेशके इलाहावाद, गोंडा, प्रतापगढ़, फतेहपुर बरेली, कानपुर, अलीगढ़, मैनपुरी, हरदोई, नैनीताल, पीलीभीत, लखीमपुर, खीरी, मिर्जापुर, औरैया-इटावा, रायबरेली, बाँदा, आगरा, मथुरा, फैजाबाद, बनारस, गढ़वाल, बदायूँ, सीतापुर फर्रुखावाद और मुरादाबाद जिलोंसे सहायता मिली। मध्यप्रदेशके बिलासपुर जिलेके शिवरीनारायणके महन्त महाराजकी सहायता आयी। मद्रासके त्रिचनापल्ली और मद्राससे सहायता आयी।

द्वितीयवर्ष—नवम्बर सन १९४७ से अक्टूबर सन १९४८ तक द्वितीय वर्षमें कुल ६७५६।||≥) की सहायता प्राप्त हुई। इसमें ५४२३||) उत्तर प्रदेशसे, १०६) राजपूतानेसे, ८५) मध्यभारतसे, ५१) गुजरातसे, ५५६ बम्बईसे, २५) मध्यप्रदेशसे, ४२७।–) विहारसे

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२५) पंजाबसे, १०), महाराष्ट्रसे, १०) बरारसे, ११) दिल्लीसे और २७=) व्याजसे आये।

द्वितीय वर्षमें उत्तरप्रदेशके इलाहाबाद, हरदोई, बुलन्दशहर, रायबरैली, लखनऊ, बस्ती, बिजनौर, फतेहपुर, बनारस स्टेट, उन्नाव, औरैयाइटावा, हरिद्वार, गढ़वाल, जालोन, झांसी, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, जौनपुर, बनारस, एटा, सीतापुर, सहारनपुर गोरखपुर, बांदा, मेरठ, देहरादून, अलीगढ़, देवरिया, खीरी—लखीमपुर, बाराबंकी, फीरोजाबाद आगरा, आजमगढ़, फरु खाबाद और वहराइच जिलोंसे सहायता मिली। राजपूतानेके जयपुरसे, मध्यभारतके झालरा-पाटनसे. गुजरातके अहमदाबादकी वैद्यसभासे, बम्बईके वैद्योंसे, मध्यप्रदेशके चाँपा विलासपुरसे विहारके दरभंगा और मुजफ्फरपुरसे, पंजाबके अमृतसरसे, महाराष्ट्रके पूनासे, बरारके अमरावतीसे, दिल्ली के बिडलामिलके वैद्यजीसे सहायता मिली।

तृतीय वर्ष—नवम्बर सन १६४८ से अक्टूबर सन १६४६ तकमें कुल ३६६०॥)॥ की आमदनी हुई। इसमें २३३१।–) उत्तर प्रदेशसे, ३०१) विहारसे, १०१) पंजाबसे, ४०२) मध्यप्रदेशसे, ५१) बरारसे, २३१) मध्यभारतसे, १०) राजपूतानेसे, २५) मैसूरसे, १०१) बम्बईसे और १३७≡)॥ व्याज आये।

उत्तरप्रदेशकी सहायता फरु खाबाद, हमीरपुर, आजमगढ़ बरेली, इलाहाबाद, अलीगढ़, बनारस, बदायूँ, लखनऊ, कानपुर, गाजीपुर, रायबरैली, प्रतापगढ़, फतेहपुर, जालौन, मेरठ, सीतापुर, हमीरपुर, बांदा, विजनौर, गोरखपुर अलमोड़ा, बनारस, पीलीभीत, देहरादून, हरिद्वार, बुलन्दशहर और मिर्जापुर जिलोंसे प्राप्त हुई। विहार प्रान्तकी सहायता मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मुंगेर, वेगूसरांय और आरा से प्राप्त हुई। पञ्जाबकी सहायता पटियालाके राजवैद्य जीसे मिली।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मध्यप्रदेशकी सहायता जबलपुर, विलासपुर, कोरियास्टेट, वैकुण्ठपुर और नागपुरसे प्राप्त हुई । बरारकी सहायता अमरावतीसे आयी। राजपूतानेकी सहायता बीकानेरसे मिली, मैसूरकी सहायता भी प्राप्त हुई । बम्बईकी सहायता खास बम्बईके श्री सांडूब्रादर्ससे मिली । हरिद्वारमें इस वर्षकी विशेष सहायता ऋषिकुल आयुर्वेद कालेजके विद्यार्थियोंकी ओरसे २५) प्राप्त हुई । यह ऋषिकुल आयुर्वेदकालेजके विद्यार्थियोंके लिये भूषणास्पद है । अन्य कालेजोंके विद्यार्थियोंको भी इसमें कुछ न कुछ सहायता अवश्य करनी चाहिये ।

चतुर्थवर्ष—नवम्बर सन् १९४९ से अक्टूबर सन् १९५० तक के चौथे वर्षमें कुल १७२५।।=) की आमदनी हुई । इसमें उत्तर प्रदेशसे ३०९), विहारसे ५०), पंजाबसे ११), मद्राससे ३=), गुजरात बड़ोदासे ५०१) महाराष्ट्रसे ५१) राजपूतानेसे ११) मध्यप्रदेशसे २०१।) हैदराबादसे ३९७) आये । ब्याजसे १९१।) मिले

उत्तरप्रदेशकी सहायता बलिया, फतेहपुर, इलाहाबाद, हरदोई, रायबरैली, कानपुर, वरैली, विजनौर, इटावा, मुरादाबाद जिलोंसे प्राप्त हुई। विजनौरके नहटौर वैद्यमण्डलके आयुर्वेदाचार्य पं० कृष्णदत्तशर्मा जीने स्वयं प्रेरणासे सहायता एकत्रकर भेजी । विहारकी सहायता आरा जिलेसे आयी। पंजाबकी सहायता जालन्धरसे मिली । मद्रासकी सहायता वैद्य सम्पादक श्री विष्णुकान्त जीके द्वारा प्राप्त हुई। बड़ोदा सम्मेलनकी बचतसे मन्त्री श्री चुन्नीलाल जीने भेजे । महाराष्ट्रकी सहायता नासिकके आयुर्वेदपत्रिका सम्पादक पण्डित विन्दुमाधव जीके द्वारा प्राप्त हुई। राजपूतानेकी सहायता बीकानेरसे आयी । मध्यप्रदेशकी सहायता नागपुरसे, हैदराबाद सम्मेलनसे लौटते हुए जानेपर मिली। हैदराबादकी सहायता वहांके सम्मेलनमें जानेसे प्राप्त हुई ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पञ्चमवर्ष—नवम्बर सन् १९५० से अक्टूबर सन १९५१ तकके पांचवें वर्षमें कुल १६६६।) की आमदनी हुई। इसमें ७१४।) उत्तरप्रदेशसे, ६) महाराष्ट्र से, ७०२) राजस्थानसे, २१) विहारसे, ६९) मध्यप्रदेशसे और १८१) व्याजसे आये हमीरपुर, झांसी और सुलतानपुर जिलोंसे आये। महाराष्ट्रके रुपये आयुर्वेद पत्रिका सम्पादक नासिकके पण्डित विन्दुमाधव जीके द्वारा प्राप्त हुए। राजस्थानके रुपये पं० नन्दकिशोरजी द्वारा और स्वामी मंगलदास जी द्वारा राजस्थान प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन, मारवाड़ आयुर्वेद प्रचारिणी सभा, जयपुर सद्वैद्य सभा और महाराज उदयचन्द्रजीसे प्राप्त हुए। विहारके रुपये आरा-जिलेसे और मध्यप्रदेशके विलासपुर तथा नागपुर जिलोंसे प्राप्त हुए। व्याजके रुपये सन १९५० की दोनों छःमाहीका व्याज था।

षष्ठवर्ष—नवम्बर सन् १९५१ से अक्टूबर सन् १९५२ के छठे वर्षमें कुल मिलाकर ४८७।−) की आमदनी हुई। इसमें से २९) उत्तर प्रदेशसे और मध्यप्रदेशसे १००) आये। उत्तर प्रदेशके रुपये फरूखाबाद, सहारनपुर, और इलाहाबाद, जिले से मिले। मध्यप्रदेश दमोह के आयुर्वेदाचार्य पण्डित पाण्डुरंग शिवराम शेंड्येजीने पहले १०१) दिये थे। इस वर्ष स्वयं अपनी प्रेरणा और उत्साहसे उन्होंने १००) और भेजे हैं। इस वर्षमें अन्य प्रान्तोंसे कोई सहायता नहीं मिली। व्याजके रुपये ट्रेजरी सेविंग्स सर्टिफिकेटसे ३५०) और पंजाब नेशनल वैङ्क बचत खातेसे ८।−) मिलाकर कुल ३५८।−) व्याज में प्राप्त हुए। छहों वर्षोंका योग १६०६८॥=)॥ हुए। इसमें यदि दिल्ली वैद्य सभाकी पुरस्कार सहायतावाली रकम ५००) मिलावें तो १६५६८॥=)॥ हुए।

कुलजमा—इस प्रकार सन् १९४७ से लेकर अक्टूबर सन् १९५२

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तकमें आयुर्वेद महोपाध्याय श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारक कोषमें कुल १६५६८॥=)॥ सोलह हजार पाँच सौ अट्ठानवे रुपये साढ़े चौदह आने ब्याज आदि मिलाकर जमा हो चुके हैं। इनमेंसे १००००) दश हजार रुपये ट्रेजरी सेविंग सर्टिफिकटमें जमा हैं। ४६९५) चार हजार नौ सौ पनचानवे रुपये युनाइटेड कमर्शियल बैङ्कके सर्टिफिकट में जमा हैं। पंजाब नेशनल बैंकके बचत खाते ६०४॥≈)॥ और विद्यापीठके पास जमा ७६५।)॥ हैं। विद्यापीठ कार्यालय की सूचना है (ता० ६-२-५३ नं० ३२१५ म० ३२ और ४।३।५३) कि समितिके जो विद्यापीठ कोषमें जमा हैं वह अब समितिके कोषमें परिवर्तित किये जा रहे हैं।

२० अप्रैल सन् १९५१ ईस्वी को आयुर्वेद महासम्मेलन की स्थायी समिति और आयुर्वेद विद्यापीठ की समिति दिल्ली में हुई थी और जिसका विवरण आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिकाके मई १९५१ के अङ्कमें छपा है, उसमें रुपया जमा करनेके सम्बन्धमें इस प्रकार निश्चय हुआ था।

"निश्चय हुआ कि श्री शङ्करदाजी पदे स्मारक की धनराशि में ९०००) नौ हजार रुपये की धनराशि भारत सरकारके १० वर्षीय ट्रेजरी सेविंग्ज डिपाजिट में—जिसमें ब्याज मिलता है—जमा करा दिये जावें। यह भी निश्चय हुआ कि उपर्युक्त एकौंट खोलने तथा चालू रखनेका अधिकार श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, श्री गुरुदत्त प्रधान मन्त्री तथा श्री रामगोपाल शास्त्री विद्यापीठ मन्त्रीको दिया जावे। तथा उनमें से कोई दो महानुभाव एक साथ हस्ताक्षर करके एकौंट चालू रख सकेंगे।" तदनुसार एकौंट खोलने के लिये एक हस्ताक्षर श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्लका भी भेजा गया था।

———

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्रान्तवार हिसाब

ये जो रुपये वसूल हुए हैं, उनका प्रान्तवार हिसाब नीचे लिखे अनुसार है—

उत्तर प्रदेश—प्रथमवर्ष १६५६।), द्वितीयवर्ष ५४२३॥), तृतीय वर्ष २३३१।-) चतुर्थवर्ष ३०६), पंचमवर्ष ७१४।) और छठे वर्ष २६) इस प्रकार कुल १०४६३।-) दश हजार चार सौ तिरसठ रुपये पांच आने हुए।

मध्यप्रदेश—प्रथम वर्ष) ५१) द्वितीय वर्ष २५), तृतीय वर्ष ४०२) चतुर्थ वर्ष २०१।) पंचमवर्ष ६६) और छठे वर्ष १०० रु० मिलाकर अबतक ८४८।) हुए। अभी कई जिलोंमें प्रयत्न होना आवश्यक है।

मद्रास—प्रथमवर्ष ३५) और चतुर्थवर्ष ३=) मिलाकर अबतक ३८=) हुए। अपील भेजनेपर आये। वहां के वैद्योंका संगठित प्रयत्न हो तो अभीष्ट रकम आ सकती है।

राजपूताना या राजस्थान—में द्वितीयवर्ष १०६) तृतीयवर्ष १०) चतुर्थवर्ष ११) और पंचमवर्षमें ७०२) मिलाकर अब तक ८२६) आये। राजस्थानसे विशेष आशा है।

मध्यभारत में—द्वितीयवर्ष ८५) और तृतीय वर्ष २३१) मिलाकर ३१६) मिले अभी इस प्रान्तमें संगठित प्रयत्न अभीष्ट है।

गुजरात—अहमदाबादकी वैद्य सभाने ५१) भेजे हैं। अभी प्रान्तीय उद्योग होना अभीष्ट है।

बम्बई—द्वितीय वर्षमें ५५६) वहाँ की वैद्य सभा और पं० वामनराव व्यासजीके उद्योगसे आये और तृतीय वर्ष श्री सांडू ब्रादर्स

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

से १०१) मिले। कुल ६५७) मिले। यह रकम अभी बम्बईके अनुरूप नहीं है।

बिहार—द्वितीयवर्ष ४२७।-), तृतीयवर्ष ३०१) चतुर्थवर्ष ५०) और पंचमवर्ष २१) मिले कुल जोड़ ७६६।-) हुआ। यह रकम तीन चार जिलोंसे ही मिली है। अभी प्रान्तव्यापी उद्योग अभीष्ट है।

पंजाबमें—अभीतक संगठित प्रयत्न नहीं हुआ। कुल १३७) मिले हैं। इनमें १०१) पेपसू के राज वैद्य पं० राम प्रसादजीके हैं। ११) पं० हरिदत्त जी शास्त्रीके और २५) अमृतसरके राजवैद्य ब्रह्मानन्द जी डेरा औषधालयका है।

महाराष्ट्र—से अभीतक ७०) मिला है। वहाँका प्रान्तीय सम्मेलन और पं० विन्दुमाधव जी प्रयत्न शील हैं।

बरार के—अभी तक दो व्यक्तियोंसे ही ६१) प्राप्त हुए हैं। जिलोंमें प्रयत्न होना अभीष्ट हैं।

दिल्ली—अभीतक संगठित प्रयत्न नहीं हुआ। केवल बिरला मिलके पं० रामचन्द्र प्रफुल्लजीसे ११ रुपये मिले हैं।

मैसूर--अभीतक संगठित प्रयत्न नहीं हुआ। केवल श्री परशु-रामजी के द्वारा २५) प्राप्त हुए हैं।

बड़ोदा—बड़ोदा सम्मेलन की बचत से ५०१) प्राप्त हुए हैं। वैद्योंकी उदारता से अभी वहां अच्छी सहायता मिल ककती है।

विन्ध्य प्रदेश—अभी तक १५) प्राप्त हुआ है।

हैदराबाद—एक बार वहां जानेपर हैदराबादके वैद्योंने जैसा उत्साह प्रकट किया था और ३६७) प्राप्त हुए थे, उसे देखते हुए प्रान्तीय प्रयत्नसे अभी अच्छी सहायता मिल सकती है।

अभीतक हिमालयप्रान्त, विन्ध्यप्रान्त, अजमेर, आसाम, बंगाल,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

उड़ीसामें कोई प्रयत्न नहीं हो पाया है। जिन वैद्योंके पास आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका या अन्य पत्रों द्वारा इस स्मारकका सन्देश पहुँचता है उन्हें प्रयत्नशील होना चाहिये। काश्मीर और नेपालमें जैसी अशान्ति है उससे वहां संगठित प्रयत्न इस समय सम्भव नही है। काठियावाड़ और कच्छ प्रान्तके वैद्य बहुत निराश दिखते हैं। आशा है उनमें भी उत्साहका सञ्चार होगा।

उत्तर प्रदेशीय सहायताका विवरण

उत्तरप्रदेशकी सहायता ३१ अक्टूबर सन १९५२ तक १०४६३।-) हुई है। उसका जिलेवार हिसाब नीचे लिखे अनुसार हैं।

१	इलाहाबाद	६८८)	११	मथुरा	२५)
२	फतेहपुर	४७६)	१२	अलीगढ़	३६६)
३	कानपुर	२९)	१३	एटा	५)
४	इटावा	३३२)	१४	मैनपुरी	५)
५	फर्रुखाबाद	८९)			५४६)
		१६१४)	१५	मेरठ	३१७)
६	झांसी	७५२)	१६	बुलन्दशहर	६६)
७	जालोन	१३५)	१७	मुजफ्फरनगर	×
८	हमीरपुर	३०१)	१८	सहारनपुर	२३४।)
९	बांदा	१०१३)	१९	देहरादून	२६५)
		२२०१)			८८२।)
१०	आगरा	१४८)	२०	नैनीताल	७७)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२१	अलमोड़ा	२०)
२२	गढ़वाल	२१५)
		———
		३१२)
२३	बस्ती	१३)
२४	गोरखपुर	६६५)
२५	देवरिया	२३२)
२६	आजमगढ़	१२०)
		———
		१०३०)
२७	बरेली	२००)
२८	शाहजहांपुर	×
२९	पीलीभीत	५५)
३०	मुरादाबाद	५५)
३१	बदायूँ	८३)
३१	बिजनौर	१९६)
		———
		५८९)
३३	फैजाबाद	५)
३४	गोंडा	५।)
३५	बहराइच	१८)
३६	सुलतानपुर	१५।)

३७	प्रतापगढ़	६४)
३८	बाराबंकी	५)
		———
		११२॥)
३९	लखनऊ	१९०)
४०	उन्नाव	५८)
४१	रायबरैली	२०५)
४२	हरदोई	१४३)
४३	सीतापुर	४६५)
४४	लखीमपुरखीरी	३४५)
		———
		१४०६)
४५	बनारस	५२९)
४६	मिर्जापुर	२६५)
४७	गाजीपुर	२०३)
४८	बलिया	३६)
४९	जौनपुर	३२५)
५०	काशीराज्य	५५)
		———
		१४१३)
५१	टेहरी	×
५२	रामपुर	×

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

खर्चका व्योरा

आयुर्वेद विद्यापीठकी सहायता—

श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदे स्मारक समितिके व्यय निर्वाहार्थ कृपाकर आयुर्वेद विद्यापीठने सहायता देना स्वीकार किया और अबतक का खर्च विद्यापीठसे प्राप्त सहायता द्वारा ही होता आया है। स्मारक समितिने इस बात पर पूरा ध्यान रखा है कि समितिके किसी भी काममें नितान्त आवश्यकतासे अधिक कुछ भी खर्च न होने पावे। सबसे अधिक खर्च यात्रामें और नौकर चाकरोंमें होता है। यात्रामें सदा यह ध्यानमे रखा गया है कि अपने निजी कामसे या किसी संस्थाके बुलाने पर यात्रा हो तो उसका भार स्मारक समितिपर न पड़ने पावे। आफिसके चलानेमें यथा सम्भव परिश्रम मैं स्वतः करता रहा या सुधानिधिके मैनेजर पण्डित शम्भूदयालु तिवारी करते रहे। अधिक काम होनेपर कुछ समयके लिये यथासम्भव कम व्यय पर किसीसे सहायता ली जाती रही। जिसे पाठक व्ययके व्योरेसे समझ सकेंगे।

आयुर्वेद विद्यापीठसे १००) नवम्बर सन् १९४६ में आये। १००) नवम्बर सन् १९४७ में, २००) अप्रैल १५ सन् १९४८ में और १००) दिसम्बर ८ सन् १९४८ में आये सन् १९४९ मे कोई सहायता नहीं आयी। फरवरी सन् १९५० में ३००) का चेक फिर आया। १००) मई सन् १९५१ में दिल्लीसे आया। इस प्रकार कुल मिलाकर ९००) आये। इन रुपयोंसे नीचे लिखे अनुसार खर्च हुआ।

प्रथम वर्षमें—आफिसका सामान खरीदनेमें १७॥=)॥, छपाई और कागजमें ५९।), पत्र व्यवहारमें ६५।=)॥, यात्रा और

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सवारी खर्चमें ८।।-) वेतनमें ६।) कुल खर्च १६०।।=) हुआ।

दूसरे वर्षमें—यात्रा और सवारीमें २३।=), आफिस खर्च १७।=), छपाई और कागजखर्च १४४।।।=), वेतनखर्च ६०), पत्र व्यवहार ३६।≡)।।। बैङ्क कमीशन ६=)। कुलखर्च २६१।) हुआ।

तीसरे वर्षमें—यात्रा और सवारी खर्च ९≡)।।, आफिसखर्च ६-), वेतन खर्च ६०), पत्रव्यवहार २५।।।-), बैङ्क कमीशन १।।) कुल खर्च १०५।।-)।। हुआ।

चतुर्थ वर्षमें—अफिस खर्च ।।।≡)।।।, वेतनमें ६०), पत्रव्यवहार में १३।।)।। मनीआर्डर कमीशन १।।।), छपाई खर्च ३।), पुरस्कारमें १३३।।=) बैङ्क कमीशन ।।।), कुल २१४=)।

पंचम वर्षमें—आफिस खाते ।।।=), पत्रव्यवहारमें ९।।≡)।।, मनीआर्डर कमीशन ।), वेतन ४०), छपाई खाते ३।।) कुल ५३।।-)।।

छठेवर्षमें—पत्रव्यवहार १-)।।।, मनीआर्डर कमीशन ।।-), छपाईमें ५) कागज ७) कुल १३।।=)।। हुआ। कुल योग ८३८।।=) हुआ।

व्ययका ब्योरा—इस प्रकार नवम्बर सन् १९४६ से अक्टूबर १९५२ तकके छः वर्षोंमें कुल ८३८।।=) व्यय हुआ। इस प्रकार आयुर्वेद विद्यापीठसे प्राप्त ९००) रुपयोंमें से ६१।=) शेष रहे।

इन छः वर्षोंमें ४६≡)। आफिसखाते, २२१।।।=) छपाई और कागज खर्च खाते, १५५।-) पत्रव्यवहार खाते ४१=)।। यात्रा और सवारी खर्च खाते, २२६।) वेतन खाते ८:=)। बैङ्क कमीशन खाते ३।।-) मनी आर्डरखर्च और १३३।।।=) पुरस्कार खाते खर्च हुआ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

यद्यपि दो बार पुरस्कार पांच पांच सौ रुपयोंका दिया गया। किन्तु वह उन सज्जनों से वापस मिला। इस तरह दो स्वर्णपदक देनेमें ही व्यय हुआ।

कृतज्ञताप्रकाश

इस स्मारक समितिके आन्दोलनमें जिनके द्वारा प्रोत्साहन मिला है, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशन करना हमारा कर्तव्य है। आयुर्वेद विद्यापीठने योजना तो बना दी; किन्तु यदि इसके व्यय निर्वाहार्थ विद्यापीठसे सहायता न मिलती तो इसका कार्य आगे बढ़ना कठिन होता। इसके सिवाय प्राप्त रकममेंसे बहुत सा व्यय निकल जाता। दिल्लीकी वैद्यसभा और परिडत ओंकार प्रसाद शर्माजीके भी हम कृतज्ञ हैं; क्योंकि पुरस्कार आरम्भ करनेमें आपके द्वारा प्रतेसाहन मिला। जिससे स्मारक समितिका कार्य गौरव बढ़ गया। सामयिक और आयुर्वैदिक पत्रोंने सूचनाएं प्रकाशित कर वैद्योंतक हमारा सन्देश पहुँचाने में सहायता पहुँचायी है अतएव उनके सम्पादकोंके हम कृतज्ञ हैं। सबसे अधिक धन्यवाद उत्तर प्रदेशीय वैद्य सम्मेलनको है जिसने इस कार्यके लिये पारितोषिककी रकम १२ हजार रुपये एकत्र करनेका संकल्प किया और उसे निरन्तर निवाहा भी। आयुर्वेदशास्त्राचार्य पं० विश्वनाथ द्विवेदी जीने इस विषयमें अग्रभाग लिया। उत्तर प्रदेशीय सम्मेलनके प्रधानमन्त्री रूपसे पं० धर्मदत्त जी शर्मा और परिडत दयानिधि शर्माजीने इस कार्यमें उत्साहके साथ सहयोग दिया। इलाहाबाद, फतेहपुर, बांदा, इटावा, फर्रुखाबाद, अलीगढ़, जौनपुर, गोरखपुर, सीतापुर, लखीमपुर, मेरठ, रायबरैली, हरदोई, गाजीपुर, बलिया आदिके जिला सम्मेलनोंमें इसके लिये उद्योग किया गया।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जिलोंके कार्यकर्ताओंका बहुमूल्य सहयोग न होता तो यह कार्य सरलतासे न होता। **इलाहाबाद** जिलेमें सभी वैद्योंका हार्दिक सहयोग रहा। विशेषकर पण्डित वेणीमाधव द्विवेदी, पं० महादेव प्रसाद पाठक, स्वामी जयरामगिरि, पण्डित वशिष्टनारायण शुक्लका उद्योग सराहीय रहा। **फतेहपुर** जिलेके वैद्योंने बड़ा उत्साह दिखलाया। पं० महावीरप्रसाद शर्मा, पं० महावीरप्रसाद त्रिपाठी, ठाकुर शिवरतनसिंह रारी, पण्डित लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री, पं० बद्रीप्रसाद तिवारी, पं० रामगोपाल मिश्र तथा पं० रामनिधि मिश्रने अच्छा उद्योग किया। **बांदा** जिलेके वैद्योंने अपने जिलेको सबसे ऊपर रखनेके लिये बड़ा प्रयत्न किया। पण्डित नारायणदत्त बुधौलिया, हकीम मनमोहनलाल, पं० मोहनलाल पाण्डेय, सेठमूलचन्द्रजी, पण्डित कृष्णदत्तमिश्र, वैद्यराज कालूरामजी और उनके भाई श्री रामसेवक जीने अच्छा प्रयत्न किया। **फर्रुखाबाद** में श्री हरिजू वैद्य और पं० जगन्नाथप्रसाद त्रिपाठीने उत्साहके साथ कार्यारम्भ किया। **इटावा** जिलेमें औरैयाके वैद्य भाइयोंने विशेषकर पं० विष्णुकुमार वाजपेयी जीने और इटावाके पं० रामनाथ शास्त्री और पं० विश्वेश्वर दयालु जीका उद्योग सराहनीय रहा। **झांसीमें** पं० रामगोपाल शास्त्री के उद्योग और पं० रामनारायण जी वैद्यशास्त्रीकी उदारताने अच्छा काम किया। **जालौन** जिलेके मन्त्री श्री गोविन्दराम स्वामी जीने प्रारम्भिक उद्योग अच्छा किया। **हमीरपुर** जिलेमें पं० वैद्यनाथ शास्त्री, श्री छविलाल शिवहरे महोबा, श्री बद्रीप्रसाद जी कुलपहाड़, पं० सरयूप्रसाद द्विवेदी, पं० राजेन्द्रचन्द्र शुक्ल और कुवर रणजीत सिंह खरेलाके उद्योगसे सफलता मिली। **नैनीतालमें** पं० सीतावरजी पन्त और ठाकुर गंगासिंह जीने कार्यारम्भ किया। **गढ़वाल** जिलेमें पं० ईश्वरी-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

दत्त वैद्य भूषणके परिश्रमसे अच्छी सहायता मिली। **बनारसमें** पण्डित शिवदत्तजी शुक्लके उद्योगसे सफलता मिली। **मिर्जापुर** जिलेने सबसे पहले कार्यारम्भ किया। पं० सूर्यबली द्विवेदी, पण्डित संकटा प्रसाद त्रिपाठी और पं० चन्द्रदत्त जी त्रिपाठीके उद्योगसे सफलता मिली। **जौनपुर** में मन्त्री ठाकुर राजकिशोर सिंह जी की प्रेरणा कारगर रही। **गाजीपुर** में पं० लालजी शास्त्री चतुर्वेदी और कविराजप्रकाशचन्द्रजीके उत्साहसे उस जिलेके वैद्य उत्साहित हुए। **गोरखपुरकी** जिला वैद्यसभाने एक आदर्श ढंगसे सहायता एकत्र की। पण्डित श्रीपतिशर्मा-जीका उद्योग सफल रहा। आपका उद्योग देवरिया जिलेमें भी रहा। **आजमगढ़** जिलेका प्रयत्न कमजोर रहा। पं० यमुनाप्रसादजी पाण्डेय और पं० कृष्णानन्द पाण्डेय के उद्योगसे कुछ होगया। **आगरे** जिलेमें वैद्य हरिनारायण जी रोहतगीने उत्साहसे कार्यारम्भ किया। हकीम गुलजारीलाल जीने भी प्रयत्न किया। **अलीगढ़** जिला सम्मेलनका सफल उद्योग प्रशंसनीय रहा। गुरुदत्त जी शास्त्री, पं० रामचन्द्र शास्त्री और वार्ष्णेयजीकी कृपासे कुछ हुआ है; किन्तु अभी शहरके वैद्योंकी सहायता प्राप्त होनी है। **मेरठमें** पं० सत्यव्रत प्रेमी और पं० गणेशदत्त जीके भ्राताजीसे अच्छी सहायता मिली है। हरिद्वारमें पण्डित मुकुन्दीलालजी द्विवेदी, ऋषिकेशमें स्वामी दया-निधिजी और **देहरादूनमें** पण्डित धर्मस्वरूप रतूड़ी तथा स्वामी सन्तोषानन्दजीकी सहायता अच्छी रही! **बरेलीमें** पण्डित मदनमोहन शास्त्री जीने बड़ा उद्योग किया। **मुरादाबादमें** श्री विष्णुकुमार जीने निराशामें आशाका सञ्चार किया। **पीलीभीतमें** पं० विश्वनाथ

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

द्विवेदीजीकी सहायतासे थोड़ा काम हुआ । **बदायू में** श्री युक्त रामचन्द्र सिंह वर्माके उद्योगसे ही कुछ हो सका । **बिजनौरमें** पं० कृष्णदत्तजी नहटौर और पं० बोधराम जीने स्वयं प्रेरणासे उद्योग किया । **लखनऊमें** पं० योगीन्द्रचन्द्र शुक्लके उद्योगसे कुछ काम हुआ । **रायबरैली** जिलामें पण्डित मार्तण्डदत्तजी द्विवेदी, पं० रामकिशोर पाण्डेय और पण्डित बद्रीनाथ त्रिवेदीजीका उद्योग सराहनीय रहा । **सीतापुरमें** हकीम श्री शिवदयालु जी गुप्त और पण्डित योगीन्द्र दत्त त्रिपाठी तथा आयुर्वेदरत्न सेवकरामजी गुप्तके सहयोगसे प्रभावपूर्ण सहायता मिली । **हरदोईके** वैद्य सम्मेलनमें पं० मन्नालाल जी पाण्डेय और पण्डित राजेश्वर प्रसाद मिश्रके प्रभावसे सहायता मिली । **लखीमपुर खीरीमें** पं० बालादीन बाजपेयी, पं० अम्बिकाप्रसाद मिश्र तथा पं० अनन्तदेव जीसे अच्छी सहायता मिली । **प्रतापगढमें** तारबाबू पं० रामनरेश मिश्र और प्रिंसपल पं० हरिनारायण शर्माने आरम्भिक उद्योग किया । अतएव इन सभी सज्जनोंके प्रति, मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूं । यदि शेष जिलोंके वैद्य बन्धु स्वयं प्रेरणासे सहायता भेज दें तो बड़ा उपकार हो ।

राजपूतानामें—स्वामी मंगलदेव जीने हाथ लगाया है ।

बिहारमें पण्डित मुक्तिनाथ झा दरभंगा, पण्डित रामदेव ओझा मुजफ्फपुर, पण्डित श्री कान्तमिश्र जहानाबाद गया और पं० रामरक्ष पाठक जीके प्रोत्साहनसे बेगूसरायमें काम हुआ है । आरा-जिलेमें पं० गिरिजादत्त पाठकने स्वयं उदाहरण उपस्थित किया है । पं० नन्दकिशोर मिश्र जीसे अभी विशेष आशा है । **मध्यप्रदेशमें** सबसे पहले बिलासपुर जिलेने कदम बढ़ाया है । श्री

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शान्तिस्वरूप मिश्र चांपा, पं० तीर्थप्रसाद पाण्डेय कोरिया और पं० राजकुमार त्रिपाठीका उद्योग सराहनीय रहा है। जबलपुरमें पं० भिकाजी विनायक डेग्वेकरने सहायता। एकत्र कर भेजी है। **नागपुरमें** पं० शिवकरणशर्मा छांगाणी, पं० गुलराजशर्मा मिश्र और पं० केदारनाथ जीके उद्योगसे सहायता प्राप्त हुई है। **मध्यभारतमें** उज्जैनके पं० वासुदेव शास्त्रीजीने सहायताके लिये उद्योग किया है। **बम्बईमें** पं० वामनराव दीनानाथ व्यास जीने सहायता संग्रहकर भेजवायी है। **महाराष्ट्रमें** जो कुछ हो सका है वह आयुर्वेद पत्रिका के सम्पादक पण्डित विन्दुमाधव शास्त्रीजीके उद्योगसे ही हुआ है। **हैदराबादमें** पं० गयाप्रसादजी शास्त्री, पं० गोवर्धनशर्मा और पं० राधाकृष्णजी द्विवेदीके प्रयत्नसे सहायता मिल सकी है। आपने इन सब उद्योगी भाइयोंको कृतज्ञता पूर्वक हम धन्यवाद देते हैं। जिन प्रान्तोंमें अभी काफी सहायता नहीं मिली और जिन प्रान्तोंमें अभी तक इस कार्यमें प्रोत्साहन नहीं प्रकट किया गया, वहां भी स्वयं प्रेरणासे वैद्यवन्धु सहायता प्रेषित करनेकी कृपा करें और वहांके वैद्य लोगोंमें कर्तव्यज्ञान जाग्रत करनेकी कृपा करें।

दानदाताओंकी नामावली

अभी तक एक हजार या इससे अधिककी सदायता देकर कोई सज्जन **प्रतिष्ठापक** सदस्य नहीं बने।

संरक्षक

१ आयुर्वेद वृहस्पति, आयुर्वेद पञ्चानन श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वैद्य, साहित्यवाचस्पति प्रयाग (पुरस्कार प्राप्त धन समितिको दानस्वरूप लौटानेके कारण)

२ आयुर्वेद बृहस्पति पं० रामरत्नपाठक आयुर्वेदाचार्य, वेगूसरांय, (पुरस्कारका धन लौटाने के कारण)

३ पं० रामनारायण शर्मा वैद्यशास्त्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवन झांसी

स्थायी सदस्य

जिन सज्जनोंने १००) या इससे अधिक दान दिया है, वे स्थायी सदस्य निर्वाचित हुए हैं।

१ श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल प्रयाग

२ श्रीमती चन्द्राणी देवी वैद्या मिश्रिख सीतापुर

३ आयुर्वेदरत्न श्री सेवकराम गुप्त महौली सीतापुर

४ कविराज हरिरञ्जन मजूमदार हौज कटोरा काशी

५ बाबू रामशरण गुप्त अरविन्द फार्मसी कर्वी—बांदा

६ पण्डित गयाप्रसाद चौबे रईस खुटला, बांदा

७ पण्डित ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य अमृतधारा देहरादून

८ आयुर्वेदमार्तण्ड पं० यादवजी त्रीकमजी आचार्य आयुर्वेद वाचस्पति, गायवाड़ी, बम्बई,

९ पं० जुगतराम शर्मा झंडू फार्मसी बम्बई (अब स्वर्गवासी हो गये)

१० पं० गङ्गाधर पुराणिक वैद्य पनवेल बम्बई

११ आ० वृ० वैद्यरत्न पण्डित रामप्रसाद राजवैद्य पटियाला।

१२ आयुर्वेदाचार्य पण्डित पाण्डुरङ्ग शिवराम शेंड्ये वैद्य दमोह २००)

१३ वैद्यभास्कर श्री बांकेलालजी गुप्त विजयगढ़ अलीगढ़

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१४ पण्डित रामकिशोर शुक्ल रईस (शुक्लजी द्वारा) सिकन्दराबाद हैदराबाद (स्वर्गवासी हो गये)

१५ आयुर्वेदरत्न पण्डित यमुनापाण्डेय वैद्य ऐलबल आजमगढ़

१६ पण्डित गिरिजादत्त पाठक आयुर्वेदोपाध्याय वक्सर आरा

१७ आयुर्वेदाचार्य पं० नन्दकिशोर शर्मा जयपुर

१८ पण्डित बद्रीप्रसाद कृष्णदत्त मिश्र वैद्य राजापुर बांदा

१९ कविराज प्रतापसिंह वैद्यरत्न हिन्दूविश्वविद्यालय काशी

२० आयुर्वेदशास्त्राचार्य पण्डित दुर्गादत्त शास्त्री काशी

२१ आयुर्वेदाचार्य पं० ब्रजमोहन दीक्षित ए० एम० एस० ज्ञानवापी काशी

२२ श्री देवी शरण गर्ग धन्वन्तरि वैद्य विजयगढ़ अलीगढ़

२३ आयुर्वेद धन्वन्तरि पं० देवेन्द्र कौशिक रामाश्रम मेरठ

२४ आयुर्वेदाचार्य स्वामी जयराम दासजी राजवैद्य जयपुर

२५ माननीय राजवैद्य राजगुरू भट्टारक श्री उदयचन्द्रजी महाराज जोधपुर

२६ आयुर्वेदाचार्य पं० रामदेव ओझा वैद्य सरैयांगञ्ज मुजफ्फरपुर

२७ आयुर्वेदवृहस्पति पं० गोवर्धन शर्मा छांगाणी सीतावर्डी नागपुर

२८ आयुर्वेदवृहस्पति पं० रामेश्वर शुक्ल शास्त्री राजवैद्य लाला का बाजार ग्वालियर

२९ मन्त्री आयुर्वेदप्रचारिणी सभा जोधपुर

३० मन्त्री राजपूताना प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन जयपुर

३१ मन्त्री सद्वैद्यसभा जयपुर

३२ वैद्य गोविन्द कृष्ण सांडू सांडूब्रादर्स चेम्बूर ठाकुरद्वाररोड

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२१ आयुर्विज्ञानाचार्य पं० गयाप्रसाद शास्त्री हैदराबाद (पूरा कर रहे हैं।)

इक्कावन रुपये या अधिक वाले दानदाता

५१) श्रीमान महन्त लालदासजी महाराज मठ शिवरी नारायण विलासपुर

५१) पण्डित राधागोविन्द मिश्र वैद्य इंजेक्शन झांसी
राजवैद्य बद्रीप्रसादजी „ कुलपहाड़ हमीरपुर
पण्डित सरय सहाय द्विवेदी रईस जमीनदार (शुक्लजी द्वारा) खण्डेह हमीरपुर
बाबू बैजनाथ प्रसाद गुप्त (शुक्लजी द्वारा) राजापुर बांदा
पण्डित रामसनेही नर्मदाप्रसाद मिश्र वैद्य „ „
„ चन्दीदीन देवीदीन वाजपेयी „ बड़ाबाजार बांदा
सेठ मूलचन्द जैन एम० ए० सुखराम रामचन्द्र रईस कर्वी „
आयुर्वेदाचार्य पं० उमाशङ्कर वाजपेयी ए० एम० एस० अस्सी बनारस
पण्डित सङ्कटाप्रसाद शीतला प्रसाद तिवारी वैद्य मिर्जापुर
बाबू सियाराम वैश्य „ „
महन्त सोमगिरिजी महाराज हरिद्वार सहारनपुर
पण्डित जगन्नाथप्रसाद वैद्यराज बाबूगञ्ज लखनऊ
„ गणेशप्रसाद वाजपेयी वैद्य माडलहौस „
„ रामेश्वरप्रसाद वैद्य पलियाखुर्द महमूदाबाद सीतापुर
„ शिवशङ्कर उपाध्याय नेत्रचिकित्सक गुदड़ीबाजार समस्तीपुर, दरभङ्गा
आयुर्वेदाचार्य पं० पुरुषोत्तम शास्त्री हिर्लेकर वैद्य अमरावती

५१ राजवैद्य गजानन्दजी सांवरेकर नमकमण्डी उज्जैन

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

५०) पं० बालमुकुन्द शर्मा राजवैद्य आयुर्वेदभवन झालरापाटन
५१) वैद्यभूषण शशिकान्त भूलाभाई वैद्य मन्त्री वैद्य सभा अहमदाबाद
राजवैद्य शिवशङ्कर बाबाभाई अचलजी बम्बई

पचीस रुपये से उनचास रुपये तकके दानदाता

५४) पण्डित रामावतार शर्मा वैद्य पानदरीबा प्रयाग
,, श्री राम शर्मा ,, जार्जटौन ,,
,, चन्द्रशेखर तिवारी ,, बिगहनी सिरसा इलाहाबाद
,, वशिष्ठ नारायण शुक्ल ,, परवा ,, ,,
,, नर्मदाप्रसाद पाण्डेय ,, बेलवार हनुमानगञ्ज ,,
,, वामनजी शर्मा ,, लोकनाथ प्रयाग
बाबू शम्भूलाल केसरवानी ,, सहसोंबाजार इलाहाबाद
पण्डित रामचन्द्र पाण्डे वैद्य नन्दुला जंघई इलाहाबाद
ठाकुर जगतधारी सिंह वैद्य विहरहा कोरांव इलाहाबाद
पण्डित दयासिन्धु पाण्डेय राजवैद्य गाजीपुर फतेहपुर
,, सत्यनारायण शास्त्री वैद्य गोपालपुर घाता ,,
ठाकुर साधुसिंह कछवाहा वैद्यराज कन्नौज फर्रुखाबाद
पण्डित विष्णुकुमार बाजपेयी वैद्य औरैया इटावा
,, विद्याधर मिश्र ,, ,, ,,
आयुर्वेदमहोपाध्याय पं० विश्वेश्वर दयालु द्विवेदी वैद्य बरालोकपुर
पण्डित प्रभुदयालु पाण्डेय राजवैद्य औरैया इटावा
७१) ,, बनवारीलाल जी लाहौरी वैद्य सदरबाजार झांसी
श्री छविलाल शिवहरे ,, महोबा हमीरपुर
,, हीरालाल चौरासिया ,, ,, ,,
श्री मोहनलाल पाण्डेय आयुर्वेदाचार्य वैद्य राजापुर बाँदा

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

,, नारायणदत्त बुधौलिया	वैद्य	कर्वी	बांदा
,, अवध विहारी	,,	तरौंहा	,,
,, रामकृष्ण मिश्र जगदम्बा	,,	कर्वी	,,
,, छोटेलाल मिश्र आयुर्वेदाचार्य	,,	,,	,,
,, स्वामी सहादेव श्याम मौर्य	,,	,,	,,
,, स्वामी सच्चिदानन्दजी महाराज	,,	चित्रकूट	,,

३५) सेठ लक्ष्मीचन्द्र बाबूलाल गुलाबचन्दजी (शुक्लजी द्वारा) बड़ाबाजार बांदा

३१) ,, गुलाबचन्दजी जैन (शुक्लजी द्वारा) बांदा

२५) ,, भजनलालजी रईस (शुक्लजी) बड़ाबाजार बांदा

,, बसन्तलालजी मुरलीधर ,, ,, ,,

वैद्य राज कालूरामजी गुप्त बुन्देलखण्ड फार्मेसी ,, ,,

आयुर्वेदशास्त्राचार्य पं० सीतावर पन्त नैनीताल

पण्डित ईश्वरीदत्त शर्मा वैद्यभूषण कपोलासेरा भवन गढ़वाल

आयुर्वेदाचार्य गङ्गासहाय पाण्डेय ए० एम० एस वैद्य बनारस

,, पं० शिवदत्त शुक्ल ,, ,, ,,

वैद्यराज सरयूप्रसाद ऊमर वैद्य मिर्जापुर

मन्त्री जिला वैद्य सभा बलिया

५०) स्वामी वेदानन्दजी उड़ियाबाबा वारीग्राम सिकरीगञ्ज गोरखपुर

२५) श्री राघवेन्द्रप्रसाद शर्मा	वैद्य	मुंडेराबाजार	,,
,, गोमतीप्रसाद पाण्डेय	,,	महुबआ	,,
,, श्रीपति शर्मा	,,	रायगञ्ज	,,
,, रामलगन शर्मा	,,	जगतपुर	,,
,, कविराज कुंवर सुदामासिंह	,,	मुंडेराबाजार	,,
,, अखिलानन्द	,,	चारपान	,,
,, श्रीधर शुक्ल	,,	रेतीचौक	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री जगदीशप्रसाद शर्मा	वैद्य	सिसवाबाजार	गोरखपुर
,, बदरीप्रसाद जोशी	,,	उर्दू बाजार	,,
,, महाबीर प्रसाद गुप्त	,,	ब्रजमनगञ्ज	,,
,, हनुमानप्रसाद त्रिपाठी	,,	भोलाखरग	,,
,, रघुनाथ प्रसाद	,,	मियांबाजार	,,
,, घनश्यामदास जालान	,,	साहबगञ्ज	,,
,, गौरीशङ्कर मिश्र एडवोकेट	,,	बेतियाहाता	,,
,, नन्दलाल सहगल	,,	वेस्टइण्डिया कम्पनी	,,
,, गणेशदत्त	,,	अलीनगर	,,
,, मदनगोपाल मिश्र	,,	हजारीपुर	,,
,, आत्रेय मिश्र	,,	पाली	,,
,, श्रीकृष्णपाण्डेय	,,	पौलीमलखानसिंह	,,
पण्डित रामचन्द्र शर्मा वैद्य	,,	अलीनगर	,,
,, नन्दलाल द्विवेदी	,,	शुक्ल पुरी	,,
बाबू रामनरेश वर्मा	,,	मुइधरा (स्वर्गवास हो गया)	
२६) पण्डित राजदेव त्रिपाठी	,,	चैनपुर	देवरिया
२५) ,, जगन्नारायण शर्मा	,,	बतरौली	,,
,, वेणीमाधव शर्मा	,,	महुई दुबे	,,
,, ठाकुर प्रसाद मिश्र	,,	कुकरौली	,,
,, गयाप्रसाद सिंह	,,	मुजहनादास	,,
२५) हकीम युसुफ मुहम्मद कुरेसी	वैद्य	हाटा	देवरिया
पण्डित शिवपूजन द्विवेदी	,,	गडेर	,,
,, कृष्णदेव त्रिपाठी	,,	सतरांव	,,
आयुर्वेद विशारद गुलजारी लाल	,,	फीरोजाबाद	आगरा
३०) पं० गुरुदत्त जी वैद्यशास्त्री	,,	विजयगढ़	अलीगढ़
२५) पं० रामगोपाल शर्मा आयुर्वेदाचार्य	वैद्य	स्वास्थ्यरक्षक	मथुरा

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आयुर्वेदाचार्य पं० गणेशदत्त वैद्यशास्त्री ,, गुदड़ी बाजार मेरठ
,, ,, कृष्णलाल वाजपेयी ,, बुढ़ाना दरवाजा ,,
स्वामी नाथूराम जी ,, महावीर औषधालय ,,
लाला नानकचन्द वैद्यराज ,, दादरी बुलन्दशहर
४१) पण्डित रघुवीरशरण शर्मा ,, रसायनशाला ,,
५०) कविराज मणीन्द्र कुमार मुकर्जी ,, ऋषि कुल हरिद्वार
(स्वर्गवासी)
महन्त शान्तानन्द नाथजी श्रवणनाथ मन्दिर हरिद्वार (स्वर्गवास)
ऋषिकुल आयुर्वेद कालेज पंचमवर्षके विद्यार्थी हरिद्वार
सहारनपुर (सन् ४६ ई०)
स्वामी सन्तोषानन्दजी महाराज वैद्य देहरादून
पण्डित मित्रसेन जैन वैद्यरत्न ,, ,,
कविराज धर्मस्वारूप रतूड़ी वैद्यवाचस्पति ,,
३६) हकीम रामजी अग्रवाल इण्डियन दवाखाना बरेली
(स्वर्गवास) (२५ x ११)
२५) ठाकुर रामचन्द्र सिंह जी वैद्यविशारद मित्रबन्धुऔषधालय
पं० मार्तण्डदत्त द्विवेदी राजवैद्य वेलीगञ्ज रायबरेली
पण्डित ब्रह्मानन्द वाजपेयी वैद्य चमरौली उन्नाव
आयुर्वेदरत्न पण्डित योगीन्द्रदत्त त्रिपाठी वैद्य जेलरोड सीतापुर
पण्डित देवदत्त शुक्ल वैद्य मोतीपुर, बिलरावां लखीमपुर खीरी
,, लक्ष्मण प्रसाद ,, बालूडीहा ,,
बाबू शान्तिस्वरूप चोपड़ा वैद्य वर्मा फार्मेसी गोला ,,
पण्डित ज्वाला प्रसाद मिश्र ,, सौठना—मलिया ,,
,, रामस्वरूप दीक्षित ,, आरोग्य मन्दिर लखीमपुर
पण्डित अनन्तदेव जी दीक्षित वैद्य शास्त्री देशोपकारक लखीमपुर
पण्डित ज्ञानदत्त मिश्र वैद्य ज्ञानपुर बनारस स्टेट

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री रामदास वैद्यशास्त्री ज्ञानपुर बनारसस्टेट
पं० मुक्तिनाथ झा आयुर्वेदाचार्य समस्तीपुर दरभंगा
बाबू अयोध्या प्रसाद साह वैद्य ,, ,,
४०) पं० श्रीकान्त मिश्रवैद्य मन्त्री जहानाबाद गया
२५) आयुर्वेदाचार्य पं० गुलराज शर्मा नयी शुक्रवारी नागपुर
श्री इन्दुभूषण भंगारे महल ,,
आयुर्वेदाचार्य पं० दीनदयालु मिश्र वैद्य इतवारी
पं० ब्रह्मानन्द जी वैद्य डेराबाबा जयमालासिंह अमृतसर
श्री अमृतलाल जैन वैद्य महावीर फार्मेसी उज्जैन
पण्डित गोकुलचन्द शर्मा वैद्यराज झालरापाटन
राजवैद्य दामूभाई रामप्रसाद जी बम्बई
वैद्य हिम्मतलाल त्र्यम्बकलाल मुनि ,,
,, सीताराम मिश्र ,,
,, कन्हैयालाल भेडा आयुर्वेदाचार्य कालबादेवीरोड ,,
चन्द्रभानु लक्ष्मीनारायण गुप्त वैद्य नागपल्ली बाजार हैदराबाद
पण्डित सूर्यप्रसाद अग्निहोत्री वैद्य सिकन्दराबाद हैदराबाद
मुनि श्री देवेन्द्रसागर जी महाराज सरदारमल सुगनमल सुलतान बाजार हैदराबाद
पं० रामकृष्णैया शास्त्री वैद्य काछीगुडा सुलतान बाजार
हकीम श्री नासिरुद्दीन अहमद खां बदायूँनी युनीवर्सिटी रोड हिदायतनगर हैदराबाद
आयुर्वेदाचार्य पं० राधा कृष्ण द्विवेदी प्रिंसपल ,,
आयुर्वेद विशारद पं० गोवर्धन शर्मा वैद्य बेगमबाजार ,,
वैद्य राय परमेश्वरी प्रसादजी सरकारी दवाखाना सिकन्दराबाद
श्री परशुरामजी co माणिक जी bhallakere मैसूर
आयुर्वेदाचार्य पं० एन० माधव मेनन १०७ ब्रूडवे मद्रास

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ग्यारह रुपयेसे चौबीस रुपये तकके दानदाता

२१) पण्डित सूर्यनाथ नागर वैद्य लूकरगंज इलाहाबाद
महन्त कृष्णगोपाल जी महाराज मलखानपुर ,, [स्वर्गवासी]
आयुर्वेदाचार्य पं० ब्रह्मानन्द पाण्डेय ए० एम० एस० प्रयाग
पण्डित देवकीनन्दन पाण्डेय वैद्य जानसेनगञ्ज ,,
,, नवरतन जी आयुर्वेदालंकार गुरुकुल फार्मेसी ,,
,, सिद्धिनाथ दीक्षित वैद्य दारागंज ,,
,, रामभरोसे शुक्ल ,, ,, ,,
,, बदरीनारायणमिश्र ,, बाबूपुर साथर सरांयममरेज इलाहाबाद
,, ताराशङ्कर ,, ,, दारागंज प्रयाग,
,, श्यामनारायण शोकहा ,, ,, ,,
आयुर्वेदाचार्य पं० रुद्रमणि त्रिपाठी ए० एम० एस० ,, ,,
पण्डित राधेश्याम गौड़ वैद्य विशारद त्रिपौलिया ,,
स्वामी जयरामगिरि वैद्यराज दुर्वासा हंडिया इलाहाबाद
आयुर्वेदरत्न पण्डित वेणीमाधव द्विवेदी वैरना प्रयाग
पण्डित वासुदेव उपाध्याय वैद्य श्री नाथऔषधालय इलाहाबाद
,, कृष्णानन्द मिश्र वैद्य पण्डितका पुरवा ,, ,,
श्री मन्नीलाल कविवंशी ,, त्रिपौलिया प्रयाग
२०) पण्डित रामदेवद्विवेदी वैद्य चौहारी भारतगंज इलाहाबाद
२१) बाबू संगमलाल रईस शहजादपुर इलाहाबाद [शुक्लजी]
नेमिचन्द्र जैन वैद्य दारानगर इलाहाबाद
पण्डित राधेरमण ,, ऐलई फतेहपुर
,, गयाप्रसाद त्रिवेदी वैद्य वरम्हा ,,
ठाकुर जंगबहादुर सिंह ,, बुदवन ,,
बाबू रामप्यारे लालजी ,, खागा ,,

७

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

बाबू शिवनारायण अग्रवाल रईस किशुनपुर ,, [शुक्लजी]
,, शिवनाथ प्रसाद गुप्त राजवैद्य खैरई ,,
१५) ठाकुर सूर्यपाल सिंह वैद्य गनही ,,
२०) बाबू छोटेलाल जैन ,, सब्जी मंडी इटावा
११) पण्डित बाबूराम त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य फीलखाना कानपुर
२१) ,, रामेश्वर दयालु द्विवेदी वैद्य औरैया इटावा
११) लाला जयनारायण प्रसाद ,, नयीबस्ती झांसी
श्री हरीशरण शर्मा ,, चिरगांव ,,
,, राधाकृष्ण श्री वास्तव ,, मोठ ,,
,, शिवकुमार मिश्र ,, ,, ,,
,, महाराम द्विवेदी ,, चिरगांव ,,
१५) ,, गङ्गाप्रसाद गुप्त ,, पसरटबाजार ,,
,, वैद्यनाथ अवस्थी शास्त्री ,, महोबा हमीरपुर
,, नन्हेलाल जी ,, ,, ,,
लाला रुद्रप्रसाद ,, ,, ,,
२१) कुँवर रणधीर सिंह ,, खरेला ,,
११) पण्डित रुद्रनाथ शुक्ल ,, राजापुर बांदा
,, रामप्रताप करौंदी ,, ,, ,,
१५) हकीम मनमोहन लाल ,, कर्वी ,,
श्री रामकुमार ,, ,, ,,
२१) राजवैद्य अम्बिकाप्रसाद मौहारी ,, कटरा ,,
२०) कविराज बी० डी० देशपाण्डेय रानीखेत अलमोड़ा
११) आचार्य वालकृष्ण अमर जी पाठक प्रिंसपल बनारस [स्वर्गवास]
२१) बाबू देवीप्रसाद अग्रवाल वैद्य मिर्जापुर
११) पण्डित शिवनाथ तिवारी ,, ,,
,, अम्बिकाप्रसाद ,, ,, ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पण्डित बलदेव प्रसाद तिवारी वैद्य मिर्जापुर
पं० सूर्यबली द्विवेदी ,,
,, रमापति शर्मा ,,
,, सुधाकर ,, ,,
,, बाबू केदारनाथ जायसवाल ,,
१३) जिलावैद्यसम्मेलन ,,
११) श्री रघुनाथ प्रसाद ऊमर ,,
१५) पण्डित राजवंश पाण्डेय ,, करमहामहन्त देवरिया
११) श्री रामस्वरूप वैद्य फीरोजाबाद आगरा
,, रामस्वरूप उपाध्याय ,, ,, ,,
२१) पं० मुकुन्द हरिशास्त्री मुकुन्दसदन अलीगढ़
,, हरिनारायण शर्मा हाथरस ,,
११) ,, बाबूराम मिश्र वैद्य हापुड़ मेरठ
महन्त घनश्याम गिरिजी महाराज हरिद्वार सहारनपुर
स्वामी रामप्रकाशजी वैद्य कनखल ,,
श्री उमाकान्त शर्मा ,, हरिद्वार ,,
सेठ मदनलाल बुधिया ,, ,,
कविराज अमरनाथ औदीच्य वैद्य देहरादून
पण्डित सुरेशचन्द्र ,, ,,
१५) आयुर्वेदाचार्य स्वामी दयानिधिजी ऋषिकेश
११) श्री पुरुषोत्तम नारायण रामचन्द्र अग्रवाल बरेली
१४) पं० हरिशङ्कर शंखधार वैद्य पं० मदनमोहन ,,
२१) श्री पुत्तूलालजी साहूकार वैद्य पीलीभीत
११) ,, मूलचन्द जोशी विद्यालंकार आयुर्वेदपरिषद हरगनपुर बिजनौर
२०) ,, रामगोपाल प्रधान तहसील वैद्य सभा नजीबाबाद बिजनौर
११) ,, चिदानन्द पाण्डेय आयुर्वेदाचार्य अमीनाबाद लखनऊ

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१५)	श्री श्यामलाल जी वैद्य हैदरगंज		लखनऊ
११)	,, बैजनाथ वैद्यराज कालीबाजार		,,
	,, योगीन्द्रचन्द्र शुक्ल आयुर्वेदाचार्य रस्तोगी कालेज		,,
	,, आयुर्वेदाचार्य पं० सरजूप्रसाद त्रिपाठी वैद्य यहियागंज		,,
	,, बाबा श्यामदत्त वैद्य रसूलपुर गोंडा		रायबरैली
	,, रामदुलारे बाजपेयी वैद्य मदहखेड़ा पडरी,		उन्नाव
	,, सोंहनलाल शर्मा	,, कुन्देरा औरङ्गाबाद	सीतापुर
	,, रघुनन्दनप्रसाद	,, महौली	,,
	,, महेशप्रसाद	,, ,,	,,
१५)	बाबू गार्गीदीन ज्वालाप्रसाद गुप्त महौली		,,
२०)	पं० राजेश्वर प्रसाद	,, पाली	हरदोई
११)	,, रामप्रसाद जी	,, पंचरत्न	लखीमपुर खीरी
	,, मोहनलाल कोठारी	,, देशनोक	बीकानेर
	,, महाबीर मिश्र	,, उजियारपुर	समस्तीपुर, दरभङ्गा
	,, शिवनारायण चतुर्वेदी ,,	,,	,,
१२)	,, वासुदेव झा	,, बिखपुर	,, ,,
११)	बाबू गुलाबचन्द साह	,,	,, ,,
	पं० सदानन्द पाठक	,, मालिनगर	,, ,,
	,, रामसागर मिश्र	,, डटिया	,, ,,
	श्री सरयू चौधरी	,, चानचौर	,, ,,
	,, लक्ष्मण चौधरी	,, अकहा	,, ,,
	,, गङ्गाप्रसाद पाठक	,, बरौनी	मुंगेर
	आयुर्वेदाचार्य पं० राजकुमार तिवारी प्रधानवैद्य		बिलासपुर
२१)	पण्डित मङ्गलदत्त शास्त्री श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन		नागपुर
११)	,, गङ्गाधर शास्त्री	,,	,,
	आयुर्वेदाचार्य पण्डित केदारनाथ शर्मा वैद्य सीतबर्डी		,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

११) आयुर्वेद विशारद पं० रामचन्द्र शर्मा विडलामिल्स दिल्ली
श्री रमणलाल जी वैद्य भिषग्रत्न उज्जैन
,, मन्नूलाल जोशी ,, सराय गोंवर्धन ,,
आयुर्वेदाचार्य पं० वासुदेव शास्त्री मेहता नयीपेठ ,,
१५) पं० रघुनाथ शास्त्री तांवेकर वैद्य बम्बई
११) वैद्य वामनराव दीनानाथ व्यास ,,
डाक्टर दारारुस्तम जी हकीम ,,
पण्डित बेणीमाधव शास्त्री जोशी वैद्य ,,
डाक्टर र० कृ० केसकर हैदराबाद
प० रामजी शास्त्री वैद्य चारकमान ,,
,, रामचन्द्र व्यास ,, औ० ,,
डाक्टर नारायण दत्त द्विवेदी प्रोफेसर आयुर्वेद कालेज ,,

पांच रुपयेसे दश रुपये तकके दानदाता

५) पं० रामयतन द्विवेदी वैद्यहरदुआ, करछना, इलाहाबाद
,, रामाचल शुक्ल वैद्य महमदपुर, सिकन्दरा ,,
,, मातृदत्त पाण्डेय ,, बेलवार हनुमानगंज ,,
,, रामनारायण दीक्षित वैद्यशास्त्री नैनी ,,
,, गंगाप्रसाद पाण्डेय आयुर्वेदरत्न लीलापुर, हनुमानगंज
,, रामेश्वर शुक्ल वैद्य पश्चिमसरीरा ,,
,, रामसनेही त्रिपाठी ,, वरुवा ,, ,,
,, संगमलाल मिश्र ,, इस्माइलगंज ,,
,, दुर्गादत्त शुक्ल वैद्य लिगदहिया करछना ,,
,, यज्ञदत्त पाण्डेय वैद्य सिकन्दरा ,,
,, रामनिधि मिश्र वैद्यशास्त्री झूंसी ,, (खागा फतेहपुर)
मुंशी लालबहादुर चिकित्सक विशारद खुभवा शङ्करगढ़ प्रयाग
नेत्रचिकित्सक रामनारायण जी वैद्य बाबा जीका बाग प्रयाग

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आयुर्वेदरत्न पं० द्वारका प्रसाद दीक्षित मधवापुर प्रयाग

ठाकुर भानुप्रताप सिंह वैद्य सुन्दरपुरा लहार इलाक्षबाद (भिण्ड ग्वालियर)

पण्डित सूर्यदीन शास्त्री वैद्य वैशकांटी, करारी इलाहाबाद

,, सरयूप्रसाद मिश्र ,, शमसाबाद ,,

आयुर्वेदरत्न पं० जान्हवीशंकर शुक्ल वैद्य मधवापुर प्रयाग

पं० रामनरेश दुबे चिलरा वैद्य बरौत इलाहाबाद

,, शिवभूरत मिश्र ,, धरांबनारा नहवाई ,,

,, चन्द्रशेखर दुबे ,, नीवी सरायममरेज ,,

श्रीमती सुखदेवी शुक्ल [जगन्नाथप्रसाद शुक्ल सम्मेंलनमार्ग प्रयाग]

बाबू काशीप्रसाद श्री वास्तव कमलानेहरूरोड़ ,,

कविराज भोलानाथ यादव वैद्य कुटरा प्रयाग

,, प्रयागनारायण पाठक वैद्य दारागंज प्रयाग

आयुर्वेदरत्न पं ठाकुरप्रसाद चतुर्वेदी वैद्य अलोपीबाग प्रयाग

बाबू गुरु प्रसाद कसौधन वैद्य कटरा प्रयाग

कविराज ताराचरण भट्टाचार्य ,, ,, ,,

आयुर्वेदवाचस्पति महेन्द्रनाथपाण्डेय वैद्य ,, ,,

आयुर्वेदरत्न पण्डित नरोत्तम मालवीय ,, ,,

श्री ललईराम वैद्य पूरेसोना जमुनीपुर हनुमानग. इलाहाबाद

६) ,, रामचन्द्र पाण्डेय वैद्य नन्दुला जंघई ,,

५) पण्ड़ित इन्द्रभूषण मिश्र वैद्य पूरागढ़वा हंडिया ,,

,, रामचन्द्र त्रिपाठी ,, अन्धावां, कुहियावां, मंझनपुर ,,

,, विश्वनाथ मिश्र ,, तेलियरगंज प्रयाग

आयुर्वेदाचार्य पं० देवनारायण मिश्र ए० एम० एस० कटरा ,,

पण्डित विश्वनाथ तिवारी वैद्य ,, ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पण्डित भानुदत्त तिवारी वैद्य अहियापुर इलाहाबाद
श्री वेणीमाधव प्रसाद ,, कर्णपुर ,,
,, मदनगोपाल तिवारी ,, कक्करहाघाट ,,
बाबू राधेश्याम ,, वेलवार हनुमानगंज इलाहाबाद
पण्डित राजनारायण ,, चनेथू जंघई ,,
बाबू शान्तिस्वरूप वार्ष्णेय वैद्य ऊंचामंडी प्रयाग (स्वर्गवास)
पण्डित अयोध्याप्रसाद त्रिपाठी ,, बादशाहीमंडी ,,
,, बांके विहारी शर्मा ,, बलुवाघाट ,,
बाबू चन्द्रिका प्रसाद वैद्य अतरसुइया ,,
७) पण्डित देवनारायण हीरालाल पाण्डेय दारानगर इलाहाबाद
५) मुंशी रामनारायण लाल वैद्य महगांव ,,
१०) पण्डित हरिहर प्रसाद मिश्र ,, रानीपुर शाहपुर ,,
५) ,, भगवानदीन त्रिपाठी ,, दुर्गापुर तिल्हापुर ,,
,, श्यामसुन्दर त्रिपाठी ,, करारी ,,
,, रामहित ,, ,, वैशकांढी करारी ,,
,, सुन्दरलाल ,, ,, ,, ,, ,,
७) पण्डित रामनरेश द्विवेदी वैद्य रायकापुरवा अटरामपुर ,,
,, रामकिशोर मिश्र ,, बादशाहीमण्डी प्रयाग
५) हकीम उमाशङ्कर सिनहा मोतसिमगंज प्रयाग
पं० रामदेव पाण्डेय वैद्य लकटहा करछना इलाहाबाद
,,यमुनाप्रसाद त्रिपाठी वैद्य लोठीडीह वीवीपुर ,,
बाबू देवीप्रसाद मेहरोत्र हकीमजी अतरसुइया प्रयाग
पं० शिवदत्त शुक्ल वैद्य शहजादपुर इलाहाबाद
,, भगवानदीन शर्मा ,, निमोहा कशिया ,,
,, नन्दकिशोर जी ,, कशिया कोखराज ,,
,, महादेवप्रसाद यज्ञदत्त पाण्डेय वैद्य भारतीभवन प्रयाग

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

बाबू रामेश्वरप्रसाद श्री वास्तव वैद्य साधोमंडी मुट्ठीगंज प्रयाग
पं० हीरामणि शुक्ल ,, कीटगंज ,,
,, अम्बिकाप्रसाद मिश्र ,, फतूहा हनुमानगंज इलाहाबाद
,, रामनाथ शुक्ल वैद्य वासुकी दारागंज प्रयाग
,, यज्ञनारायण तिवारी वैद्य डीहा करछना इलाहाबाद
,, महादेव प्रसाद मिश्र ,, कुढवा जंघई ,,
,, चन्द्रिकाप्रसाद त्रिपाठी वैद्य सैयदसरांवा ,,
,, रामकृष्ण द्विवेदी ,, पूरैमलेन आनापुर ,,
,,रमाकान्त पाण्डेय ,, कर्नलगंज प्रयाग
,, दूधनाथ मिश्र ,, नीवी सिरसा इलाहाबाद
,, राघवराम शर्मा ,, ओसा मंझनपुर ,,
,, गिरिधरदत्त शुक्ल ,, कण्टुनमेण्ट प्रयाग
,, यज्ञदत्त शर्मा ,, दारागंज ,,

६) आयुर्वेदविशारद बदरीप्रसाद तिवारी वैद्य बुदवन फतेहपुर (५+१)

५) डाक्टर रामकृष्ण वर्मा बी० एस० सी० जमुरांव फतेहपुर

१०) पण्डित शिवसागर शुक्ल वैद्य सरौली ,,
५) ठा० शिवशंकर सिंह ,, टेसाही ,,
पं० रामेश्वर प्रसाद ,, खागा ,,
,, शुकदेव प्रसाद ,, माझिलगांव ,,
,, ब्रजलाल जी ,, सेमौरी ,,
,, केदारनाथ शर्मा ,, हसवा ,,
,, केशवचन्द्र शुक्ल ,, डेंडासई ,,
,, चन्द्रपाल पाण्डेय ,, बुदवन ,,
,, शिवमोहनलाल दुवे ,, खागा ,,
स्वामी मगनानन्दजी सरस्वती वैद्य हथगांव ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पं० महावीर प्रसाद त्रिपाठी ,, किशुनपुर फतेहपुर
,, रामानन्द अग्निहोत्री ,, ,, ,,
,, गुरुप्रसाद ,, जमीनदार ,, ,, (शुक्लजी)
,, शिवमंगल मिश्र आयुर्वेदाचार्य वैद्य: गढ़ा ,,
बाबू श्रवणलाल अग्रवाल रईस किशुनपुर ,, (शुक्लजी)
,, मातादीन ,, ,, ,, ,, (शुक्लजी)
पण्डित ज्ञानेन्द्रदत्तत्रिपाठी गिरीन्द्रदत्त त्रिपाठी लखनऊ किशुनपुर
बाबू रामकुमार वैद्य किशुनपुर फतेहपुर
श्री बच्चूलाल वैद्य कोड़ा ,,
पं० केदारनाथ द्विवेदी ,, किशुनपुर ,,
ठाकुर शिवशङ्कर सिंह जी वैद्य टेसाहीबुजुर्ग ,,
मुंशी बनवारीलालजी पटवारी विजईपुर ,, (शुक्लजी)
ठाकुर जगदेव सिंह ,, ,,
पं० देवदत्त शर्मा वैद्य विजईपुर, फतेहपुर
श्री महादेव सिंह कुर्मी एकौरा ,, (शुक्लजी)
१०) ग्रामपञ्चायत भदौहा ,,
पण्डित मन्नीलाल वैद्य बिछियांवां फतेहपुर
ठाकुर विश्वेश्वर सिंह जी तेंदुवा ,,
पण्डित प्रतापनारायण मिश्र वैद्य भसरौल ,,
ठा० रामसिंह जी तेंदुवा ,,
,, रामअधार सिंह जी ,, ,,
,, रामकुमार सिंह थवई ललौली ,,
,, देवनारायण सिंह जी रारी ,,
पं० वृन्दावन जी वैद्य केवटमई ,,
चौधरी रामराज सिंह ,, सुथरापुर ,,
,, युवराज सिंह जमीनदार ,, ,,
चौधरी लाल प्रतापसिंह जी जमीनदार बेरंवां ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री महादेव प्रसाद जी	सेलाहा	फतेहपुर
ठाकुर जगपत सिंह सूबेदार	पुरइन	,,
पं० महावीर प्रसाद शर्मा वैद्यावतंस	एकडला	,,
ठाकुर शिवरतन सिंह राजवैद्य	रारी	,,
,, यशवन्त सिंह वैद्य	,,	,,
१०) पं० रामआसरे वैद्य	नरैनी सातों	,,
५) बाबू लालबहादुर स्वर्णकार वैद्य	किशुनपुर	,,
ठाकुर वद्रीसिंह वैद्य	मझगवां	,,
,, रघुनाथ सिंह ,,	काथू	,,
पण्डित शरच्चन्द्र शुक्ल एम० ए० कण्ट्राक्टर	डेंडासई	,, (शुक्लजी)
,, बद्रीप्रसाद मिश्र वैद्य	हसनापुर	,,
,, जनार्दनप्रसाद शर्मा	वैद्य चौक	,,
श्री फतेहचन्द्र वर्मा	,, सिठौरापट्टी	,,
,, रामभरोसे वैद्य	,, औंग	,,
,, शिवप्रसाद शर्मा	,, देवमई	,,
,, सत्यनारायण पाठक	,, कोट	,,
,, बद्रीप्रसाद शर्मा	वैद्य मलवां	फतेहपुर
चौधरी शिवप्रसन्न सिंहजी रईस	सहिंबसी	,,
पण्डित आशादत्त अवस्थी	वैद्य असोथर	,,
,, सुरेन्द्रशर्मा	,, ,,	,,
,, वद्रीप्रसाद शर्मा	,, हसनापुर	,,
,, सरयूनारायण शुक्ल	,, रामबाग	कानपुर
,, गुरुदयालु शर्मा	,, परौख नुनारी	,,
,, बालमुकुन्द द्विवेदी	,, फीलखाना	,,
,, बालमुकुन्द अग्निहोत्री	,, फतेहगढ़	फरुखाबाद
५) पं० हीरालाल शास्त्री आयुर्वेदाचार्य	छक्कानाजिर	फरुखाबाद

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

७)	पं० शिवदत्त हरिजू वैद्य कविराज		कटरानुनहाई	फर्रुखाबाद
	,, जगदम्बा लालजी	वैद्य	छक्कानाजिर	,,
	,, मदनलाल त्रिपाठी	,,	औरैया	इटावा
१०)	बाबू लक्ष्मीनारायण गुप्त	,,	अजीतमल	,,
५)	पं० नाथूराम तिवारी	,,	सेगनपुर	,,
	,, रामस्वरूप चतुर्वेदी	,,	रौतियापुर	,,
१०)	,, बालकृष्ण शुक्ल	,,	तुर्कीपुर	,,
५)	,, भजनलाल द्विवेदी	,,	भगौनापुर	,,
	,, रामशङ्कर	,,	,,	,,
	श्री कन्हैयालाल ज्वालाप्रसाद	,,	भरथना	,,
	,, श्रीगोपाल मिश्र	,,	क्योंटरा	,,
	,, दयाराम पाण्डेव	,,	कैथौली	,,
	चौधरी पुत्तू सिंह	,,	निवादाकला	,,
	पं० शिवनारायण द्विवेदी	,,	अयाना	,,
	,, ब्रजनन्दनप्रसाद दीक्षित	,,	फतेहपुर	,,
	,, भानुप्रताप पाण्डेय	,,	सुरान	,,
	,, ठाकुर मयपाल सिंह	,,	निवादी खुर्द	,,
	पं० शीतलाप्रसाद चतुर्वेदी	,,	जैरा	,,
	,, रामबाबू मिश्र	,,	अहेरीपुर	,,
	श्रीमती सूर्यमुखी देवी शुक्ला	,,	औरैया	,,
	लाला केदारनाथ अग्रवाल आयुर्वेद विशारद		औरैया	,,
१०)	पण्डित रामनाथ शास्त्री	वैद्य	शिवशक्ति	,,
५)	,, कृष्ण स्वरूप शर्मा	,,	पक्कीसरांय	,,
	,, रत्नाकर शास्त्री	,,	सरांय शेख	,,
	,, राधाकृष्ण भटेले	,,	भवानीपुर	,,
	,, सेठ सुदर्शनलालजी		यशवन्तनगर	इटावा (शुक्लजी)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

५) श्री परमानन्द	वैद्य	वरुवासागर	झाँसी
,, छोटेलाल तिवारी	,,	गंधीकाखरा	,,
,, रामनारायण शर्मा	,,	अरडा	,,
,, रामसेवक त्रिपाठी	,,	गणेशमठिया	,,
,, परशुराम	,,	बुढ़पुरा	,,
,, लालताप्रसाद पाठक	,,	मोठ	,,
,, श्री चन्द्र जैन	,,	समथर	,,
,, लक्ष्मीनारायण दिनवालिया	वैद्य	गणेशमठिया	,,
५) श्री अम्बिका प्रसाद	वैद्य	सीपरीबाजार	झाँसी
,, मङ्गलदास शृंगीऋषि	,,	हार्दीगंज	,,
,, जालिमसिंह	,,	मऊ	,,
,, शङ्कर प्रसाद वर्मा	,,	गरोठा	,,
,, शम्भूशरण पाण्डेय	,,		,,
,, बाबूरामगुप्त	,,	निवाड़ी	,,
१०) ;; रघुनाथ सिंह	,,	पिपरौधा	जालौन
,, तुलसीराम महेश्वरी	,,	जिटकरी	,,
,, देशराज मिश्र	,,	कोटरा	,,
,, भागीरथजी	,,	डिपुटीगंज	,,
,, महावीर प्रसाद	,,	छानीग्रहीर	,,
,, ताराचरण वाजपेयी	,,	कोंच	,,
,, भगवती शरण	वैद्यविशारद	सैदनगर	,,
,, लक्ष्मीप्रसाद	वैद्य	भोंरा	,,
,, पन्नालाल वैश्य	,,	उरई	,,
,, प्रतापनारायण तिवारी	वैद्य	गोहन	,,
,, तुलसीराम त्रिपाठी	,,	नदीगांव	,,
५) बाबू राजेश्वर कविराज	,,	कालपी	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

	श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी	वैद्य कालपी	जालौन
	,, नाथूराम त्रिपाठी	,, परासन	,,
	,, रामसनेही जी	,, महोबा	हमीरपुर
	रामभरोसेलाल चौरसिया	,, ,,	,,
	,, जगतराम बरई (शुक्लजी)	,,	,,
	,, रामेश्वर चतुर्वेदी	वैद्य ,,	,,
१०)	,, सुदर्शनसिंह	,, खरेला	,,
	रामसहायगुप्त	,, ,,	,,
	,, जगन्नाथ प्रसाद पाली वाल	वैद्य खरेला	,,
५)	,, रामशरण त्रिपाठी	वैद्य मरका	बांदा
१०)	,, महाप्रसाद वाजपेयी	,, बदौसा	,, (५+५)
५)	,, भगवतीप्रसाद	,, ,,	,,
	,, शुकदेवप्रसाद सेमरदहा	,, कर्वी	,,
	,, चन्द्रिकाप्रसाद पाण्डेय	,, राजापुर	,,
	,, शिवनरेश मिश्र	,, ,,	,,
	,, आनन्दीप्रसाद	,, ,,	,,
	,, गोकुलप्रसाद जी	,, कर्वी	,,
	,, सुखनन्दन मिश्र सिंहपुर	,, ओरन	,,
	,, शिवरतन मिश्र	,, तरौंहा	,,
	,, स्वामी दयानन्द जी	,, चित्रकूट	,,
१०)	,, स्वामी शिवानन्दजी	,, ,,	,,
५)	सुखनन्दन त्रिपाठी	,, ,,	,,
	,, वद्रीप्रसाद पाण्डेय	,, राजापुर	,,
	,, गंगादीन जी	,, ,,	,,
	,, महेश्वरी प्रसाद नेत्रचिकित्सक	वैद्य शहर	,,
	,, वंशगोपाल मिश्र	,, मर्दननाका	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री रामगोपाल वैद्य वण्डे अतर्रा बांदा (स्वर्गवास)
पं० रामगोपाल शास्त्री आयुर्वेदाचार्य अपने रोगी देखनेकी फीस
,, हरीकृष्ण सनवाल डी० आई० एम० एस० हलद्वानी नैनीताल
,, शङ्करदत्त ,, वैद्य ,, ,,
,, नारायणदत्त कपिलाश्रमी ,, ,, ,,
,, दामोदर ,, ,, ,,
,, भोलादत्त शर्मा ,, ,, ,,
,, धर्मवीर ,, ,, ,,
,, धर्मानन्द जी आयुर्वेदाचार्य ,, ,,
,, लोकमणि जी वैद्य ,, ,,
५) पण्डित पीताम्बरदत्त पन्त वैद्य नैनीताल
ठाकुर गंगासिंह वोरा ,, हलद्वानी ,,
१०) पं० सकलानन्द शास्त्री ,, डोभा पौडी गढ़वाल
,, ईश्वरीदत्त विलकोट ,, पट्टीबूनी ,,
ठाकुर रणवीर सिंह मालगुजार ,, कालीलांगू ,,
पं० दौलतरामजी रायसाहब ,, टण्डोलीपट्टी ,,
,, पीताम्बरदत्त जी ,, डुंडेरापट्टी ,,
,, जिवानन्द शर्मा चौवाड़ा ,, कोटडी ,,
५) ,, ऊर्वी श्री जी शर्मा ,, चोरागढ़ ,,
ठाकुर थानसिंह जी रायसाहब ,, चुरगढ़पट्टी ,,
पं० गिरधारीलाल जी ,, टांडियुं ,,
,, जगतरामजी ,, ,, ,,
१०) ,, सीताराम जी ,, ,, ,,
,, केशवानन्द जी ,, बेलकोट ,,
,, मोहनलाल ,, विलकोटपट्टी ,,
,, सीताराम जी ,, व्यासीपट्टी ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

	पं० सुरेशानन्द जी	वैद्य विलकोटपट्टी	गढ़वाल
५)	,, श्री रामजी	,, ,,	,,
१०)	,, जयानन्द जी	,, गूमपट्टी	,,
५)	ठाकुर कुन्दन सिंह जी	,, कांडीनूली	,,
	,, दयाराम जी	,, सुपढान पट्टी	,,
	,, सीतारामजी	,, विलकोट	,,
	ठाकुर गोविन्द सिंह	,, भवन	,,
	पं० कृतराम	,, अपोलासेरा	,,
	,, गोविन्दराम	,, महेलीपट्टी	,,
	श्री दौलतसिंह माधवसिंह प्रधान	वैद्य पञ्चभाई	,,
	श्री रुद्रसिंह थोकदार	,, चमड़ापट्टी	,,
५)	पं० वेणींप्रसाद जोशी	वैद्य (स्वर्गवासी)	गुप्तकाशी
	,, प्रभाकरदत्त शर्मा	,, अनेई	बनारस
	,, कृष्णदेव पाण्डेय	,, अनेथू	,,
	,, लक्ष्मीनारायण	,,	मिर्जापुर
	,, राजनारायण मिश्र शास्त्री	,,	,,
	,, हरिनाथ शर्मा	,,	,,
	हरिहर नाथ पाण्डेय	,,	,,
	बाबू पन्नालाल	,,	,,
	श्री गणेशप्रसाद जी	,, माधवपुर	,,
	,, सूर्यप्रसाद पाण्डेय	,, राजपुर	,,
	,, रामलखन जी	,,	,,
	,, रवीन्द्रनाथ चौधरी	,, सनातनधर्म कालेज	मिर्जापुर
१०)	,, सकलनारायण पाण्डेय	,, गहरवारगांव	,,
५)	श्री राजदेव प्रसाद	,, पट्टीनरेन्द्र	जौनपुर
	,, माताप्रसाद शर्मा	,, गुलजारगंज	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री फूलचन्द्र गुप्ता	वैद्य चन्द्रवक	जौनपुर
,, रामलखन उपाध्याय	,, बैजापुर	,,
,, जोखईराम गुप्ता	,, बदलापुर	,,
,,अनमोल प्रसाद त्रिपाठी	,, सरोनी	,,
,, गोकुलप्रसाद उपाध्याय	,, खजुरहट	,,
,, हरिवंश पाण्डेय	,, गैरवाह	,,
,, अम्बिका प्रसाद त्रिपाठी	,, वहोरीपुर	,,
,, तेजबहादुर सिंह	,, पट्टीनरेन्द्रपुर	,,
सर्व श्री श्री कान्त उपाध्याय	वैद्य सुरथाकला	जौनपुर
,, रामानुज दुबे	,, ,,	,,
,, संकटाप्रसाद मिश्र	,, वेलान	,,
,, फतेहपुर सिंह	,, हसरौली	,,
५) सर्व श्री लालताप्रसाद सिंह	वैद्य वस्तीनन्दरसन	जौनपुर
,, महादेव मौर्य	,, जमालापुर	,,
,, भागीरथी उपाध्याय	,, तगवा खुटहन	,,
,, पुरुषोत्तम दुबे	,, कुशहा	,,
,, कमलापति सिंह	,, उदयपुर	,,
,, दुबरी चौबे	,, सरौती	,,
,, हरिवंशसिंह	,, ,,	,,
,, देवतादीन त्रिपाठी	,, खेतासराय	,,
,, रामराजसिंह	,, शाहपुर	,,
,, रामनाथ त्रिपाठी	,, कुवरपुर	,,
रामपूर्ति सिंह	,, गजइनपुर	,,
,, अम्बिकाप्रकाद सिंह	,, कमलपुर	,,
,, वैजनाथ गुप्त	,, लालाबाजार	,,
,, शिवमूर्ति	,, परियावां	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सर्व श्री जयराम मिश्र	वैद्य गुजवन	जौनपुर
,, पद्माकर पाण्डेय	,, चन्द्रवक	,,
,, रामनाथ दुबे	,, कसेरूपट्टी	,,
,, विश्वनाथ सिंह	,, भरकानी	,,
,, सभाजीत प्रसाद गुप्ता	,, बड़ागांव	,,
,, बाबू नन्दन सिंह	,, पेसारा	,,
,, बलराम सिंह	,, अमरा	,,
,, बालमुकुन्द चौबे	,, नहोरा	,,
,,रामसूरत सिंह	,, खुंसापुर	,,
,, भगवतीदीन त्रिपाठी	,, घनश्यामपुर	,,
,, शम्भूनारायण सिंह	,, भटपुरा	,,
,, विश्वनाथ सिंह	,, पुरेख	,,
,, चन्द्रपालसिंह	,, जलालपुर	,,
,, ज्ञानेन्द्र सिंह	वैद्य भीलमपुर	जौनपुर
,, राजाराम	,, जैमिनपुर	,,
लालाजी पाण्डेय	,, ,,	,,
,, वदरीनारायण मिश्र	,, नियरा	,,
,, चन्द्रभूषण ,,	,, ,,	,,
,, राजेश्वरी प्रसाद सिंह	,, पूरालाल	,,
,, जमीदार सिंह	,, ककराही	,,
,, अम्बिकाप्रसाद मिश्र	,, अगरौरा	,,
,, भगवत प्रसाद पाण्डेय	,, प्रेमकापुरा	,,
,, बाबा अयोध्यादास	,, मछलीशहर	,,
,, केदारनाथ मिश्र	,, फुलेरा	,,
,, चन्द्रशेखर ,,	,, बराई	,,
,, हरिनाथ सिंह	,, सिंगरामऊ	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

सर्वश्री बहादुर सिंह यादव वैद्य टरिया		जौनपुर
,, सूर्यनारायण शुक्ल ,,	बिलारमऊ	,,
,, नर्मदा प्रसाद मिश्र ,,	कुछूपुर	,,
,,शिवकुमार शास्त्री ,,	जंगीपुर	गाजीपुर
१०) पं० रामदयालु ,,	साहबगंज	गोरखपुर
,, रामराजशर्मा त्रिपाठी वैद्य	जाफराबाजार	,,
,, रामसमुझ त्रिपाठी ,,	सरांव	,,
५) देवीशरण पाण्डेय ,,	विष्णुपुरा	,,
,, रामाधार मिश्र ,,	टिकरिया	,,
,, प्रयागदत्त त्रिपाठी ,,	तरना	,,
,, बाबू हरिदासमल जी ,,	गोतर बाबा	देवरिया
१०) पं० जगन्नाथमणि त्रिपाठी वैद्य	पटनीवावन	,,
,, धरणीधरझा राजवैद्य	नासिरगंज	वस्ती
श्री हरिनारायण रोहतगी वैद्य	माईस्थान	आगरा
५) ,, चोखेलाल जैन वैद्य	शाहदरा	आगरा
,, अमरनाथ ,,	लोहामंडी	,,
,, पचौरी बुंदीलाल ,,	फीरोजाबाद	,,
,, केदारनाथ आयुर्वेदाचार्य	,,	,,
,, गंगासहाय दीक्षित	,,	,,
,, छक्कूलाल ,,	,,	,,
,, विहारीलाल विशारद	,,	,,
,, चन्द्रशेखर आचार्य	,,	,,
,, नन्हूमल जी	,,	,,
,, भगवानदास जी	,,	,,
,, माणिकचन्द्र जी जैन	,,	,,
१०) ,, गुरुदयालु वैद्य	बिष्णुपुरी ,,	अलीगढ़

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE
CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

६)	श्री गणेशीलाल भट्टाचार्य वैद्य फीरोजाबाद		अलीगढ़
५)	भगवानदास	हाथरस	”
	” सम्पतलाल जैन	”	”
१०)	,, मङ्गलदेव जी	विजयगढ़	”
	,, होतीलाल जी वैद्य	नरैना	”
५)	,, रतनलाल जी ,,	विजयगढ़	”
	” यादवराम सिंह,;	पाली	”
	” डम्बर सिंह ”	बसई	”
	” प्यारेलाल वैद्यशास्त्री	हाथरस	”
	” उमाशङ्कर वैद्य सरायहकीम		”
	” भोलाशङ्कर वैद्य कौडियागञ्ज		”
	” रामलाल गुप्त ”	”	”
	” महादेवप्रसाद कुलश्रेष्ठ वैद्य जलेसर		एटा
	” छोटसिंह वैद्य फरेंजी		मैनपुरी
१०)	पं० दयानिधि सरोजनी देवी शर्मा वैद्य		मेरठ
५)	पं० वाचस्पति शर्मा वैद्य बुढ़ानागेट		मेरठ
	,, कृष्णानन्द ए० एम० एस०	,,	”
७)	,, हरिदत्त शर्मा वैद्य ए० एम० एस०		”
५)	श्री धर्मप्रकाश आयुर्वेदालंकार		”
६)	,, शिवदत्त शर्मा वैद्य परीक्षितगढ़		”
५)	,, भगवान जी	,, डवाना	”
	,, श्री रामजी	,, सकनपुर	”
	,, सत्यव्रत प्रेमी	,, परीक्षितगढ़	”
	,, गोपीचन्द्रजी	;, ”	”
१०)	श्री मन्त्री जिलावैद्य सभा		”
५)	,, कविराज चन्द्रदेव वैद्य रुहालकी		सहारनपुर

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कविराज अनन्तराम शर्मा वैद्य हरिद्वार सहारनपुर
७) पं० हरिहरदत्त जोशी ,, ,, ,,
५) डाक्टर बद्रीप्रसाद चौरासिया ,, ,,
पं० गंगाधर शर्मा वैद्य कनखल ,,
कविराज मुकुन्दीलाल द्विवेदी वैद्य हरिद्वार ,,
,, प्रकाशचन्द्र कुदेशा ,, देहरादून
,, बालकराक शुक्ल ,, ऋषिकेश ,,
,, विष्णुदत्त शास्त्री ,, ,, ,,
,, दामोदर जी ,, ,, ,,
१०) ,, जगन्नयन जी बहुगुण डी० आई० एम० एस० देहरादून
,, चन्द्रशेखर वाचस्पति वैद्य बरेली
७) श्री वेदप्रकाश अग्रवाल वैद्य बरेली
५) ,, रामलाल गङ्गवार ,, टाउनहाल ,,
,, चन्द्रशेखर शर्मा ,, जिला वैद्य सभा ,,
,, रघुनन्दन प्रसाद ,, भिटौरा ,,
,, रामस्वरूप ,, मिर्जापुर शाही ,,
,, चुन्नीलाल शर्मा ,, आंवला ,,
,, व्रजविहारी शङ्खधार ,, सुख प्रचारक ,,
,, मदनमोहन द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य ,,
७) ,, तहसील वैद्यसभा फरीदपुर ,,
५) ,, रामदयालुजी वैद्य हल्दी बरेली
,, बाबूरामजी वोसकोफ ,, विहारीपुर ,,
,, धर्मदत्त शर्मा ,, मदारी दरवाजा बरेली
,, रामकुमार शास्त्री ,, प्रकवड़ा मुरादाबाद
,, भोलादत्त पन्त ,, मण्डीचौक ,,
,, हरिशङ्कर विष्णुकान्त जैन वैद्य अमरोहिया गेट ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

८) श्री हरिदत्त शास्त्री वैद्य किसरौल मुरादाबाद
९) ,, चन्द्रस्वरूप द्विवेदी ,, बीसलपुर पीलीभीत
,, रामकुमार त्रिपाठी ,, रसायनशाला ,,
७) ,, कन्हैयालाल द्विवेदी ,, ,, ,,
५) ,, वासुदेव शर्मा ,, भागीरथ फार्मसी ,,
,, लल्लूमल शर्मा ,, साहूकारा ,,
,, पं० द्वारकाप्रसाद शुक्ल ,, ,,
,, राधेश्याम शर्मा उपाध्याय वैद्य विशारद धनारी वदायूँ
,, हरिश्चन्द्र सिंह वर्मा वैद्य खैराजलालपुर ,,
,, रघुनाथ सिंह वर्मा ,, ,, ,,
,, रामसहाय बलदेव ,, लिलवा ,,
,, काशीराम ,, झालू बिजनौर
,, डालचन्दजी ,, भोगली ,,
श्रोत्रिय रामशरण ,, नगीना ,,
श्री प्रयागलाल वैद्य शास्त्री ,, ,,
,, सम्पूर्ण सिंह वैद्य राजाताजपुर ,,
,, मूलचन्दजोशी ,, वशिष्ठाश्रम हरगनपुर विजनौर
,, रामजी ,, नहटौर ,,
,, श्यामलाल वैद्यशास्त्री नगीना ,,
,, आयुर्वेदाचार्य पं० शङ्करदत्तजी वैद्य केनिङ्गस्ट्रीट लखनऊ
पण्डित शिवराम द्विवेदी वैद्य आलमनगर ,,
,, सीतारामजी ,, ऐशबाग ,,
,, बिश्वनाथजी ,, विद्यान्तरोड ,,
,, कर्तार कृष्ण ,, रकाबगञ्ज ,,
श्री शम्भू प्रसाद बाजपेयी वैद्य रहवां रायबरेली
,, धनञ्जयदत्त शुक्ल ,, सेमरौता ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री रामप्रसाद सकसेना वैद्य खालीसहट रायबरेली
,, बनारसीलाल ,, डि० बो० बछरावां रायबरेली
,, आदित्यनाथ ,, साईंपुर जगतपुर ,,
,, श्यामनारायण ,, ,,
,, रामसुन्दर त्रिवेदी ,, देहाती कटघर ,,
,, ताराप्रसाद पाण्डेय ,, फकरासी, सूची ,,
,, शिवराजदत्त ,, डि० बो० रोखा ,,
,, मुरलीधर ,, भीतरगांव ,,
,, जनार्दन त्रिवेदी ,, बदलू भोजपुर ,,
,, कमला किशोर त्रिपाठी वैद्य दौलतपुर ,,
,, वासुदेव शर्मा आयुर्वेदाचार्य भीतरगांव ,,
,, बद्रीनाथ त्रिवेदी डी० आई० एम० एस० बेलीगञ्ज रायबरेली
,, रामकिशोर शास्त्री वैद्य बेनी संस्कृत विद्यालय ,,
,, हरिहरदत्त द्विवेदी वैद्य आयुर्वेद विशारद पण्डित पुरवा बागपाठी जायस, रायबरेली
,, चन्द्रभूषण त्रिपाठी वैद्य डीह रायबरेली
ठाकुर रामपाल सिंह ,, परमालपुर, भाव ,,
,, विश्वनाथ मिश्र ,, टेशन रोड ,,
,, फणीन्द्रनाथ दीक्षित ,, नीबी भोजपुर ,,
,, वंशीधर ,, समरौली ,,
,, रामाधीन ,, परौरा जगतपुर ,,
,, शीतला सहाय मुन्नू ,, उदयामऊ अम्बारा ,,
,, गङ्गाप्रसाद त्रिपाठी वैद्य सलेथू ,,
,, शिवगोपाल पाण्डेय वैद्य ब्रिनांव मऊ ,,
,, गंगा बकस सिंह वैद्य भीतरगांव, गुरुबक्स गंज ,,
,, चन्द्रधर मिश्र वैद्य ,, ,, ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री छोटेलाल वैद्य भीतरगांव गुरुबक्सगञ्ज रायबरेली
,, गणेशप्रसाद ,, दसऊमऊ ,, ,, ,,
,, लक्ष्मीनारायण मिश्र ,, ,, ,,
,, ठाकुर प्रसाद अग्निहोत्रीवैद्य बावन बुजुर्ग महराजगञ्ज रायबरेली
,, शिवचन्द्र शुक्ल आयुर्वेदरत्न वैद्य हमीरगांव छुलाहा ,,
,, केशव प्रसाद द्विवेदी वैद्य रायबरेली
,, मुरलीधर मिश्र वैद्य ताजपुर नौबस्ता, हड़हा, उन्नाव
,, आयुर्वेदाचार्य पं० वेणीमाधव शुक्ल वैद्य पटियारा उन्नाव
,, पं० गौरीशङ्कर पाण्डेय ,, ,,
श्रीमती सरस्वती देवी शुक्ला भगवती देवी सीतापुर
श्री रामविलास शर्मा वैद्य ऊंचा खेरा कमालपुर सीतापुर
,, जगदीश्वर अवस्थी वैद्य ,,
,, प्रभु दयालु ,, ,,
,, शङ्कर बकस सिंह वैद्य ,,
,, भगवानदीन अग्निहोत्री मठिया, बड़ागांव ,,
,, शान्तिधर बाजपेयी वैद्य ,,
,, गुरुप्रसाद तिवारी डी० आई० एम० एस० ,,
,, रामनाथ दीक्षित वैद्य ,,
,, श्री रामशास्त्री ,,
,, रामस्वरूपजी वैद्य खजुरिया ,,
,, गणेशप्रसाद वैद्य ,, ,,
,, रमेशचन्द्र शुक्ल वैद्य डकरा, विसवां ,,
,, कृष्णकुमार भार्गव वैद्य ,,
,, पुत्तूलाल वैद्य चन्दनापुर ,,
लाला हरदयालु रामदयालुजी महौली ,,
मुनीम राधेश्यामजी ,, ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

बाबू दुलारेलालजी महौली सीतापुर
श्री बालमुकुन्द घनश्याम दासजी ,, ,,
,, बालमुकुन्द फर्म नारायणदासजी ,, ,,
,, गोपीकृष्ण रामनाथ ,, ,,
लाला भगवानदीन पंसारी ,, ,,
पं० कुंज विहारीलाल दीक्षित तामसेनगञ्ज ,,
,, श्यामसुन्दरलाल मिश्र वैद्य कमाल सरैया, खैराबाद सीतापुर
,, ठाकुर प्रसाद वैद्य पिहानी हरदोई
१०) ठाकुर शेरबहादुर सिंह वैद्य पट्टीमीरानपुर हरदोई
५) श्री भजनलालजी वैद्य बिरौली, वेहटा; ,,
,, सीतावर पन्त वैद्य नैनीताल (फीसका रुपया) हरदोई
,, राजेश्वर प्रसाद मिश्र वैद्य पाली ,,
१०) ठाकुर गोवर्धन सिंह वैद्य बरबन ,,
७) पं० रघुवीर सहाय शर्मा आयुर्वेदाचार्य महतापुर सांडी
५) पं० रामेंश्वर प्रसाद मिश्र वैद्य मंसूरनगर, हरियावां
१०) ,, रामसेवक लल्लाजी ,, थोरपर पाली ,,
५) ,, बालकृष्ण शर्मा ,, टौनएरिया ,, ,,
,, गंगाधर शर्मा ,, रूपापुर ,, ,,
१०) ,, लक्ष्मीकान्त शर्मा वैद्य सिंगाही लखीमपुर खीरी
,, मुकुन्दराम शर्मा ,, ,, ,,
५) ,, अम्बिकाप्रसाद मिश्र वैद्य डी० आई० एम० एस० ,,
,, छेदीलाल ,, ,, दाऊदपुर ,,
,, उमाचरण ,, ,, विजुवा ,,
,, जगन्नाथप्रसाद ,, अनगवां ,,
,, श्यामविहारी पाण्डेय वैद्य ,,
,, शिवनाथ सिंह ,, वरुही, सिकन्दराबाद ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१०)	श्री रामस्वरूप अवस्थी	वैद्य ढसरेवाला	लखीमपुर खीरी
५)	,, लालप्रसाद जी	,, पडरीकलां.	,,
	,, रामस्वरूप गुप्त	,, नयीबाजार	नसीमपुर
	मुंशीमूलचन्द्र		,,
	गोविन्दराम शर्मा	,,	,,
	श्री कृष्ण अवस्थी वैद्य		,,
	,, वैकुण्ठनाथ दीक्षित डि० पो० औष०		,,
	,, संकटा प्रसाद वाजपेयी वैद्य नौरंगबाद		,,
७)	,, मैकूलाल मिश्र	,, रंगीलानगर	,,
५)	,, विश्वेश्वर दयालु वैद्य वेहजम, नीमगांव		खीरी
	,, अम्बिकाप्रसाद शुक्ल वैद्य तेदुहा		,,
	,, राधेगोविन्द तिवारी	,, त्रिभुवनगञ्ज	,,
	,, रामचरण चतुर्वेदी	,, बरगदिहा मल्लिका	,,
	,, शिवरतनसिंह	,, मिनौली	,,
	,, रामलोटन मिश्र	,, मुरई, मितौली	,,
५)	श्री शम्भूदयालु जी	वैद्य कोट खेरवा, वैल	खीरी
	श्री अवधेशनन्दन मिश्र वैद्य अग्निहोत्र कफारा धौरहरा		,,
	,, चन्दूलाल शर्मा	,, फूलविहड़	,,
	,, चन्द्रिका प्रसाद दुबे	,, अल्लेपुर धौरहरा	,,
	,, गुरुप्रसाद जी	,, अटकोहना	लखीमपुर खीरी
	,, त्रियुगीनारायण	,, निघासन	,,
	आयुर्वेदाचार्य भगवती सिंह शास्त्री वैद्य अकबरपुर		फैजाबाद
	श्री रामसेवक शोभाराम वैद्य बलरामपुर		गोंड़ा
	,, स्वामीदयालु शर्मा वैद्य		बहराइच
	,, जंगलीप्रसाद शर्मा	,, मटेरा	,,
	बाबू लालताप्रसाद गुप्त ,,	,,	बहराइच (२ + ३)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पण्डित द्वारकाप्रसाद मालवीय वैद्य सुलतानपुर

६।) ,, रामनरेश त्रिपाठी ,,

५) ,, रामलखन मिश्र वैद्य जहनईपुर प्रतापगढ़

,, शम्भूनाथ पाण्डेय ,, लालगोपालगंज ,,

,, बाबू प्यारेलाल जायसवाल ,, ,,

,, कृष्णचन्द्र गुप्त वैद्य ढाकास्वस्तिक ,,

आयुर्वेदाचार्य पं० हरिनारायण शर्मा वैद्य मेंहताकालेज ,,

पं० रामहर्ष उपाध्यायशास्त्री आयुर्वेदाचार्य डेरवा ,,

,, रामेश्वर प्रसाद मिश्र वैद्य अहिवरनपुर, समसपुर ,,

,, माताप्रसाद दीक्षित ,, त्रिलोकपुर त्रिवेणीगंज बाराबंकी

,, वैजनाथ त्रिपाठी ,, डीघ, ऊज, बनारस स्टेट

१०) आयुर्वेदाचार्य पं० मणिरामशर्मा प्रिंसपल रतनगढ़ बीकानेर

५) वैद्यराज पं० नारायणदत्त शर्मा सिंगरावट, लोसल जयपुर

श्री अनन्त शर्मा वैद्य समस्तीपुर दरभंगा

,, हनुमान शर्मा ,, ,, ,,

,, रामवल्लभ शर्मा ,, ,, ,,

५) श्री सूर्यमहाराज वैद्य समस्तीपुर दरभंगा

पं० मधुसूदन मिश्र ,, ,, ,,

,, महेन्द्र मिश्र ,, ,, ,,

,, सदाशिव झा ,, ,, ,,

,, गंगासहाय ,, ,, ,,

,, जगदीश मिश्र ,, मोतीपुर ,,

,, श्रीनाथ मिश्र ,, ताजपुर ,,

,, पीताम्बर शर्मा ,, मलिकौठ ,,

,, रामप्रकाश झा ,, वैनी ,,

,, रामखेलावन सिंह ,, वथुवा ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

७)	श्री नथुनीगुप्त	वैद्य	दरभङ्गा
	,, कामताप्रसाद पाण्डेय वैद्य		,,
	,, रमाकान्त झा	,,	,,
५)	,, सियाराम भट्ट	,, घटहो	,,
७)	बाबू विश्वनाथ शर्मा	,, रमशा वारिसनगर	,,
५)	पं० अजबलाल झा	,, एकद्वारी	,,
	श्री बद्रीलाल गुप्त	,, ताजपुर	,,
	,, रामविलास रावत	,, समस्तीपुर	,,
	,, यमुनाकान्त मिश्र	,, मोखा	,,
	,, रामदेव मिश्र	,, करजाचट्टी जिल्ला	मुजफ्फरपुर
	,, सियाजी शरण मिश्र	,, बड़कागाँव	,,
	,, दामोदर ,,	,, वसुढाकाजी जैतपुर	,,
	,, श्यामविहारी ,,	,, छत्रपट्टी, वसराज	,,
	,, ऋषभदेव ,,	,, कांटी	,,
	,, कपिलदेव ,,	,,	,,
	,, सुबुद्ध झा	,, कपिलपुर, विष्णुदत्तपुर	,,
	,, हरिनन्दन त्रिवेदी	,, रामपुरदयालु	,,
५)	श्री बच्चूसाही	वैद्य साहीजीवड मदई	मुजफ्फरपुर
	,, भवानीदत्त शर्मा	,, मोतीझील	,,
	,, वैद्यनाथ मिश्र वैद्य	,,	,,
६।-)	,, शिवदयालुप्रसाद जी० ए० एम० एस०	सेवान,	छपरा
७)	,, प्रियव्रत शर्मा आयुर्वेदाचार्य	वेगूसरांय	मुंगेर
५)	राधाकृष्णनाथ प्रोफेसर	,,	,,
	,, ताराचरण झा ,,	,,	,,
	,, कृष्णचन्द्र प्रसाद ,,	,,	,,
	श्री गौरीशङ्कर मिश्र	प्रोफेसर बेगूसरांय	मुंगेर

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री चतुर्भुज चौधरी प्रोफेसर बेगूसरांय मुंगेर
,, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद गुप्त ,, ,, ,,
,, पण्डित तीर्थ प्रसाद राजबैद्य ए० एम० एस० बिलासपुर
सेठ श्री रामगुलाम साहू (फीस ज० प्र० शुक्ल) ,,
हकीम मुहम्मद शरीफ शनिचरी बाजार ,,
श्री गङ्गाधर रामचन्द्र खानखोजे वैद्य तिलकनगर ,,
,, छाजूलाल शर्मा वैद्य सदरबाजार ,,
,, श्यामलाल वैद्यराज चाटापारा ,,
,, बासुदेवराव देवरस वैद्य ए० एम० एस० चाटापारा ,,
,, रामसिद्ध तिवारी वैद्य जूनीलाइन ,,
,, दीनानाथ दाऊ ,, जूनीबाजार ,,
,, रामखेलावनलाल ,, गोंडपारा ,,
१०) ,, भिकाजी विनायक डेग्वेकर देसाई फार्मसी जबलपुर
१०) ,, पण्डित द्वारका प्रसाद जी राजवैद्य ,,
१०) ,, कृष्णलाल गोंस्वामी मन्त्री ,,
७) ,, चुन्नीलाल नायक वैद्य ,,
५) ,, यमुना पसाद शर्मा ,, ,,
७) ,, विनायक श्रीधर देसाई ,,
५) ,, बदरी प्रसाद अग्निहोत्री ,,
,, पुरुषोत्तमदास डंकाजी ,,
,, गणपतिराव तापीकर वैद्य ,,
,, हरदत्तजी त्रिपाठी ,, ,,
,, प्रभाकर राव राजवाडे ,, ,,
१०) ,, सुन्दरलालजी शुक्ल ,, ,,
१०) ,, बाबूलाल शर्मा ,, ,,
१०) ,, पुरुषोत्तमलाल गोस्वामी ,, ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

५) श्री मोहनलाल पाण्डेय वैद्य		जबलपुर
,, बद्रीदत्त शर्मा ,,	सदरबाजार	,,
१०) ,, गोविन्ददेव त्रिपाठी वैद्य		,,
५) ,, शङ्करदत्त गौड़ ,,		,,
,, पं० मूलचन्द शुक्ल ,,		,,
श्री रामसिंह जी ,,		,,
१०) ,, ज्ञानचन्द नायक ,,		,,
५) ,, आयुर्वेदरत्न श्री भालचन्द वैद्य		,,
,, नर्मदाप्रसाद मिश्र ,,		,,
८) आयुर्वेद विशारद पं० राधिकाप्रसादजी		,,
५) श्री हरिरामजी वैद्यराज शुक्रवारी		नागपुर
,, रामजीवैद्य जोधपुर वाले सीतावर्डी		,,
पं० रामगोपाल शर्मा वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन		नागपुर
,, मुन्नालालजी ,, ,,		,,
,, हेमशङ्कर शुक्ल वैद्य इतवारी		,,
,, कस्तूरचन्द शास्त्री ,,		,,
श्री मातादीनजी वैद्य श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन		,,
,, लक्ष्मण राव धोपटे ,,		,,
,, गौरीशङ्कर मिश्र वैद्य धरमपेठ		,,
,, बंशीधर मिश्र ,, इतवारी		,,
वैद्य ब्रादर्स श्री चिन्तू भाई साह इतवारी		,,
१०) श्री पण्ढरीनाथ दामोदर मुले वैद्य अम्बागेट		अमरावती
५) ,, रामगोपाल वर्मा वैद्य बैकुण्ठपुर	रीवां	विन्ध्य प्रदेश
१०) ,, प्रयागदत्त राजवैद्य रीवां		,,
५) ,; रघुनन्दन शर्मा लक्ष्मीशङ्कर शुक्ल वैद्य		,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

५) वैद्य शिवजी जेठाभाई शाह कच्छ
पं० रामकृष्ण महादेव पुराणिक बम्बई
,, प्रताप कुमार पोपटभाई वैद्य भुलेश्वर बम्बई
वैद्य मूलजी कल्याणजी ठाकुर ,,
१०) ,, गोपालजी कुंवरजी ,, ,, (स्वर्गवासी)
५) ,, नरसिंह प्रसाद गङ्गाधर ,,
,, विश्वनाथ भगवानजी ,,
,, अजित कुमार नरसिंह प्रसाद आचार्य ,,
१०) पं० गणेशशास्त्री जोशी वैद्य २८ शुक्रवार पूना
५) श्री वि० ग० केलकर ,, नासिक
पं० ब्रह्मदत्त शर्मा वैद्य सभापति भुसावल
श्री कृ० व० महाबल वैद्य नासिक
आयुर्वेदाचार्य पं० नागेशदत्त शास्त्री नया बाजार हैदराबाद
वैद्य श्री सीतारामैया जी तुलजाभवन काछीगुड़ा ,,
श्री वेंकटरावजी वैद्य ,,
१०) तिरु वेंकटाचार्य जी आयुर्वेदाचार्य मङ्गलहाट ,,
५) श्री बालराजजी आयुर्वेद विशारद ,,
१०) पं० नटराजन शास्त्री आयुर्वेदाचार्य टेनूरोड त्रिचनापल्ली

पांच रुपयेसे कमवाले दानदाता

२) सर्व श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र	वैद्य	बरदहा	करछना	इलाहाबाद
,, रामसेवक पाण्डेय	,,	रामपुर	,,	,,
३) ,, श्यामाकान्त द्विवेदी	,,	,,	,,	,,
४) ,, देवशरण	,,	बेदौं	,,	,,
२) ,, शिवमूर्ति द्विवेदी	,,	बैरहना		प्रयाग
,, रामजी तिवारी	,,	चनेथू		जंघई बाजार

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२) सर्वश्री रमाकान्त मिश्र	वैद्य बेरहना		प्रयाग
,, द्वारकाप्रसाद मिश्र	,, ,,		,,
,, मौजनाथ योगी	,, ,,		,,
कविराज अम्बिका प्रसाद कसौंधन		कटरा	,,
डाक्टर कृष्णलाल जायसवाल ए० एम० एस०			,,
बाबू महाबीर प्रसाद जायसवाल वैद्य मुट्ठीगंज			,,
पण्डित रामलाल दुबे	,, हनुमानगंज		इलाहाबाद
१) श्री नन्दकिशोर अग्रवाल विद्यार्थी चाहचन्द			प्रयाग
३) पण्डित शम्भूदयालु तिवारी	वैद्य सुधानिधि		,,
१) बाबू सन्तबहादुर सिंह	,, बभनमई		इलाहाबाद
२) पण्डित मूलचन्द्र शुक्ल पिंसपल (जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल)			,,
,, रामनरेश तिवारी वैद्य तिवारान सैदाबाद			,,
४) ,, देवराज पाठक	वैद्य पतारा गोपालपुर		,,
२) हकीम सोहनलाल	,, मीरगंज		,,
१) पं० राघवचन्द्र शुक्ल (शुक्लजी) वैद्य डेंडासाईं			फतेहपुर
ठा० रामराखन सिंह	,, बुदवन		,,
श्री रामदास जी लोहार	,, हसनपुर		,,
२) ,, रामजियावन सिंह	,,		,,
१) ,, दिरपाल सिंह	,,		,,
,, रामदास जी	,,		,,
श्री राभकिशुन सिंह दूकानदार	बुदवन		फतेहपुर
मुंशी सुजान सिंह मास्टर	,,		,,
श्री शिवनारायण सिंह	,,		,,
,, रामसेवक सोनार	,,		,,
१) फुल्लू सिंह	,,		,,
,, भगवती प्रसाद जी	,,		,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

३)	ठा० सिद्ध गोपाल सिंह जी		बुदवन	फतेहपुर
,,	,, पं० प्रयाग नारायण तिवारी	वैद्य	सरौली	,,
,,	ठा० जगमोहन सिंह जी		तेंदुवा	,,
,,	पं० लालाप्रसाद जी		,,	,,
१)	बाबू शिवसहाय अरोड़ा	वैद्य	हरिहरगंज	,,
२)	पं० रामनिहोर शर्मा	,,	पचमई	,,
३)	,, रमेशचन्द्र द्विवेदी	,,	सिकन्दरा	कानपुर
२)	श्रीमती कस्तूरी देवी	,,	कटराकुनहाई	फर्रुखाबाद
	पं० गंगादत्त जी	,,	,,	,,
	,, शिवस्वरूप शुक्ल	,,	,,	,,
	,, भगवतदयालु द्विवेदी	,,	मिरिया	,,
	,, गंगानारायण तिवारी	,,	तिर्वा	,,
४)	,, मिट्ठूलाल अग्निहोत्री	,,	सुलेमपुर	,,
२)	,, रूपलाल दीक्षित	,,	सितोली	,,
	,, रामकिशोर त्रिपाठी	,,	सरायमीरा	,,
४)	वैद्य छत्रपाल सिंह कछवाहा		निनौरा	,,
२)	पं० रामदुलारे त्रिपाठी	वैद्य	धर्मार्थऔष०	,,
	,, राधाकृष्ण शुक्ल	,,	कन्नौज	,,
	,, नवीनचन्द्र शर्मा	,,		,,
१)	हेतराम दुबे	,,	दिलावरगंज	,,
२)	,, मोहनलाल शुक्ल	,,	कटराबक्सी	,,
	,, गंगानारायण तिवारी	,,	तिर्वा	,,
	श्री किशोरमोहन सक्सेना	,,	शमसाबाद	,,
	,, दीनदयालु द्विवेदी	,,	खतरावां	,,
१)	,, योधनलाल	,,	नारायणपुर	,,
	,, देवीदयालु जी	,,	कायमगंज	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

३)	,, नरसिंह पालीवाल	वैद्य	कायमगंज	फरु खाबाद	
	,, रामदुलारे लाल	,,	रेलवेरोड	,,	
	,, माणिकलाल उपाध्याय	,,	बपुरीपुर	इटावा	
	,, केदारनाथ छेदीलाल गुप्त साइकिलडीलर्स		औरैया	,,	(शुक्लजी)
	,, छोटेलाल शिवनारायण		,,	,,	,,
	ठाकुर सुवरण सिंह		क्योंटरा	,,	,,
	पं० रमाशङ्कर शुक्ल	वैद्य	,,	,,	
	बाबू रघुबरदयालु साइकिल डीलर		औरैया	,,	(शुक्लजी)
	श्री रामचरण वैजनाथ सर्राफ		,,	,,	
२)	,, हरिनारायण शास्त्री		हबिलिया	,,	
	,, श्रीकृष्ण द्विवेदी	वैद्य	जैतापुर	,,	
	बाबू रामेश्वर दयालुजी गुप्त	,,	पालीखुर्द	,,	
	पण्डित मार्तण्डरावजी	,,	सनातनधर्म	,,	
३)	,, चन्द्रभानुजी	,,		,,	
	,, श्री नारायण जी	,,	कंठादाना	,,	
	,, शारदाशरण जी	,,	सहार	,,	
	,, सुखनन्दन सिंह	,,	मलहौसी	,,	
	,, रमानाथ	,,	सिंडोरा	,,	
	,, राम नारायण	,,	चकरनगर	,,	
	,, रामशङ्कर	,,	मुरादगंज	,,	
	,, कैलाशचन्द्र जी	,,	पछारोंगांव	,,	
	,, रामेश्वर दयालु जी	,,	जगसौरा	,,	
	,, विश्वनाथ जी	,,	वारूनीपुर	,,	
	,, रामचन्द्र अवस्थी	,,	जुआ	,,	
२)	,, अशर्फी लाल	,,	कैथाना	,,	
३)	,, सहदेव शर्मा	,,	सरैया	,,	

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

	पं० रघुनन्दनलाल शुक्ल	वैद्य	हरचन्दपुर	इटावा
	श्री भगवानदास वरुई	,,		झांसी
	,, दुर्जनलाल रावत	,,	मऊ	,,
२)	,, रामदयालु श्रोत्रिय	,,	बैरी	,,
२)	,, शिव कुमार त्रिपाठी	,,	गोतहाई	,,
३)	,, सीताराम	,,	चिरगांव	,,
२)	,, मोतीलाल	,,		,,
	,, कन्हैयालाल मिश्र	,,	मजीथमेहन	जालौन
	,, प्रभुदयालु जी	,,	पराखन	,,
	,, रामकृष्ण द्विवेदी	,,	कालपी	,,
	,, गोपालदास जी	,,	कालपी	,,
२)	श्री शालिगराम जी	वैद्य	कालपी	जालौन
१)	,, दयाराम जी	,,	छिकहरा	हमीरपुर
२)	,, वैजनाथ गुप्ता	,,	महोबा	,,
	,, रुद्रप्रसाद आयुर्वेदरत्न	,,	,,	,,
	,, रामचरण सक्सेना	,,	,,	,,
	,, वैजनाथ गुप्त	,,	जारीगंज	,,
	,, दुर्गाप्रसाद भार्गव	,,	महोबा	,,
	,, सीताराम गुप्त	,,	,,	,,
	,, महँगूलाल जी	,,	,,	,,
	,, मोतीलाल	,,	,,	,,
	,, दाऊरामलाल	,,	,,	,,
	,, दयाशङ्कर श्री वास्तव (शुक्लजी)	,,		,,
	,, पंचमलाल काछी	,,	,,	,,
३)	,, वद्रीप्रसाद तिवारी	वैद्य	,,	,,
२)	,, गोविन्ददास झा	,,	सोगरा कुलपहाड़	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

	श्री रघुनाथ प्रसाद अग्रवाल (शुक्लजी)	राजापुर	बांदा
	,, जुगलकिशोर अग्रवाल (शुक्लजी)	,,	,,
४)	,, आत्माराम जी	वैद्य बड़ा बाजार	,,
२)	,, सरयूप्रसाद निगम	,, खुरहण्ड	,,
	,, सूर्यभानु शर्मा	,, मरका	,,
	,, हरीदत्त पन्त शास्त्री	हलद्वानी	नैनीताल
	,, श्रीराम वैद्य	अनेई	बनारस
१)	,, प्यारेलाल शाह	वैद्य ,,	,,
४)	,, पुरुषोत्तमदास जी	,,	मिर्जापुर
२)	,, राजकिशोर मिश्र	,,	,,
	,, रामनाथ शर्मा	,, सीखड़	,,
१)	,, गोपीनाथ	,,	,,
१)	,, तुलसीराम	वैद्य	मिर्जापुर
	,, विश्वनाथ	,,	,,
४)	,, सीताराम	,, काहापुरकटका	जौनपुर
३)	,, देवीप्रसाद राम	,, सूरतपुर	,,
	,, महँगीराम	,, ,,	,,
	,, रामानन्दन मिश्र	,, गुतवन	,,
	,, पुरुषोत्तम दुबे	,, जगन्नाथपुर	,,
२)	,, रामचन्द्र सिंह	,,	,,
३)	,, काशीप्रसाद यादव	,, शिवरिहा	,,
१)	,, वचईराम शुक्ल	,, छाछों	,,
२)	,, वैकुण्ठनाथ मिश्र रामपुर		,,
	चन्द्रभूषण उपाध्याय	वैद्य वजोरन सिंह	,,
	,, अमरनाथ प्रयाग	,, गौरा बादशाहपुर	,,
२)	,, रामप्रसाद यादव	,, ,,	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१)	श्री जगन्नाथ सात्र	वैद्य गौराबादशाह	जौनपुर
	,, लक्ष्मीराम	,, ,,	,,
	,, सरयूसात्र	,, ,,	,,
१)	,, रामावतार	,, ,,	,,
२)	,, रामखिलावन उपाध्याय	,, ,,	,,
३)	,, शालिग्राम श्री वास्तव	,, बराना	,,
२)	,, देवधारी सिंह	,, मुहांव	गाजीपुर
४)	,, हरिहरनाथ मिश्र	,, गंगोली	,,
	,, जयनारायण सिंह	,, पतार	,,
	,, प्रसिद्धनारायण पाण्डेय	,, दिलदार नगर	,,
	,, राजकिशोर शर्मा	,, परसा	,,
	,, शिवशङ्कर मिश्र	,, ब्रह्मनपली	,,
	,, दामोदर उपाध्याय	,, डेढ़गांवा	,,
४)	श्री माहेश्वर त्रिपाठी	वैद्य टढनी	गाजीपुर
	,, चन्द्रदेव ओझा	,, रेवतीपुर	,,
	,, प्रकाचन्द्र कविराज	,, गाँधीरोड़	,,
	,, गौरीशङ्कर पाण्डेय	,, गहमर	,,
	,, विन्ध्याचल पाण्डेय	,, शेरपुर	,,
	,, वशिष्टनारायण ,,	,, डहन	,,
	,, जवाहरदत्त शर्मा	,, शेरपुरकलां	,,
	,, चन्द्रशेखर शुक्ल	,, शेरपुर खुर्द	,,
	,, कल्पनाथ उपाध्याय	,, रेवतीपुर	,,
	,, वशिष्टनारायण चतुर्वेदी	,, तुमुलापुर	,,
	,, शिवकुमार उपाध्याय	,, गदाईपुर	,,
	,, मारकण्डेय पाण्डेय	,, टढनी	,,
	,, जगतनारायण त्रिपाठी	डडिया	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४) श्री सत्यनारायण उपाध्याय	वैद्य	रेवतीपुर	गाजीपुर
,, ब्रह्मदेव त्रिपाठी	,,	टढनी	,,
,, रामपति पाण्डेय	,,	गहमर	,,
,, श्यामलाल द्विवेदी	,,	धरमपुर	,,
,, छविनाथरामजी	,,	मेदिनीचक	गाजीपुर
,, शिवपूजनशर्मा	,,	सरसौली	,,
,, कतवारूपाण्डे	,,	शेरपरखुर्द	,,
,, रामसुमेर पाण्डेय	,,	शेरपुरखुर्द	,,
,, रघुपतिराम शर्मा	,,	हरिहरपुर	,,
,, जगदेव त्रिपाठी	,,	सेदाबाद	,,
,, हरिवंश उपाध्याय	,,	टेहुडी	,,
,, विश्वनाथ पाण्डेय	,,	दिलदारनगर	,,
,, रमानाथ उपाध्याय	,,	गहमर	,,
,, रामरथी चतुर्वेदी	,,	,,	,,
,, रमाशङ्कर द्विवेदी	,,	सैदपुर	,,
४) श्री डा० मदन ए० एम० एस०		गोराबाजार	गाजीपुर
,, नारायणदेव शास्त्री	वैद्य	ब्राह्मणपुरा	,,
,, रामनन्दन चतुर्वेदी	,,	गहमर	,,
,, विश्वनाथ दीक्षित	,,	,,	,,
,, नन्दकिशोर सिंह	,,	,,	,,
,, देवशरण राय	,,	टढिया	,,
,, राजकिशोर शर्मा	,,	पारस	,,
,, आदित्य मिश्र	,,	वहरियावाद	,,
,, ठाकुरदत्त पाण्डेय	,,	स्टीमरघाट	,,
,, सूर्यनाथ त्रिपाठी	,,	गदाईपुर	,,
,, त्राणवरशर्मा	,,	मैनपुर	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४)	श्री शिवशङ्कर चतुर्वेदी	वैद्य सादात	गाजीपुर
	,, बद्रीनारायण शर्मा	,, वाई	,,
	,, जगदीश त्रिपाठी	,, धुरेहरा	,,
	,, खेदूराम जी	,, सिरवडी	,,
१)	,, शिवकुमार	,, धनवन्ती	बलिया
२)	,, रमाशङ्कर प्रसाद	,, सहतवार	,,
	,, नौबतप्रसाद	,, चीटवडागांव	,,
१)	,, हरिवंश ओझा	,, हलदी	,,
	,, कपिलदेव पाण्डेय	,, कुरेनी	,,
	,, रामलखन ,,	,, भउसर	,,
	,, परमेश्वर तिवारी	,, तालिमपुर	,,
	,, रामनारायण	,, गरवा	,,
	,, गङ्गादयालु उपाध्याय	नरही	,,
	,, फसाहत साहब	वैद्य हाटा	देवरिया
२)	पण्डित ठाकुरदयालु मिश्र	,, मैदापुर	आजमगढ़
१)	श्री सरयू पाण्डेय	वैद्य घोसी	,,
२)	श्री लोचीसिंह	घोसी	आजमगढ़
	,, नन्दलाल	,,	,,
	,, सेठ मुस्तफाजी	,,	,,
	,, सेठ मुरतजा जीं	,,	,,
	,, सेठ मुहम्मदहुसेन	,,	,,
	,, सेठ गुलाम अशरफ	,,	,,
	,, एकरामुल हक	,,	,,
	,, मुमताज अहमद	,,	,,
	,, अमीचन्द्र गुप्ता	,,	,,
	,, गुलाम अब्बास	,,	,,
	,, गोरखनाथ अस्थाना	,,	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१)	श्री राजाराम	वैद्य धोसी	आजमगढ़
२)	,, रामकृष्ण सिंह		,,
१)	,, भोलानाथ वैद्य		,,
	,, शिवलोचन राय		,,
३)	,, मनबहलाव त्रिहाठी वैद्य	उसका बाजार	बस्ती
२)	,, दुर्गाप्रसाद शर्मा	,, खैरागढ़	आगरा
१)	,, केदारनाथ शर्मा	,, राजामंडी	,,
	,, मदनमोहन	,, लोहामंडी	,,
	,, छोटेलाल	,, नौवस्ता	,,
	,, रामनारायण	,, राजामंडी	,,
	,, ज्योतिप्रसाद	,, शाहगंज	,,
	,, लक्ष्मीनारायण	,, जोगीपुरा	,,
	,, रामशरण	,, नाईकी मंडी	,,
२)	,, कपूरचन्दगोयल	,, नूरीदरवाजा	,,
१)	,, दौलत सिंह	,, ,,	,,
	,, रामनारायण पाण्डेय	,, मोतीकटरा	,,
२)	श्री जयनारायण	वैद्य नाईमण्डी	आगरा
२)	,, रुद्रमल	,, ,,	,,
१)	,, रणवीर शास्त्री	,, ,,	,,
२)	,, मुकुन्दविहारी शुक्ल	,, सुलतानपुरा	,,
	,, रामजीलाल ,,	सदरबाजार	,,
१)	,, दाताराम शर्मा	वैद्य मोतीकटरा	,,
	,, भगवान सिंह	,, राजामंडी	,,
	,, नारायण प्रसाद	,, ,,	,,
	,, रामप्रसाद सिंहल	,, नीलकटरा	,,
२)	,, रामलखन गुप्त	,, पथवाड़ी	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१)	श्री रामचन्द्र श्रोत्रिय	वैद्य शाहगंज	आगरा
	,, वलभद्रप्रसाद मिश्र	,, गऊशाला	,,
२)	,, राजाराम टाडौलिया	,, ,,	,,
१)	,, वैद्या जी	,,	,,
२)	,, छोटेलाल विशारद	,, फीरोजाबाद	,,
	,, बुद्धदेव	वैद्य ,,	,,
१)	छेदालाल जी	,, अलीगढ़	,,
२)	,, रघुनन्दन जी	,, लाखनू	,,
१)	,, भूदेवप्रसाद	,, जोरावरनगर	,,
२)	,, नेकराम	,, सुहावली	,,
	,, बाबूराम उपाध्याय	,, सुधाआश्रम	,,
	,, कल्पनादेवी वैद्या सराय विहीर		,,
	,, पदमचन्द्र जी जैन	हाथरस	,,
	,, रेवाशङ्कर शर्मा	भटियाना	मेरठ
	,, हरिवंश लाल	,,	,,
१)	,, नन्दराम जी	परीक्षितगढ़	,,
	,, शिवचरण	वैद्य ,,	,,
२)	श्री किशनलाल	वैद्य ततारपुर	मेरठ
१)	,, शम्भुदत्त	,, थोवड़ी	,,
	,, कुडेसिंह	,, जादी	,,
	,, गूदर वंशलाल	,, परीक्षितगढ़	,,
	,, देवीदत्त शर्मा	,,	,,
	,, वनमालीलाल	धनपुर	,,
	,, हरिचरण दास जी वैद्य निवाड़ी		,,
	,, हफीजुल्ला गेम्भा जानी		,,
	,, तुलाराम महलवाला		,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२)	श्री मङ्गल सिंह	वैद्य	वक्सर	मेरठ
१)	,, रामशरण जी	,,	,,	,,
	,, हरिनारायण	,,	तसरा	,,
३)	,, नरपति सिंह	,,	वक्सर	,,
२)	,, गङ्गाराम	,,	,,	,,
	,, प्रियव्रत	,,	पिलखुवा	,,
२)	,, हरिस्वरूप जी	वैद्य	पिलखुवा	मेरठ
	,, ब्रह्मदेव जी	,,	गोदला	,,
	,, ज्ञानी हरिनाथ सिंह	,,	बक्सर	,,
	,, थान सिंह	,,	,,	,,
१)	,, जगदीश प्रसाद	,,	परीक्षितगढ़	,,
२)	,, रायबंश जी	,,	खरखोदा	,,
१)	,, लक्ष्मणदेव शर्मा	,,	झुनझुनी	,,
२)	,, टीकाराम मिश्र	,,	कलजरी	,,
३)	,, नरदेव शर्मा	,,	परीक्षितगढ़	,,
२)	,, बनारसीदास जी	,,	हसनपुर	,,
	,, लक्ष्मीचन्द जी	,,	परीक्षितगढ़	,,
	,, मदनमोहन शर्मा	,,	दौराना	,,
	,, शङ्करलाल गुप्त	,,	,,	,,
	,, शिव नारायण सिंह	,,	रामौली	,,
१)	,, खजान सिंह	,,	दौराना	,,
	,, मेघचन्द शर्मा	,,	रामौली	,,
२)	,, हरिदत्त जी	,,	मोदीनगर	,,
	,, राजाराम जी	,,	उचेडा निवाड़ी	,,
४)	,, भगवानदत्त शर्मा	,,	लंढौरा	सहारनपुर
२)	,, देवीदत्त शर्मा	,,	गंगोह लखनौती	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१)	कविराज रतनप्रकाश गुप्त	वैद्य	हरिद्वार	सहारनपुर
	,, बाबूराम शर्मा	,,	,,	,,
	,, रघुनन्दन शास्त्री	,,	,,	,,
२)	,, रामस्वरूप शर्मा	,,	रेशममाजरी	देहरादून
	,, सुदर्शनजी आयुर्वेदालंकार	,,		,,
२)	श्रीमती भगवती देवी	,,		देहरादून
४)	श्री शिवव्रत शर्मा	,,	ऋषिकेश	,,
२)	,, सीताराम जी	,,	,,	,,
१)	,, वाचस्पति जी	,,	,,	,,
२)	,, नारायणदत्त जी	,,	,,	,,
	,, रामस्वरूप	,,	,,	,,
१)	,, मुरारीदत्त	,,	,,	,,
	,, पुलस्त्य ऋषिजी	,,	,,	,,
	,, सच्चिदानन्द मैथाणी	,,	,,	,,
३)	,, गंगाराम जी	,,	,,	,,
२)	,, गोविन्दराम डी० आई० एम० एस			बरेली
	,, रणधीर सिंह	वैद्य	अतरछेदी	,,
	,, ब्रह्मदेव	,,	आंवला	,,
	,, वशिष्ट जी शर्मा	,,	फतेहगंज	,,
	,, कृष्ण सिंह राघव	,,	कुंवरपुर	,,
	,, रामेन्द्रदत्त	,,	शिवहलिया	,,
	,, हरिराजशरण अग्रवाल	,,		,,
	,, विश्वेश्वर दयालु	,,	विहारीपुर	,,
१)	,, श्रीरामशर्मा	,,	धनौरा	,,
	,, शालिग्राम पटेल	,,		,,
	,, रामलाल पाठक	,,	टिसुवा	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

	श्री लक्ष्मीनारायण	वैद्य	भमोरा	बरेली
	,, रामानन्द ब्रह्मचारी	,,	नौखनामण्डी	,,
	,, सोहनलाल जी	,,	ज्योंती	,,
	,, देवीप्रसाद जी	,,	लीलौर	,,
	,, सोहनलाल	,,	सेना	,,
	,, देवीदत्त	,,	जकाती	,,
१)	हरिशङ्कर शर्मा	वैद्य	दुनका	देहरादून
	,, हेतराम जी	,,	खिरका	,,
३)	,, जिला वैद्यसभा	,,		बरेली
२)	,, श्रीराम जी	,,	धनौरा	,,
	,, छेदालाल जी	,,	नवाबगंज	,,
१)	लोचन प्रसाद	,,	हलदुवा	,,
	,, अशर्फीलाल	,,	दलेल नगर	,,
	,, बाबूराम राठौरा	,,	नवाबगंज	,,
	,, होरीलाल	,,		,,
	,, मथुरा प्रसाद	,,	मीरगंज	,,
	,, बुद्धसेन अवस्थी	,,	,,	,,
२)	,, गेंदनलाल	,,	हरिदासपुर	,,
	,, राममूर्ति लाल	,,	हल्दी	,,
१)	लाला तुलसीराम	,,	दुनका	,,
	श्री प्रसादीलाल	,,	सुकटिया	,,
	,, बुद्धसेन शर्मा	,,	सारीपुर	,,
	,, दुर्गाप्रसाद शर्मा	,,	औरङ्गाबाद	,,
	,, मंगलसेन	,,	सीहौर	,,
	,, रामलाल जी	,,	टिसुवा	,,
	,, छेदालाल शर्मा	,,	नवाबगंज	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

	बाबा सर्वदानन्द जी	वैद्य	विहारीपुर	बरेली
	पण्डित तेजराम जी	,,	महेशपुरा	,,
	,, बद्रीप्रसाद	,,	नेकपुर	,,
	,, होरीलाल	,,	नवाबगंज	,,
	,, शालिग्राम	,,	चोपला	,,
	,, धर्मेन्द्र सिंह	,,	सरदारनगर	,,
	,, प्यारेलाल	,,	कनबन	,,
	,, वृन्दाबन	,,	इटौवा	,,
	,, प्रयागदत्त शर्मा	,,	कटकारमन	,,
	,, मथुरा प्रसाद शर्मा	,,	ठिरिया	,,
	,, बाबूराम शर्मा	,,	बांसबोझा	,,
२)	,, भगवती प्रसाद शर्मा	,,	फरीदपुर	,,
१)	,, मथुराप्रासाद शर्मा	,,	टिमकापुर	,,
२)	,, सकल पाण्डेय नैपाली	,,	बांसमण्ढी	मुरादाबाद
१)	,, कृष्णदत्त शंखधार नैपाली	,,	,,	,,
४)	,, लक्ष्मीनारायण	,,	,,	,,
२)	,, बनवारीलाल दीक्षित	,,		,,
	,, जगदीश प्रसाद	,,	किसरौल	,,
	श्री भगतसिंह जी सन्त	,,	निर्मलआश्रम	,,
	,, श्रीकृष्णदत्त जी वैद्यशास्त्री	,,	कठघर	,,
१)	,, उमरावबन गोस्वमी	,,	लखमिया	,,
	,, बट्टूनाथ योगी	,,	ड़ाकबाप	,,
	,, हरिप्रसाद	,,	मलकपुर	,,
	,, रामावतार	,,	धनौरामण्डी	,,
	,, लल्लूसिंह रामकिशुन	,,	अतरासी	,,
२)	,, शम्भूनाथ द्विवेदी	,,	ठाकुरद्वारा	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१)	श्री अमृत सिंह	वैद्य		मुरादाबाद
२)	,, जौहरीकान्त जैन	,,	रतनपुर कलां	,,
	,, अमोलकचन्द जैन	,,	दोलरी, मूढा,	,,
	,, जगदीशशरण गौड	,,	डी-आई-एम-एस पीलीभीत	
	,, राजबहादुर सक्सेना	,,	खैराजालालपुर	बदायूँ
	,, विलास सिंह	,,	,, सबहित	,,
	,, रामनिवास सिंह	,,	,,	,,
१)	,, चुन्नीलाल शाक्य	,,	शिम्भूनगला	,,
२)	,, शिवराज सिंह जमीनदार	,,	खैराजलालपुर	,,
	,, सोहरा सिंह जमीनदार	,,	,,	,,
१)	,, मलखान सिंह	,,	,,	,,
	,, बुधपाल सिंह	,,	,,	,,
	,, किशोरीलाल सक्सेना	,,	,,	,,
	,, खानसहाय अहीर	,,	डडियानगला	,,
	,, चेतराम ,,	,,	,,	,,
	,, मथुरी ,,	,,	,,	,,
२)	,, ब्रजलाल सिंह यादव	,,	,,	,,
१)	,, रूपराम अहीर	,,	,,	,,
	,, भगवन्त ,,	,,	खेराजलालपुर	,,
	,, नरोत्तम जाटव	,,	वल्ले नगला	,,
	,, पहलवान सिंह अहीर	,,	डडियानगला	,,
	,, निरंजनलाल	,,	खैराजलालपुर	,,
	,, रुस्तम सिंह	,,	,,	,,
	,, श्रीमती रामदेवी	,,	,,	,,
	,, राधेश्याम रस्तोगी बजाज	,,	मौलवीगंज	,,
२)	,, वासुदेव शर्मा	,,	कीरतपुर रतनगढ़	बिजनौर

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२)	श्री टेकचन्द वर्मा	वैद्य	भोगपुर ताजपुर	बिजनौर
४)	,, घनश्याम शरण डी० आई० एम० एस०		नगीना	,,
	,, यशवन्त प्रकाश	वैद्य	रायपुर	,,
२)	,, हरिप्रसाद	,,	हरगनपुर	,,
	,, राजेन्द्रप्रसाद	,,	,,	,,
	,, कृष्णदत्त उपाध्याय	,,	,,	,,
	,, विष्णुदत्त	,,	चमरावाला	,,
	,, शिवकुमार शास्त्री	,,	कोटकापुर	,,
	,, मनमोहनलाल	,,	,,	,,
	,, लाल सिंह	,,	,,	,,
	,, पूरणचन्द	,,	बढापुर	,,
	,, सूर्यप्रकाश	,,	,,	,,
	,, रामचन्द्र	,,	रतुआ	,,
	,, कान्तिचन्द्र शर्मा	,,	नगीना	,,
४)	,, गुणप्रकाश शर्मा	,,	नहटौर	,,
२)	,, कृष्णदत्त शर्मा	,,	,,	,,
	,, लक्ष्मणप्रसाद	,,	,,	,,
	,, लल्लूराम जोशी	,,	,,	,,
	,, परमेश्वर	,,	खजूरी	,,
	,, मंगूसिंह	,,	नकोनपुर	,,
	,, धर्मदेव	,,	खजुराजट	,,
	,, घासीराम	,,	धनुपुरा	,,
	,, अभिमन्युदेव	,,	नन्हेडा	,,
	,, रामकृष्ण	,,	भूसेपुर	,,
	,, शुकदेव प्रसाद	,,	शादीपुर	,,
	,, गजेन्द्रदत्त	,,	,,	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री विद्याप्रकाश	वैद्य	पाडली वसेडा	बिजनौर
,, दीनानाथ	,,	मटौरामा	,,
,, रामप्रसाद	,,	मटियाना	,,
,, नेतराम जी	,,	मिर्जापुर	,,
,, बुधराम	,,	सेठी	,,
,, हेतराम	,,	,,	,,
,, लल्लूराम	,,	धीमानसेठा	,,
,, दत्तराम	,,	बल्लाशेरपुर	,,
,, मुरारीलाल	,,	,,	,,
,, लालचन्द	,,	नगला	,,
,, रमेशचन्द्र	,,	मखनपुर	,,
,, गोंपाल जी	,,	सीकरीबुजुर्ग	,,
,, ओमप्रकाश	,,	,,	,,
,, मनफूल सिंह	,,	,,	,,
,, रामचन्द	,,	मुलसन्ता	,,
,, आशाराम	,,	महुआ	,,
,, रामस्वरूप	,,	,,	,,
,, हरदयाल सिंद	,,	मिलकमुकीमपुर	,,
,, अमृत सिंह	,,	,,	,,
,, डालचन्द	बैद्य	हरपुर	,,
,, दुर्गाप्रसाद	वैद्य	नागल	,,
,, शिवचरण	,,	पाडली बसेड़ा	,,
,, किशनदत्त	,,	मिलाडा	,,
,, महावीर प्रसाद	,,	महमदाबाद	,,
,, निहालचन्द	,,	बल्लेशेरपुर	,,
,, रघुनाथ प्रसाद	,,	पैजनियाँ	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

	श्री बाबूराम	वैद्य हल्दौर	बिजनौर
	,, बलिराम	,, ,,	,,
	,, रामकुमार	,, ,,	,,
	,, ठाकुरदत्त	,,	,,
	,, रामप्रसाद	,, टाफीपुरनगली	,,
	,, नन्दकिशोर	,, पावटी	,,
२)	श्री मुरलीधर	वैद्य भटौरा बिजनौर	
	,, प्रतापचन्द्र	,, ,, ,,	
	,, बलदेव सहाय	,, नकीपुर ,,	
	,, साहरामप्रसाद जमीनदार	,, मुहम्मदपुर मवैया लखनऊ	
१)	,, रामाधार वाजपेयी	,, अतरौली	,,
	,, रामप्रताप मिश्र	,, आयुर्वेदाचार्य	,,
२)	,, रामलाल शर्मा	,, स्टेशनरोड	रायबरेली
	,, माताप्रसाद सप्लाई (ज० प्र० शुक्ल)		,,
	,, गयाप्रसाद सिंह	वैद्य मल्हीपुर हैदराबाद उन्नाव	
	,, महेशदत्त शुक्ल	,,	सीतापुर
	,, प्रयागदत्त पाठक	,, लहरपुर	,,
१)	,, रामजी कम्पौंडर		,,
	,, शत्रुघ्न प्रसाद	,,	,,
	,, भरतप्रसाद मिश्र	,,	,,
	,, श्री कान्त शर्मा	,, नीमसार	,,
	,, बाबूराम मिश्र	,, रज्जाकपुर	,,
२)	,, शङ्कर सिंह	,, मथना	,,
१)	,, गौरीशङ्कर पाण्डेय	,, रज्जाकपुर	,,
	,, रघुबर सिंह	,, जरगवां, कोरौना	,,
२)	,, खेमन	,, अरमी, हरगांव	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२)	श्री विद्याधर मिश्र	वैद्य बरम्हौली, महोली	सीतापुर
	,, रामसेवक ,,	,, खजुरिया	,,
	,, चौधरी हुल्लासीराम	,, खैराबाद	,,
१)	,, चन्द्रभाल तिवारी	,, कोरारीगञ्ज, लहरपुर	,,
२)	,, श्री दत्त	,, खजुरिया	,,
१)	,, देवकरण खाती	,, महोली	,,
	,, रमादयालु त्रिवेदी	,, ,,	,,
	,, रामचरणलाल इटौवा बनका मिश्रिख		,,
	,, महादेव प्रसाद	वैद्य उभरौली, वेहटगोपुर	हरदोई
	,, सूर्य प्रसाद	,, टडियावां, जपरा	,,
	,, राजेश्वर प्रसाद	,, पाली	,,
	,, रामेश्वर दयालु	,, अहिरौरी	,,
	,, श्यामसुन्दर	,, मंसूर नगर	,,
	,, देवीप्रसाद	,, अहिरौरी	,,
	,, ज्वाला प्रसाद	,, ,,	,,
	,, बनवारीलाल	,, तुसोरा, बेनीगञ्ज	,,
४)	,, जालिम प्रसाद वैद्य बमनई, हरपालपुर		,,
१)	,, ठाकुर रामविलास राजपाल		,,
	,, कोतमाराम रामपुर गिरण्ट बघौली		,,
	,, गोबरधन सिह वरबम		,,
	,, हरद्वारीलाल लमकन वैद्य सांडी		,,
२)	,, कामता प्रसाद राजोहना वैद्य वेहदर		,,
	,, विष्णुनारायण	,, संडीला	,,
	,, गङ्गाचरण	,, बेरुवा	,,
	,, शम्भूदयाल	,, बेरवा संडीला	,,
	,, जानकी प्रसाद जैतराम आर्या बेरुवा पनोरा		,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१) श्री श्रीशङ्कर प्रसाद वैद्य सोठियावां हरदोई
,, फतेह चन्द्र वैद्य डिगिया बेहटा गोकुल हरदोई
,, विष्णु नारायण वैद्य सोखवापुर, संडीला हरदोई
,, मुंशीलाल त्रिपाठी वैद्य रेडवा, विलगराम हरदोई
२) ,, श्रीराम शर्मा वैद्य जीनगांव, अतरौली हरदोई
१) ,, छोटेलाल त्रिपाठी वैद्य बेहदर कलां हरदोई
२) ,, ठा० यदुनाथ सिंह ,, मिरगावां हरदोई
१) ,, छोटेलाल द्विवेदी वैद्य बेहदर कलां हरदोई
,, रघुवीर सहाय ,, तुसौंरा बेनीगञ्ज हरदोई
,, राजबहादुर ,, पिहानी हरदोई
१) ,, रामचरण ,, अनियापुर पाली हरदोई
२) ,, श्रीराम ,, भरखनी पाली हरदोई
,, जयराखन ,, दलेलपुर पाली हरदोई
१) ,, ठाकुर देवी सिंह ,, सवाइनपुर पाली हरदोई
२) ,, महावीर प्रसाद ,, ,, हरदोई
१) ,, लालाराम ,, नागदाहल हरदोई
,, श्रीरामसिंह वैद्य पैजापुर पाली हरदोई
,, गङ्गाचरण ,, महराजपुरवां टडियावां हरदोई
,, पुत्तूलाल ,, मङ्गली पुरवा हरदोई
,, वेणीमाधव ,, बाबरमऊ मठिया बिलग्राम हरदोई
,, रामविलास द्विवेदी ,, सौतियापुर हरदोई
,, बाबूराम ,, ,, बावन हरदोई
१) श्री युगराजप्रसाद वैद्य धतनूखेरा, वघौली हरदोई
,, गङ्गासागर ,, अटयारी, भरवापुर, पुरनसठकाम ,,
,, देवीप्रसाद ,, अहरौरी ,,
,, रामरतन सिंह ,, मसीत ,,

CC-0: All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२)	श्री रामेश्वर शुक्ल	वैद्य रेल्वेगञ्ज	हरदोई
१)	,, जगन्नाथ प्रसाद वैद्य	रुकनापुर माधवगञ्ज	,,
	,, शम्भूदयालु वागीश वैद्य	कठिया, गोपामऊ	,,
	,, गोरखनाथ वैद्य	रौतियापुर वावन	,,
२)	,, रघुनन्दन प्रसाद खरे वैद्य	मिरावां	,,
	,, रामेश्वर शर्मा	,,	लखीमपुर खीरी
	,, सीताराम शर्मा	,, महेवागञ्ज	,,
	,, सुखदेव प्रसाद	,, रामपुर केमहरा	,,
	,, मुरलीधर पाण्डेय	,, परसेहराखुद, नीमगांव	,,
	,, देवतादीन मिश्र	,, कर्णपुर कैमा ,,	,,
४)	,, रामेश्वर दयालु गुप्त	,, गल्लामंडी	,,
२)	,, बाबूराम मिश्र	,, आगरा	,,
४)	,, मूलचन्द्र कुर्मी	,, ,,	,,
३)	पण्डित रामेश्वर शर्मा मटेरा		बहराइच
१)	श्री कमलापति मिश्र वैद्य बहरौली		सुलतानपुर
	,, रामसूरत शुक्ल वैद्य		,,
२)	,, त्रिगुनीनारायण वैद्य		,,
	,, रामनरेश मिश्र तारवाबू		प्रतापगढ़
४)	,, रविशङ्कर शुक्ल वैद्य राजापुर		,,
२)	,, रामसन्मुख लाल वैद्य		,,
१)	,, रामनरेश सिंह वैद्य		,,
	,, चन्द्रिकाप्रसाद वैद्य पंचवटी		,,
२)	,, भगवत प्रसाद त्रिपाठी वैद्य		,,
१)	श्री हर्ष त्रिपाठी वैद्य		,,
	,, रामकृपालु मिश्र वैद्य		,,
२)	,, लाला लक्ष्मीनारायण वैद्य		,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१) श्री विन्धेश्वरी प्रसाद शुक्ल वैद्य पटना ढिंगवस प्रतापगढ़
,, कृष्णानन्द पाण्डेय वैद्य नारायणपुर ,,
,, महादेवप्रसाद वैद्य ,,
,, विष्णुप्रसाद शुक्ल वैद्य ,,
,, गोकुलप्रसाद त्रिपाठी वैद्य पटना ढिंगवस ,,
,, यदुनाथ मिश्र वैद्य ए० एम० एस० ,,
,, उमादत्त मिश्र वैद्य सिद्धसराय ,,
,, मुरारीलाल गुप्त वैद्य ,,
,, उदयराज वैद्य ,,
,, शीतलादीन मिश्र वैद्य खरबई ,,
,, जगन्नारायण तिवारी आयुर्वेद विशारद पीपरताली
,, सत्यदेव द्विवेदी वैद्य आयुर्वेदाचार्य तिवारीपुरवा ,,
,, राजनारायण शुक्ल वैद्य रामगंज ,,
,, वशिष्ठराय वैद्य जगदीशपुर समस्तीपुर दरभंगा
३) ,, नन्दलाल शर्मा वैद्य वथुआ ,, ,,
१) ,, अवधकान्त झा वैद्य वैनी ,, ,,
२) ,, रामलखन सिंह वैद्य कुवौलीराम ,,
,, महावीर सिंह वैद्य कुवौलीराम ,,
,, दिवाकर सिंह ,, ,,
४) ,, प्रभाकर मिश्र ,, छतौना ,,
२) मुसाई साह वैद्य मोहनपुर ,,
,, हरिश्चन्द्र शर्मा वैद्य ब्राह्मणटोली मुजफ्फरपुर
,, महेश्वर झा वैद्य डि० ओ० ओ० औराई राजावाग ,,
,, माधव प्रसाद भट्ट वैद्य भरथुवा, सज्जीसेदपुर ,,
२) ,, श्री नागेश्वर चौधरी वैद्य भरथुवा सज्जीसेदपुर ,,
,, शारदाप्रसाद मिश्र वैद्य कटरा ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

	श्री वीर्यवंश मिश्र वैद्य रेपुरा विष्णुदत्तपुर	मुजफ्फरपुर
	,, रघुवीर मिश्र वैद्य धनपुर	,,
	,, नर्मदेव पाण्डेय वैद्य करजा पट्टी निद्रा	,,
	,, वागीश्वरनाथ मिश्र वैद्य मंगुरिया हारी	,,
	,, नरेशमिश्र वैद्य रुपौली भदई	,,
	,, जगदीश पाण्डेय वैद्य बसरा	,,
	,, जलेश्वर मिश्र वैद्य कोल्हुआ बखार	,,
	,, रघुनाथ मिश्र वैद्य परतापुर महेशी	,,
	,, नर्मदेश्वर ,, वैद्य बड़कागांव	,,
	,, गोपीनाथ मिश्र वैद्य बड़कागांव	,,
	,, सत्यदेव मिश्र वैद्य रेपुरा, विष्णुदत्तपुर	,,
	,, गोरखनाथ ,, सरैयांकोठी	,,
	,, चतुरानन ओझा ,, मोतीपुर	,,
१)	,, करुणाराय वैद्य ब्रह्मपुरा सदर	,,
२)	,, हरदेवनाथ मिश्र वैद्य करताहां	,,
	,, रामदेवनाथ ,, भगवानपुर	,,
	,, घरीधन पाण्डेय ,, पिवराखेत चकिया	,,
	,, आद्यानन्द पाण्डेय ,, भटहा, भोरहा	,,
	,, रामबहादुर साह ,, मीनापुर	,,
	,, मौजेठाकुर ,, जाइन	,,
१)	,, लक्ष्मीनारायण शर्मा ,, पुरानीबाजार सदर	,,
	,, सरयू मिश्र ,, ब्रह्मपुरा टाउन	,,
	,, राजनन्दन पाठक ,, वरियापुर	,,
	,, पारसनाथ मिश्र ,, खिरुकाही सिंगार	,,
	,, दीनानाथ ,, ,, ,, ,,	,,
	,, ताराकान्त झा ,, भवानीपुर, भदई	,,
१)	,, अनिरुद्ध झा वैद्य वेदौल भदई	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

४)	श्री ब्रह्मदेवनाथ	वैद्य करताहां	मुजफ्फरपुर
२)	दामोदरनाथ मिश्र	,, ,,	,,
	श्रीमती सुमित्रादेवी	,, कल्याणी	,,
	श्री पुण्यनाथ मिश्र सैरयागंज		,,
	,, चन्द्रदेव पाण्डेय जाफरपुर		,,
४)	,, कर्मचारीगण अयोध्याशिवकुमारी कालेज वेगूसरांय		मुंगेर
२)	,, गणेश झा वैद्य वनदुआर, मोहनपुर		,,
	,, शुकदेव शुक्ल ,, वेगूसरॉय		,,
	,, नारायणचन्द्रजी वैद्य ,,		,,
	,, हरीलालजी	,, वारों	,,
	,, मुक्तिनाथ मिश्र	,, आयुर्वेदभवन	आरा
	,, विष्णुदत्त पाण्डेय	,, वक्सर	,,
	,, श्रीकान्त	,, ढाईवाजार	,,
	,, रामेश्वर झा	,, खडइया	,,
	,, केशवमिश्र	,, आथर	,,
१)	,, जगन्नाथ मिश्र	,, सरैया	,,
	,, वैद्यनाथ प्रसाद	,, ब्रह्मपुर	,,
२)	,, देवीप्रसाद	,, ,,	,,
१)	,, शिवटहल पाठक	,, सौना	,,
	,, राघवप्रसाद	,, शिमरी	,,
	,, रामबचन द्विवेदी	,, रघुनाथपुर, केसठ	,,
	,, राजवंशमिश्र	,, वसांव, शिकरौल	,,
२)	,, गंगादयालु मिश्र	,, ,, ,,	,,
	,, लक्ष्मणजी उपाध्याय	,, धनसोई	,,
१)	,, तुलसीप्रसाद मिश्र	,, इन्दौर	,,
२)	,, नागेन्द्रनाथ पाण्डेय	,, रौसा	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१) मुंशी गुलाब हुसेन	वैद्य	केसठ	आरा
श्री रामजी त्रिपाटी	,,	पतरखोना, आथर	,,
,, शिवपूजन राम	,,	वक्सर	,,
२) ,, शन्तिस्यरूप मिश्र	,,	चांपा	बिलासपुर
,, बाबा हनुमानदास जी	,, भूषण	चांपा	,,
,, कविराज लम्बोदर प्रसाद सटकी		,,	,,
सेठ मोहनलाल केडिया भा० फार्मेसी		,,	,,
श्री चिरौजीलाल ताम्रकार		,,	,,
१) ,, निरंजनलाल वैद्यभूषण		,,	,,
,, लखन भारती	वैद्य	,,	,,
,, शालग्राम	,,	,,	,,
,, गोदावरीश शर्मा	,,	,,	,,
,, रामलाल गुप्त	,,	,,	,,
,, चिन्ताराम जी	,,	,,	,,
,, दाऊराम तैलकार	,,	,,	,,
,, सहदेव प्रसाद	,,	,,	,,
,, वहोंरनसाव कोष्टा	,,	,,	,,
,, सुन्दर सिंह	,,	,,	,,
,, गजाधर प्रसाद	,,	,,	,,
,, पूनीराम स्वर्णकार	,,	,,	,,
१) श्री कुवेर प्रसाद स्वर्णकार			चांपा बिल--
,, शुकदेव प्रसाद चतुर्वेदी	वैद्य		,,
,, हरदेव सिंह	,,		,,
३) ,, पण्डित रामकृष्ण मिश्र	,,	पटना कोरिया	,,
,, जगदीश प्रसाद मिश्र	,,	भूषण, पोंड़ी	,,
,, राधेश्याम त्रिपाठी	,,	नागपुर कोरिया	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२) ,, हंसराज उपवैद्य वैकुण्ठपुर कोरिया बिलासपुर
१) ,, मङ्गलराम कर्मचारी आयुर्वैदिक चिकित्सालय ,,
,, भोलाराम ,, नागपुर कोरिया ,,
२) ,, रामकुमार पाण्डेय वैद्य वैकुण्ठपुर कोरिया ,,
,, रामाधीनजी ,, ,, ,,
,, राजाराम ,, ,, ,,
,, कन्हैयालाल वर्तन महेन्द्रगढ़ ,, ,,
१) ,, सुकालू साव वैकुण्ठपुर ,,
,, गजाधर प्रसाद त्रिपाठी वैद्य लोरमी ,,
,, बौनादास ,, दुरया वारा द्वारा ,,
,, गणपतराव ,, जगदल्ला चांपा ,,
,, हरलाल प्रसाद ,, सिवनी ,, ,,
,, टेकराम सुनार ,, कोटमी ,,
,, रामकुमार शर्मा ,, लोरमी ,,
,, श्याम सुन्दर लाल ,, भाटा पारा ,,
,, बहुरलाल तेली ,, तुसना ,,
,, कुदकुल ,, सिवनी चांपा ,,
,, चन्द्र सिंह रसौटा ,, बलौदा ,,
२) ,, बौढगमल ,, खोखरा ,,
१) ,, गोकुल प्रसाद ,, चोरिया ,,
२) ,, गरीबराम अगरवाल ,, ,,
,, गङ्गाविष्णु पाण्डेय ,, जबलपुर
वैद्य ब्रजलाल जीवनदास सरवारकर बम्बई
डाक्टर मनुभाई नाथजी भाई नागर सेठ ,,
श्री वि० भा० गोगटे वैद्य नासिक
,, शं० सि० परचुरे ,, ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

	श्री सि० अं० मुले	वैद्य विवाड़	नासिक
	,, वा० न० आनर्दीकर	,,	,,
२)	,, ना० मो० रानडे	,,	,,
	,, वी० एन० जोशी	,,	,,
	,, विष्णुशास्त्री दाने	,,	,,
	,, पठान मास्टर हिदायतुल्ला साहब		,,
	,, ज० लं० रामैया	वैद्य	,,
	,, शिवदास स्वामी	,, तपोवन	,,
	,, के० दत्त कुलकर्णी	,,	,,
	,, बी० पु० दानी	,,	,,
	,, यू० पी० कुलकर्णी	,, भेलवा	,,
	,, मा० ना० शुक्ल	,,	,,
	,, याई० कृ० देवधर		,,
	,, रा० कृ० लेले	,,	,,
	,, यो० गं० तरटे	,, येवला	,,
	,, दी० ना० तांबे	,, ,,	,,
	,, ना० शा० दाणी	,, ,,	,,
	,, वा० स० मराठे	,, ,,	,,
	,, हकीम सूफी	,, ,,	,,
	,, के० वी० मुले	,, ,,	,,
	,, चिमणदास श्यामकुवार		,,
	,, बलरामदास भीमदास सुकेणे		,,
	,, का० प० पाटील निफाड़		,,
	,, बी० आर० मंगलूरकर		,,
	,, का० ल० काजलेगोपुर मध्यमेश्वर निफाड़		,,
	,, बी० वी० लोखण्डे सिलर		,,
	,, सोमवंशी	वैद्य ,,	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

२) श्री सुखदेवदास	वैद्य तपोबन		नासिक
१) ,, सरस्वती बाई विद्या गौरी भागबत			,,
,, मी० के० देशपाण्डे	वैद्य		,,
२) ,, डी० ही० खाडिलकर	,,		,,
१) ,, वि० भी० मजूमदार	,,		,,
,, महादेव शास्त्री वाके	,,		,,
,, रामभाऊ रुद्रभटे	,,		,,
२) ,, अ० त्रि० पाटील	,,		,,
१) ,, विवेकानन्द कस्सा	,,		,,
,, राजू देशमुख	,,		,,
२) ,, पण्डित रामनिवास शर्मा	,,	चारकमान हैदराबाद	

प्रस प्रयागमें पं० राजेन्द्रचन्द्र शुक्ल द्वारा मुद्रित

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वैद्य बन्धुओंसे निवेदन

इस युगके आयुर्वेदोद्धारक और अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन तथा आयुर्वेद विद्यापीठके आदि संस्थापक आयुर्वेद महोपाध्याय पं० शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मारककी एक योजना आयुर्वेद विद्यापीठ और अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलनने स्वीकार की है। सभी वैद्यों और प्रान्तीय कार्यालयोंसे प्रयत्नशील होनेका भी अनुरोध किया गया है।

योजना ऐसी विचारपूर्वक बनायी गयी है कि एक विद्वानके स्मारक द्वारा आयुर्वेद विद्याके प्रचार और आयुर्वैदिक साहित्यके लेखकोंको उत्तेजन मिलता रहे, उससे सभी प्रान्तों और स्थानोंके आयुर्वेद प्रेमी एक समान लाभ उठा सकें। स्मारकके निमित्त २५ हजार रुपया एकत्र करनेकी योजना है। उत्तर प्रदेशीय १२ हजार रुपयोंके व्याजसे प्रति तीसरे वर्ष सर्वोत्तम आयुर्वैदिक ग्रन्थ लेखकको ५००) रुपयोंका पुरस्कार दिया जाता है और शेष रकमसे प्राचीन अमुद्रित ग्रन्थ तथा समयकी आवश्यकताके अनुसार नवीन उत्तम ग्रन्थ प्रकाशित करनेका भी विचार किया गया है। इससे आयुर्वैदिक साहित्यकी पूर्ति और अभिवृद्धिके साथ ही एक सर्वस्व त्यागी महान आयुर्वेद सेवकका स्मारक होगा और आयुर्वेदकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस कार्यमें एक हजार रुपया देनेवाले इसके प्रतिष्ठापक, ५००) रुपया देनेवाले संरक्षक और १००) रुपया देनेवाले स्थायी सदस्य होंगे, जिन्हें प्रकाशित साहित्य भी मिलता रहेगा। पचास, ग्यारह तथा पाँच रुपया देने वालोंको भी समितिकी प्रकाशित पुस्तकें सुविधाके साथ मिलेंगी। १६ हजारसे अधिक जमा हो चुका है। सभी प्रान्तोंके वैद्यबन्धु उदारतापूर्वक कर्तव्य पालन करते हुए योजनाकी सिद्धिमें सहायक हों। सहायताकी रकम प्रान्तीय वैद्य सम्मेलनके द्वारा अथवा सीधे इस समितिके अध्यक्ष श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल ३ सम्मेलन मार्ग, प्रयागके पास भेजना आरम्भ कर देना चाहिये।

निवेदक (धन संग्रह समिति के सदस्य)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कोष पूर्तिका उपाय.

यद्यपि स्मारक समितिकी प्रारम्भिक पूँजी २५ हज़ार रुपये नि- रित की गयी है तथापि उसके उद्देश्योंकी अच्छी तरह पूर्ति एक ला- रुपयोंकी पूँजीसे हो सकती है। कमसे कम नीचे लिखे अनुसार प्रत्ये- प्रान्तके वैद्य कर्तव्य प्रेरणासे जाग्रत हो इस कोषकी सहायताके लि- उपसमिति बनाकर अपने जिलोंसे सहायताकी रकम एकत्रित करने- उद्योग करें तो सहज ही सफलता हो सकती है। इनमेंसे जिन प्रान्- की सहायता अभी पूर्ण नहीं हुई, उसे वहां पूर्ण करनेका प्रयत्न अव- होना चाहिये। जिन जिलों और व्यक्तियों की सहायता अभी तक यथे- नहीं हुई उन्हें शीघ्रता पूर्वक पूर्ण कर कर्तव्य पालन करना चाहिये।

१—उत्तरप्रदेश (एक हजारके बदले स्वयं प्रेरणासे स्वीकृत, १२000)
२—बम्बई २000)
३—महाराष्ट्र १०००)
४—मद्रास आन्ध्रआदि १०००)
५—मैसूर ५00)
६—त्रावणकोर कोचीनकुर्ग ५००)
७—हैदराबाद १000)
८—गुजरात १000)
९—काठियावाड़-कच्छ १०००)
१०—महानराजस्थान ५०००)
११—मध्यभारत २०००)
१२—मध्यप्रदेश-बरार २००
१३—विन्ध्यप्रदेश १००
१४—पञ्जाब १००
१५—पेप्सू और हिमप्रांत १००
१६—दिल्ली १००
१७—बड़ोदा १००
१८—अजमेर-मेरवाड़ा ५०
१९—बिहार २००
२०—बङ्गाल २००
२१—आसाम १०
२२—उड़ीसा १०
२३—काश्मीर १०
२४—नैपाल १०

विशेष—सहायताकी रकम या तो आयुर्वेद विद्यापीठ कार्या- दिल्ली या मेरे पते पर भेजी जाय।

निवेदक
जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य
३ सम्मेलनमार्ग प्रयाग।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

zation by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-

). All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Colle

igitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-Mo

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collectio

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection